

# एम थ लेनिन

Tokyo





# ऐसे थे लेनिन

प्रगति प्रकाशन  
मास्को

संकलनकर्ता: प्रोफेसर मिखायेल

अनुवादक: नरेण चवरी

द्विज्ज्ञान: यू. माकोव

КОСТРЫ

(ДЕТЯМ О ЛЕНИНЕ)

(сборник рассказов советских писателей: З. Воскресенской, М. Шаткина, Л. Радичева, М. Прижмаловой, Н. Ходы, А. Колосова, П. Канни, В. Бонч-Бруевича, С. Алексеева, С. Антонова, Л. Воронковой)

на языке индия



अनुक्रम

प्रकाशक की ओर से . . . . .	७
वह रात, ज० वोस्नेसेन्काया . . . . .	८
इतिहास की परीक्षा, म० गामिस्ता . . . . .	२३
मारो डांड! न० रादीग्नेव . . . . .	२७
जाड़े का दिन, म० प्रिलेजायेवा . . . . .	३६
मित्रता की झंगूटियां, ज० वोस्नेसेन्काया . . . . .	४६
ज्वालाएं, ज० वोस्नेसेन्काया . . . . .	५४
अंधेरी रात का किस्सा, ज० वोस्नेसेन्काया . . . . .	७०२
पीछा, न० खोदजा . . . . .	७११
प्रारंभ, प० गामिस्ता . . . . .	७१५
अक्टूबर क्रांति के प्रारंभिक दिन, व० बोंच-बुयेविच . . . . .	७२३
रूसी जनतंत्र का नागरिक, स० प्रिलेजायेव . . . . .	७३२
सोवियत राज्यचिह्न, व० बोंच-बुयेविच . . . . .	७३४
हत्यारी की गोलियां, अ० कोनोनोव . . . . .	७३८
हवाखोरी, व० बोंच-बुयेविच . . . . .	७४२
काशिनो की माना, म० कोनोनोव . . . . .	७४७
वह मुलाकात, स० अंतोनोव . . . . .	७५२
गुप्त मनुरोध, स० प्रिलेजायेव . . . . .	७५२
चेरी की बरिया, ज० वोस्नेसेन्काया . . . . .	७७४
बुलकिचें, स० प्रिलेजायेव . . . . .	७८१
लेनिन को बच्चे प्यारे थे, ल० कोनोनोव . . . . .	७८५

## प्रकाशक की ओर से

व्लादीमिर इल्यीच लेनिन...

दुनिया भर में लोग इस नाम को जानते हैं।

लेनिन के नेतृत्व में रूस के जनों ने अक्टूबर, १९१७ में विजयपूर्ण क्रांति की और इस तरह संसार के सबसे पहले समाजवादी राज्य का निर्माण किया।

लेनिन का जीवन और कार्य अत्यंत फलदायी थे — उन्होंने जो कुछ किया है, उसका एक ही पुस्तक में वर्णन करना असंभव है।

इस पुस्तक में दी गई कहानियों में उनके अद्भुत जीवन की कुछ ही घटनाओं को लिया गया है। हमें विश्वास है कि हमारे विदेशी पाठकों को ये कहानियां रोचक लगेंगी और इनके बारे में पाठकों के पत्र पाकर हमें खुशी ही होगी। आप हमें इस पते पर लिख सकते हैं:

प्रगति प्रकाशन, २१, जूबोव्स्की बुलवार, मास्को, सोवियत संघ

दमीत्री और मरीया ऊपर, बच्चों के कमरे में, सो रहे थे — वे कुछ नहीं जानते थे। मां पीटर्सबर्ग में थीं। जो हुआ था, उसके बारे में सबसे पहले उन्हें ही पता लगा था।

खाने के कमरे में धीमी रोशनी से जलता लैंप मेज़ और 'सिम्बीर्स्क समाचार' की एक प्रति पर प्रकाश का चौड़ा घेरा डाल रहा था।

ओल्गा अपने सिर को हाथों में जकड़े आगे-पीछे हिचकोले खा रही थी। उसकी आंखों से आंसुओं की धार बह रही थी।

व्लादीमिर इन भयानक पंक्तियों से अपनी आंखें नहीं हटा पा रहा था :

“सीनेट के विशेष कार्यालय द्वारा सुनाई गई सज़ा के अनुसार अपराधी गेनेरालोव, ग्रिगोरियुशिकन, ओसिपानोव, शेवियोव और उल्यानोव को आज, ८ मई, १८८७ को फांसी दे दी गई।”

व्लादीमिर ने अख़बार पर हाथ फेरा, मानो इन पंक्तियों को रगड़कर मिटा देने के लिए। वह इन शब्दों के डरावने, विकराल अर्थ को समझ नहीं पा रहा था।

क्या यह संभव है कि अलेक्सान्द्र मर गया है? क्या यह संभव है कि इतने चतुर, इतने दयालु और इतने भले अलेक्सान्द्र को फांसी दे दी गई है?

व्लादीमिर का मन कर रहा था कि वह चीख पड़े, लपके, अपने भाई के हत्यारों को ढूँढ़े और उन्हें मार डाले।



सोल्ना भी ऐसी ही दीवानी हो रही थी। व्लादीमिर ने पहले उसे तैयार करने की कोशिश की थी, लेकिन आखिर जब उसने खबर दी, तो वह वह चिल्लाते हुए फर्ज पर गिर पड़ी थी कि "मे डार को भार डालूंगी!"

व्लादीमिर अपलक अखबार को देख रहा था। उसे उसकी लकीरों के बीच अपने प्यारे भाई अलेक्सान्द्र का चेहरा नजर आ रहा था।

यह हो कैसे सकता है?

कितनी ही बार उसने और अलेक्सान्द्र ने एकांत पाने के लिए बरसाती में जाकर अपनी पढ़ी किताबों के बारे में गरमागरम बहस की थी। हर युग और हर काल में विभिन्न जनों के वीरतापूर्ण संघर्ष दोनों को ही आकर्षित करते थे। अलेक्सान्द्र ने फ्रांसीसी क्रांति और पेरिस कम्यून के बारे में काफ़ी कुछ पढ़ा था। व्लादीमिर को कम्यूनाडों की नियति के बारे में बताते हुए उसने कहा था कि ऐसा समय आएगा, जब रुस में कम्यून विजयी होगा। तब व्लादीमिर ने सोचा था कि अलेक्सान्द्र आगे चलकर क्रांतिकारी बनेगा।

पिछली छुट्टियों में घर आने पर अलेक्सान्द्र आम तौर से अधिक ही खामोश रहा और अपने ही कामों में ही डलझा रहा था - अपनी खुदबानी में, अपने प्रबंध की तैयारी में ही रमा रहता था। उसे देखकर व्लादीमिर को निराशा-सी होती - उसे लगता कि अलेक्सान्द्र कभी क्रांतिकारी नहीं बनेगा।

एक दिन व्लादीमिर ने अपने भाई को बगीचे में देखा। अलेक्सान्द्र वहां अपनी उंगलियां बांधे, गहरे विचार में लीन अकेला बैठा था। उसकी गहरी आंखों में एक खामोश आग जल रही थी। व्लादीमिर ने हैरानी के साथ अपने भाई की तरफ देखा। अलेक्सान्द्र अपनी मां और बहनो को बात करने लगा और व्लादीमिर से बोला कि उसे उनकी अच्छी तरह देखभाल करनी चाहिए और उन्हें कभी



स्नेहपूर्ण जलानोप-परिवार। सबसे  
बाहिरी तरफ ज़ाबोमिर (लेवित)  
घाली स्कूली पोशाक में बैठे हैं।



बग़ार के कोने-कोने में जंगल मिश्री-पत्रों  
में इस घर को देखने वाले हैं, जिसमें  
जलानोप-परिवार रहते हैं।



मृत्यु के बाद जाने का आशीर्वाद  
 प्राप्त करने लिये के समर्थ में वाक्य  
 बताया करते थे कि उन्हें किसी  
 क्षणों में ही मिले हैं।



मृत्यु के बाद जाने का आशीर्वाद।





अशोकसिंह की कानन भाई अशोकसिंह  
 से बहुत मोह था, जो बाद-बहुन  
 से समझ पड़े थे।



नहीं, अशोकसिंह के हाथों पर नहीं,  
 किसी और ही हाथों पर बनना होगा।





किसी तरह तंग नहीं करता चाहिए। अलेक्सान्द्र और आन्ना पीटर्सबर्ग में पहुँचे थे, इसलिए घर पर व्लादीमिर ही सबसे बड़ा था...

अधियाली खिड़की से बाहर की तरफ देखते हुए व्लादीमिर अपने बालों में उँगलियाँ चला रहा था। उस बात की जानकारी से कि अलेक्सान्द्र मर गया है, कि वह इतनी भयंकर मौत मरा है, इस अनुभूति की दारुण वेदना से जैसे उसकी शक्ति छीज गई थी।

...ओल्गा बैठक में फोफे पर पड़ी हुई थी। फर्श पर पड़ती चांदनी गमले में उगे ताड़ की काली छायाओं से कटी हुई थी।

"सो रही हो क्या?" व्लादीमिर ने पूछा।

उसने जवाब नहीं दिया। वह निश्चल पड़ी रही। व्लादीमिर ने एक दियासलाई जलाई। उसकी लपकती रोशनी में उसकी बहन के चेहरे पर मौत जैसी पीलिमा नजर आ रही थी। क्षण भर के लिए तो उसे यही लगा कि वह मर गई है।

"ओल्गा! प्यारी ओल्गा! आँखें खोल!" व्लादीमिर ने उसका सिर उठाते हुए कहा।

ओल्गा ने कराहकर सिर अपने माई की छाती पर टिका दिया और सुबकने लगी।

"अलेक्सान्द्र के बिना हम क्या करेंगे? माँ का क्या होगा? काश कि पिताजी जिंदा होते!"

"पिताजी क्या इस सबको झेल पाते!" व्लादीमिर ने मानो अपने से ही कहा।

वह यह अनुभव कर सकता था कि उसकी बहन के गरम-गरम आंसुओं से उसकी कमीज तर हो रही है। उसने उसे अपने सीने से लगा लिया और मौन रहा।

"तुम कुछ कहते क्यों नहीं? तुम क्या सोच रहे हो?"

अलेक्सान्द्र ने उसे मरने के बारे में और यह कि काम  
होने लगा था।

उस दिन वह नया, जिससे छायाएं और गहरी हो  
नीं वह किसी की तरह सरक गई।

लेकिन वह अपने विचारों में निमग्न होकर सो गई। व्लादीमिर  
ने उसके पास उसके पैरों के नीचे एक तकिया रखा और फिर  
उसने अलेक्सान्द्र के कमरे में जाकर सोया।

उस दिन वह अपने अपने कमरे में थी। तब तो वह अपने  
वस्तुओं और अलेक्सान्द्र की और सभी चीजें मौजूद थीं। पर वह  
खुद अब नहीं था।

व्लादीमिर ने छप्पे की तरफ की खिड़की खोल दी। उसने  
अपने कानों का बदन खोला और ताजा हवा में गहरी सांस ली।

उसके मन में विचार पर विचार आ रहे थे।

वह करे क्या? जार को हत्या कर दे? अलेक्सान्द्र की मौत  
का बदला ले और उसी के पदचिह्नों पर चले?.. उससे लोगों का  
क्या भाव होगा? छः वर्ष हुए, 'नारोदनाथा बोल्था' के  
नरस्य पीनेवोत्स्की ने जार को हत्या कर दी थी। लेकिन अलेक्सान्द्र  
द्वितीय को जब अलेक्सान्द्र तृतीय ने ले ली थी और देश में शासन  
और भी बिगड़ गई थी। लोगों की दशा पहले से भी खराब हो  
गई: तर नहीं, प्रगतिशील चीज का गला घोंटा जा रहा था।  
पिताजी के स्कूल, जिन्हें उन्होंने अपनी मूर्तियों से स्थापित किया  
था, बंद किये जा रहे थे।

उस समय वह एक छोटी सी लड़की थी, जो भी उसके  
जैसे उसके कमरे में बड़ी स्पष्टता के साथ गुंज रहे थे:

उस समय वह एक छोटी सी लड़की थी, जो भी उसके  
जैसे उसके कमरे में बड़ी स्पष्टता के साथ गुंज रहे थे:

उस समय वह एक छोटी सी लड़की थी, जो भी उसके  
जैसे उसके कमरे में बड़ी स्पष्टता के साथ गुंज रहे थे:

नव बल। सधपों के लिए। लेकिन वह एक ही चीज के लिए  
कहाँ है वह? अन्याय और दमन का सामना करने के लिए। एक  
आदमी तो अकेला कभी यह कर सकता है। वह एक ही चीज के लिए  
बहादुर से बहादुर आदमी भी कभी कर नहीं सकता है। वह एक ही चीज के लिए  
करोड़ों लोग एक साथ लड़कर ही इस काम को कर सकते हैं।  
लेकिन लाखों-करोड़ों लोगों को एक ही मध्य के लिए एक साथ लड़ना  
किया जाये?

अलेक्सान्द्र, मैं आजादी की तुम्हारी मजान को उठाऊंगा  
मैं उसी लक्ष्य को पाने की कोशिश करूंगा, मगर मैं बिना किसी  
दूसरे रास्ता खोजूंगा। अलेक्सान्द्र! तुम जिस लक्ष्य के लिए लड़ना  
चाहते थे, उसके लिए मैं अपनी सारी चीजें छोड़ दूंगा। मैं लड़ना  
लगा दूंगा।

गदगद के फूलों की महक से भरी ताजा हवा में वह खड़ा हो  
गया।

व्लादीमिर को वह समय सादर याद था। वह जानता था कि वह  
को पहली बार देखा था। उसकी आँखों में एक चमक थी। वह  
को देखकर भावी फलोद्यान की कल्पना में उसे एक ही चीज का  
साकार हो चुकी थी। बाग में एक ही चीज की एक ही चीज की  
हर पेड़ पर बहार आई थी।

सूर्य उदित हो रहा था, चेरी के पेड़ों के नीचे उसके निराले  
मन की आवाजें उठ रही थीं। वह एक ही चीज के लिए लड़ रहा था।

उस समय वह एक छोटी सी लड़की थी, जो भी उसके  
जैसे उसके कमरे में बड़ी स्पष्टता के साथ गुंज रहे थे:

व्लादीमिर ने लपककर नीचे जाकर दरवाजा खोला, उसकी  
 कमर में उसकी कमर में उसकी कमर में ही था। उसकी म  
 न अपने कमरे पर से खिन्ने उठोया, अपनी टोपी उतारी और धीरे-  
 धीरे सीढ़ियों पर चढ़ने लगी। वह अलेक्सांद्र के कमरे में जा रही  
 थी।

माँ चार पलंगों का कमरा था। व्लादीमिर ने ओल्गा  
 का कमरा जगहों पर कहा "जाओ बहन ठीक जगह, मुझे धोओ  
 और अपने को काबू में करो। माँ को हमारे आँसू नहीं चखने आने  
 चाहिए।"

बच्चों के कमरे में भागकर जाते हुए वह चिल्लाया, "चलो,  
 उठो सब!" उसने दूधोखी की काँड़े पहनने में मदद की और  
 मरीया के बाल गुंथने की बेकार कोशिश की। "चलो, माँ के पास  
 चलो!"

बच्चे अलेक्सांद्र के कमरे के दरवाजे में ही रुक गये। उनकी  
 माँ पलंग पर पड़ी हुई थी, उनका चेहरा तकिये में छिपा हुआ था।

"माँ!" व्लादीमिर ने आहिस्ता से आवाज दी।

मरीया अलेक्सांद्रोवना ने जवाब नहीं दिया। व्लादीमिर ने  
 मरीया को कोहनो मारी। वह पलंग पर चढ़ गई और हाथों से  
 अपनी माँ के गले को लपेट लिया।

"छ्हर देखो, मामा!"

मरीया अलेक्सांद्रोवना उस बँड़ी और उन्होंने अपने बच्चों की  
 कमर में उनका चेहरा पर मुसकानों की तरह रखा।

अपनी आँखों में दर्द और प्यार भरे उनकी तरफ देखते खड़े  
 बच्चे मानो कह रहे थे "हमें पुश्तानी जगहों से और पुश्तानी लोगों से।"

"बच्चों! नीचे चलो और नाश्ता करें," मरीया अलेक्सांद्रोवना  
 ने बच्चों से उसी हमेशा जैसी शांत आवाज में कहा।

आज सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक थी इतिहास की  
 परीक्षा। इतिहास के अध्यापक बड़े ही छिद्रान्वयी आदमी थे। आज  
 उन्होंने जो प्रश्न तैयार किये थे, उन सभी में पचास सवाल थे।  
 चार्ल्स चतुर्थ के प्रश्न जैसे बड़े प्रश्न थे कि चार्ल्स चतुर्थ के  
 मिलनेवाली जानकारी ही काफी नहीं थी। उनका मतलब था अध्यापक  
 द्वारा कक्षा में कहीं गई हर बात को याद रखना या फिर व्यक्तिगत  
 जानकारी प्राप्त करने के लिए संदर्भ ग्रंथों को देखना। बड़े बड़े  
 व्लादीमिर उल्यानोव से उत्तर पूछना चाहते थे, क्योंकि वे हमेशा  
 सभी उत्तर मालूम होते थे, मगर आज उन्होंने नहीं पूछा। एक बार  
 फिर उसने उनकी टिकी हुई, चिपचिपी तल्लों की मद्दम लिया, जो  
 उनके मारनेवाले कीड़ों की तरह चुभ रही थीं।

व्लादीमिर उल्यानोव उस दिन स्कूल आया था और हमेशा  
 की तरह अपनी किताबों के पुलिंदे को खोलकर अपने फीज को  
 अपनी उंगली पर लपेट लिया था। हमेशा की तरह वह अपनी  
 जगह पर बैठ गया था। ठीक है कि उसका चेहरा बहुत ही  
 था। हर कोई उसके भाई अलेक्सांद्र के पता की पर चला दिया जान  
 की ही बात कर रहा था। अफवाहें थीं कि उनके परिवार की मित्र,  
 अध्यापिका बेरा काश्कादामोवा को एक पत्र आया वह समझा कि मित्र  
 है और व्लादीमिर को इसके बारे में मालूम है किने ने बताया कि  
 जब व्लादीमिर ने इस खत को पढ़ा, तो उसने पत्र का कागज  
 यह बट गमना नहीं है, जिस पर हम चलना है। चलाया गया है।

$\frac{1}{2}$      $\frac{1}{3}$      $\frac{1}{4}$      $\frac{1}{5}$      $\frac{1}{6}$      $\frac{1}{7}$      $\frac{1}{8}$      $\frac{1}{9}$      $\frac{1}{10}$

*(The page contains faint, illegible markings or bleed-through from the reverse side.)*

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

*[The page contains faint, illegible markings or bleed-through from the reverse side.]*

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

[illegible]

$\frac{1}{2}$	$\frac{1}{3}$	$\frac{1}{4}$	$\frac{1}{5}$	$\frac{1}{6}$	$\frac{1}{7}$	$\frac{1}{8}$	$\frac{1}{9}$	$\frac{1}{10}$	$\frac{1}{11}$	$\frac{1}{12}$	$\frac{1}{13}$	$\frac{1}{14}$	$\frac{1}{15}$	$\frac{1}{16}$	$\frac{1}{17}$	$\frac{1}{18}$	$\frac{1}{19}$	$\frac{1}{20}$	$\frac{1}{21}$	$\frac{1}{22}$	$\frac{1}{23}$	$\frac{1}{24}$	$\frac{1}{25}$	$\frac{1}{26}$	$\frac{1}{27}$	$\frac{1}{28}$	$\frac{1}{29}$	$\frac{1}{30}$	$\frac{1}{31}$	$\frac{1}{32}$	$\frac{1}{33}$	$\frac{1}{34}$	$\frac{1}{35}$	$\frac{1}{36}$	$\frac{1}{37}$	$\frac{1}{38}$	$\frac{1}{39}$	$\frac{1}{40}$	$\frac{1}{41}$	$\frac{1}{42}$	$\frac{1}{43}$	$\frac{1}{44}$	$\frac{1}{45}$	$\frac{1}{46}$	$\frac{1}{47}$	$\frac{1}{48}$	$\frac{1}{49}$	$\frac{1}{50}$	$\frac{1}{51}$	$\frac{1}{52}$	$\frac{1}{53}$	$\frac{1}{54}$	$\frac{1}{55}$	$\frac{1}{56}$	$\frac{1}{57}$	$\frac{1}{58}$	$\frac{1}{59}$	$\frac{1}{60}$	$\frac{1}{61}$	$\frac{1}{62}$	$\frac{1}{63}$	$\frac{1}{64}$	$\frac{1}{65}$	$\frac{1}{66}$	$\frac{1}{67}$	$\frac{1}{68}$	$\frac{1}{69}$	$\frac{1}{70}$	$\frac{1}{71}$	$\frac{1}{72}$	$\frac{1}{73}$	$\frac{1}{74}$	$\frac{1}{75}$	$\frac{1}{76}$	$\frac{1}{77}$	$\frac{1}{78}$	$\frac{1}{79}$	$\frac{1}{80}$	$\frac{1}{81}$	$\frac{1}{82}$	$\frac{1}{83}$	$\frac{1}{84}$	$\frac{1}{85}$	$\frac{1}{86}$	$\frac{1}{87}$	$\frac{1}{88}$	$\frac{1}{89}$	$\frac{1}{90}$	$\frac{1}{91}$	$\frac{1}{92}$	$\frac{1}{93}$	$\frac{1}{94}$	$\frac{1}{95}$	$\frac{1}{96}$	$\frac{1}{97}$	$\frac{1}{98}$	$\frac{1}{99}$	$\frac{1}{100}$
---------------	---------------	---------------	---------------	---------------	---------------	---------------	---------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	----------------	-----------------

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

ने निर्दिष्ट ही देख चुके थे। उनके प्रिय पिता ने, जिन्हें आन्ति  
क तबो होर विचार तक न आया था, आन्तिपूर्ण सांस्कृतिक कार्य  
के सम्पन्न बना था। उन्होंने अपना जीवन जनता के जानोदय के  
समर्पित कर दिया था। तथापि उनके जीने जी ही उनके आदर्शों  
ही रोड दिया गया था चार जिन विद्यालयों में उन्होंने अपनी  
सम्पत्ति ने सहायता की थी वे बंद कर दिये गये, क्योंकि अशक्तान  
ने उन आर्थिक प्रयत्नों को निराल किया था, जो गांवों में  
चमकने लगा था। उनके पिता का रास्ता निष्फल रहा था।

उनके प्रिय भाई ने आतंकवाद का, ज़ारशाही से अकेले जूझने  
का रास्ता चुना था। यह रास्ता उनकी निरर्थक और अकाल मृत्यु  
का कारण बना था।

नहीं, इन रास्तों से विजय और जनता के बेहतर जीवन की  
प्राप्ति नहीं की जा सकेगी।

दिन गरम होता, तो ठेकेदार अगल-बगल पर ही छतर में बैठकर  
चाय पीना पसंद करता, जहां से वह हर चीज पर नज़र रख  
सकता था। उसने तिरपाल के नीचे एक छोटी-सी मेज लगवा दी  
थी, जिस पर रखा समोवार भाप के बादल छोड़ता रहता था।  
समोवार के पास ही चमचमाती सफ़ेद चायदानी रखी जाती थी  
और जहां वह बैठा होता था, उससे कुछ ही कदम की दूरी पर  
घूप में दमकती बोलगा मंथर गति से जान के गाय बढ़ती चली  
जाती थी।

आज भी वह हमेशा ही की तरह अपनी मजबूत अगल पर  
बैठा हुआ था। एक नौकर लड़के ने मेज पर नाच की चमकदार  
समोवार रख दिया था, घाट हौले-हौले चल रहा था। डेली  
चिमनीवाला एक छोटा-सा स्टीमर घुएं का गुबार छोड़ रहा था।  
नगर में जहाजी एक बजरे पर दाढ़-भाग कर रहे थे और गरमों से  
निदाल यात्रियों का एक झुंड धीरे-धीरे घाट की तरफ बढ़ रहा था।

“हुजूर, मैं अभी-अभी नावों के पास से आ रहा था,” एक  
जहाजी ने मेज के पास आकर खड़े होने का कहा। “वहाँ एक  
आदमी है, जो नदी के पार जाना चाह रहा है। उसका कहना है  
कि वह बहुत जल्दी में है और बन्दर का आजार नहीं कर सकता।  
वे लोग तो नहीं जानते कि क्या है, अगर वह यही कहे जा रहा  
है कि ‘ठेकेदार को किसी को भी पार ले जाने में रोक्कत का हक  
नहीं है। नदी उसकी निजी आगुदाद नहीं है’”



यह वही था ' ' नोजवान ने उम्मीद भरी आँखों से  
उसका सामना करी आवाज में कहा। ' चलो जाओ गया मे।

नर नर कहा होलाना पूर्वी पानी तावे पर कनार में लगी  
हई वा खर लान की मुता मयों गहन में नानवान बाग्या  
। मातियों में मे फा ने आगदमिह वाते पर रहा था भांजी की  
महं पानी हई और चेहरे पर गहरी शिकने थी।

उसका थाप यह नहीं समझते कि कोई भी आपको लोगों को  
पार ल जान मे नहीं रोक सकता! ऐसा कोई कानून नहीं है -  
मगर न जान मे! " उसने कहा और उसकी आँखों में ध्वंग्य की  
नमक सा गरी।

"हबूर, हम यह कैसे कहें!" सफेद मूँछोंवाले आदमी ने  
कहा। "उसके पास घाट का ठेका है और वह शहर को पैसा देता  
है और यही कानून है!"

नोजवान की ओर चढ़ गई:

"अगर उसके पास घाट का ठेका है, तो हुआ करे। मगर  
उसे और किसी को मुसाफिर ले जाने से रोकने का कोई हक नहीं  
है। समझे? तुम उस पर हर तरह मुकदमा चला सकते हो।"

सफेद मूँछोंवाले आदमी ने अपनी सिगरेट के टुर्रे पर थूककर  
उसे धुसा दिया, पर उसे पानी में नहीं फेंका (क्योंकि धोखा का  
लोग आदर करते थे) उसने उसे रेत में कुचल दिया।

"यहाँ वही धन्ना सेठ है, वह जज को भी खरीद सकता है।  
हम कोई उसी की तरफ है। यह लहावन नहीं मान्य कि जिसकी  
गली उनकी सम।"

"तहीं, यह ठीक नहीं है!" नोजवान ने हठपूर्वक कहा।  
"उसने बस आप सभी को डरा रखा है। वह कानून के साथ मन-  
मानी कर रहा है। आपको तो इसे साबित करने की भी जरूरत

नहीं। अगर आप उस पर मुकदमा चला कर दें, तो उसे इस  
पर जुरमाना करना होगा।"

सफेद मूँछोंवाले ने हाथ झटक दिये पार रहा कर, तो लगे।  
पुरानी-सी टोपी पहने दूसरा भांजी घाट की तरफ आनखिन्नापुकर  
देखता हुआ कभी इस, तो कभी उस पैर पर जोर देता रहा था।  
'तो' ' नोजवान ने प्रश्न।

"बुद्ध भी हो वह हमें वापस आन : शि मजबूर कर  
देगा—यह तो तय बात है," भांजी ने झिञ्झने दृष्टि कहा।

"चलो, चलें तो सही, वह करके देख लें कोशिश।"

भांजी के जवाब का इंतजार किये बिना नोजवान ने नाव को  
पानी में धकेल दिया, उसमें उछलकर चढ़ गया और चपलतापूर्वक  
अपना संतुलन रखते हुए नाव के अगले हिस्से में जाकर बैठ गया।  
भांजी कई कदम पानी में चला और फिर नाव पर चढ़ गया। वह  
मानो इस बात पर हैरान होते हुए अपना सिर हिला रहा था कि  
उसने अपने को बातों में आ जाने दिया है। चरमराते चढ़ पानी को  
छपछपाने लगे। यान्त्री विचार मग्न सामने की तरफ देता रहा था।  
इस महान नदी की अपार सुपमा को वह पृथ्वी पर अपने गहन  
दिनों से ही देखता चला आया था, मगर उसकी आँखें उसकी गोभा  
को निहारते नहीं थकती थीं। नाव अब काफ़ी तेज़ी से नाव जा  
रही थी और वे खासा फ़ासला तय कर चुके थे, मगर हमला  
बिनारा अब भी उतनी ही दूर नज़र आता था। अचानक भांजी ने  
चपुआ को पानी पर जोर से पड़का।

"तो, यही हुआ न!" उसने गरम ने कहा। "तुम गान  
तरफ़ देख रहे हो! देखो जरा घाट की तरफ।"

वे देख सकते थे कि कोद में नागर निहर्मी लगी लमी व पटन  
एक दहियल आदमी घाट के सिरे पर आकर जाते तो यह पर ला  
रहा है।

“ओ-ओ-ओ!” वह चिल्लाया, “वापस आओ!”

उस क्षण चपल दौड़ पड़ा रहा है।” नौजवान ने पूछा।

“ओर क्या? वहाँ तो है—हिंसा क्या रहा है?” बड़ी तो बड़ी

तो मालिक है।” मांझी जवाब में मसकाना। “हम क्या नुकसान

करते? हम हाथ ऊपर में ही नये पार करना है। लेकिन फिर भी

मना है कि वह हिंसा तो एक पैसा भी खर्चाने दे। अगर उसकी

वान हमेशा ठीक होती है। मारी नाऊन उसी के पास है।

घाट पर उड़ा आदमी अपने हाथ हिला-हिलाकर उन्हें

इशारा कर रहा था।

“अरे ओ! वहाँ हो क्या? वापस आओ!”

“चलते चलो!” नौजवान ने कहा। उसकी आँखें अब भिंचकर

स्वाह लकीरों जैसी हो गई थी। “काश, तुम्हारे पास एक जोड़ा

चप्पू और होने!”

“कोई फायदा नहीं,” मांझी ने निराशा के साथ कहा।

“देखो जरा, नमाशा शुरू हो रहा है। भीड़ को देखो—सभी तरफ

से लोग आ रहे हैं।”

“तो क्या हुआ? भारी डाँड़!”

इस दृढ़ आदेश का पालन करते हुए मांझी नाव को खेता

चला गया। वे बीच धार को पार कर गये थे कि तभी स्टीमर की

चिमनी से धुएँ का एक भपका उठा। सीटी की एक नज़, कर्णभेदी

आवाज आई। वजन पर सवार आदमी ने रम्मे के सिन को पकड़ा

और स्टीमर अपने पीछे एककाली लहने छोड़ता हुआ तेजी के

साथ चल पड़ा। उसके अगले पर दुश्मन के जहाज पर चढ़ने को

तेज़ा डकड़ों की तरह हाथ में नाव पकड़ने के हाटे उठाये जहाजी

सूत्रे हुए थे पर नये पैर ही आदमी, जो प्रत्यक्ष जहाज का

कप्तान था और जिसने अपनी पतनून से पायनों को ऊपर चढ़ा

रखा था, मगर सफ़ेद टीपी करने लग था। तब फटी आवाज से आवाज

“दायें चलो! पूरी चाल में!”

जब स्टीमर और भगोड़ों के बीच आवाज से आवाज रह गया,

तो कप्तान गरजा:

“चाल उलटो! रोक दो!”

स्टीमर का इंजन कुछ बार चुमा अरु फिर रुक गया। अब

स्टीमर नाव के लगभग बराबर ही रुक गया था। उसे जाना न

उसके किनारे को जकड़ लिया था।

“आप यहाँ मुसाफ़िरो को पार नहीं ले जा सकते।” कप्तान

ने सख्ती के साथ कहा। “मेहरबानी करके स्टीमर पर आ जाइये।”

“आपको हमें रोकने का कोई हक नहीं है।” नौजवान ने

जवाब दिया, “इसके लिए आपको अमानत में जाना पड़ेगा।”

“इससे हमें कोई भरोकार नहीं। हम उसका जवाबदारी नहीं

हैं। हम तो वही करते हैं, जो मालिक हमसे कहता है। अगर आपका

पार जाना है, तो ऊपर आ जाइये। हम नाव को पार नहीं जामि

देंगे।”

नौजवान ने मांझी के पैरों चुकाये, स्टीमर पर चला, एक

नोटबुक निकाली और जहाजियों के नाम पूछे।

“बड़ी खुशी के साथ,” कप्तान ने इतनीनतापूर्वक उत्तर दिया

“आप जो चाहें, लिख सकते हैं।”

जब यात्री को घाट पर वापस पहुँचा दिया गया तो उसके

उठकर उसके पास आया और उपानतापूर्वक मसकाना हुआ कर्तन

लगा:

“बेकार क्यों परेशान होते हैं श्रीमान? जैसे ही मुसाफ़िर

पूरे हुए, हम कायदे के मुताबिक आपका पार न जायेंगे। नीतिगत,

”

इस बीच मेरे साथ नाच क्यों नहीं पी लेते? शहर और वन के साथ ---"

मुसाफिर ने जैसे यह सुना ही नहीं:

"और यह सब कौन करेगा कि कायदे के मुताबिक क्या है?"

"भै!" ठेकेदार ने मुमक़राते हुए ही कहा। "इस घाट का मैं अपने पास है और मैं यहाँ प्रतियोगिता नहीं चाहता। ज़मीन में पड़ा नये ट्रोन दगा। साथ क्यों नहीं पीने? चन्दिये जैसी आपकी मन्नी।"

लोग गठरी, गठुर, पुलिंदे लिए लगातार आते ही जा रहे थे। कई सामान से भरी गाड़ियाँ भी थीं। आखिर जहाज़ियों ने बजरे पर चढ़ने का तक्ता बिछा दिया और मुसाफिर उस पर सवार होने लगे। स्टीमर ने सीटी बजाई और बरख़राने लगा। तभी उन्होंने किनारे से कुछ लोगों के पुकारने की आवाज़ सुनी—ये लोग देर में आनेवाले थे और अपने हाथ हिलाते और लाल धूल के बादल उड़ाते से भरसक तेज़ी से भागते आ रहे थे। कप्तान उनके लिए दूध, जॉर्जि, अन्य चीज़ें तुरन्त नहीं मिल सकीं। मुसाफिर से मिलनेवाले किराये का नुक़सान हो।

"चलो!" उसने आखिर आदेश दिया।

ठेकेदार फिर अपनी मेज़ पर जा बैठा। नीकर ने तवा भर जलते लान-लान कीचले लाकर समीप में ढाल दिये। ठेकेदार का परिचित एक छोटा अफ़सर उसके साथ आकर बैठ गया। उसने नाच का पीछा होते देखा था और अब वह उसके बारे में अपने मित्र से ख़बर कर रहा था।

गन्म साथ ही नज़रना पर फूट मानने का ठेकेदार बोला "क्यों नहीं गन्म है उनमें।"

आपकन नम्र से बतलते अफ़सर ने पिछला पूछा नम्रन "क्यों नहीं गन्म है उनमें।" "क्यों नहीं गन्म है उनमें।" "क्यों नहीं गन्म है उनमें।"

बोले चने! पानी में हूर लहर हो अन जगना बाणी है मगर यह घाट से टकराती है कि ख़रम ही पानी है।

जरा ही देर में वे नाव आर उस मसाफिर के पास में भूत ब्रुके थे और शहर की ताज़ा ख़बरों और अफ़सानों की चला चला लगे थे। उनमें से कोई इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता था कि एक दिन सारा ही शहर इसी घटना की चला चला होगा।

इसकी शुरुआत ठेकेदार को अनीपचारिक रूप में वह ख़बर मिलने के साथ हुई कि समारा नगर में अमर बिलाप रमिनाद शहर की गई है और उस पर क़ानून के साथ मनमाने करने का इलज़ाम लगाया गया है। पहले वह यह नहीं समझ पाया कि यह किस वारे में है। वह काफ़ी लंबे अरसे से इस बंधे में था और उसमें कई मामले ऐसे भी हुए थे, जिनसे वह निश्चिंत आया था, मगर ऐसे किसी मामले का उसे कभी सामना नहीं करना पड़ा था। उसे बताया गया कि फ़रियाद किस वारे में है और यह कि क्या चला कि वह किसी ज़ल्यानोव नामक आदमी ने शहर की है। वह सहायक वकील है और समारा में प्रेक्टिस करता है। उस आदमी अख़िर ज़ेहरे आर नेज आया की बंद हो आते। उस वक्त भी यह आया कि उसके दोस्त ने घाट से टकरानेवाली नहर के पास में क्या कहा था। "समझे नहीं," ठेकेदार ने जवाब दिया। "उसका ज़्यादा है कि वह मुझे डरा देगा।" वह उस बात पर विश्वास कर ही नहीं सकता था कि एक बूढ़ा गाज़ी। पीछे उस अदालत में जाना पड़ेगा।

उसे यह भी बताया गया कि यद्यपि वह छोटे गज़ीर मामला नहीं है, पर है ऐसा, जिस पर अदालत में जाया जाय नहीं है और उसकी सजा 10 महीने की है। और ज़माना इतना उससे बचा नहीं जा सकता अतः वह ज़माना में बचना चाहता है, तो अच्छा यही होगा कि वह तुरन्त पर ले

और जिस वकील ने तब इसे मज्जा गया वह अनमोल नजर आता था - युवा साथ ही एक पुराना सा पत्र था और नमकी इस्तेमाल करता था। उसने अपने मर्यादा को बताया कि मामला सीधा-सादा है, मगर है परेशानी में डालनेवाला, क्योंकि स्वच्छाचार पत्रिका है और उसका जो इसी चलती बात नाबिन करने में बहुत मजिद इसी पड़ेगी। वकील बचपन की बात करी, ईश्वर दयालु है।

उसने पेजगी ली और अदालत चला गया - मुकदमे की सुनवाई मुद्दालेह के शहर में, किसी दूसरे जिले में बहुत दूर, हो रही थी। जब वकील स्थानीय अदालत में पहुंचा, तो उसने पाया कि न्यायाधीश पत्रिका पढ़ने से मज्जा है। उसने उनका शिष्टतापूर्वक अभिवादन करते हुए कहा:

"तो, साहब, आप समारा से आये हैं? कितनी दूर से! तो किलोमीटर तो होगा ही... और फिर ऊपर से हमारी रुसी सड़कें!"

अभियोक्ता ने जवाब दिया कि रास्ता तो বেশक लंबा है, मगर उसने बातचीत आगे नहीं चलाई। जरा ही देर में उन्हें न्यायाधीश ने कमरे में बुलाया गया। जब रोबदार आदमी या आन कमकी आंखों के नीचे अभिजातमुलम घेरे पड़े हुए थे। उसने फरियाद को पढ़ने के बाद दोनों पक्षों को राय दी कि वे अदालत के बाहर समझौता कर लें, क्योंकि मामला बहुत ही मामूली है। युवा अभियोक्ता ने जवाब दिया कि वह आज या आने वाली भी समझौता करने के लिए कतई तैयार नहीं है और उसने मुकदमे की सुनवाई करने की मांग की। कुछ ही देर बाद न्यायाधीश ने निर्णय दे दिया - मामले की सुनवाई को मूलतः करना पड़ेगा, क्योंकि वह बातों का स्पष्टीकरण करना जरूरी है।

मगर लौटकर ठेकेदार के वकील ने उसे सारा किस्सा सुनाया।

ठेकेदार उलझन में पड़ गया था। अपनी गद्दी को खींचता हुआ उसने कई बार उसे टोककर कहा:

"वह इतनी मेहनत कर किसलिए रहा है? एक वकालत, जो गाज गिरे मुझ पर, पर बात में नहीं समझ पा रहा - आप मर लिए इतना इसलिए कर रहे हैं कि मैं आगले मोड़ी पीना डे रहा हूँ, पर मैं फ्रीस न दूँ, तो आप मेरे लिए कुछ भी नहीं करेंगे। ठीक बात है, न? मगर वह तो इस मामले में अपना ही पैसा लगा रहा है और आने-जाने में जो कौमती बर्बाद हो रहा है वह अलग से। सो किसलिए? क्या आप यह बात मुझे समझा सकते हैं?"

"वह अभी छोकरा ही है - नौसिखुआ!" वकील ने जवाब दिया और कंधे सचका दिये। "वह महत्वाकांक्षी है, मगर वह नहीं जानता कि उसने कौनसी मुसीबत सोल ले ली है! न्यायाधीश उसे मज्जा चखा देगा। मामले की सुनवाई जब होगी, तब तक उसे छटी का दूध याद आ जायेगा!"

वकील जानता था कि वह क्या कह रहा है।

मुद्दई और मुद्दालेह को एक बरसाती दिन की जब अदालत के सम्मन मिले, तो पतझड़ उतार पर था, ओल्गा जा पानी छेंटा हो चुका था और उसके ठंडे कितारे एकदम जीवन में पतल, तिन नज़र आते थे।

इस बार ठेकेदार अपने वकील की वापसी का देखगरी ने इंतजार कर रहा था।

"न्यायाधीश ने फिर तारीख लगा दी," वकील ने वापसी पर यही पहले शब्द थे। वह खुशी के मारे अपने हाथों को गंठ रहा था। "न्यायाधीश है अपने काम में मास्टर। उनका फिर एक रास्ता निकाल लिया। मगर यह मानना पड़ेगा कि उन छोकरों को बरदाश्त करना मुश्किल है।" वकील की आवाज में सरहल की अजीब-सी गूंज आ रही थी। "वह अदालत में फिर से फिर नजर

भीगा और कीचड़ में मना आया था। आप तो जानते ही हैं कि नमस्कार न करने तो आप स्वयं क्या जानते थे—प्रलय में भी बदलना। मगर इसमें बड़ा बदलावा नहीं। मना था न्यायाधीश न पिएर रहा कि हम अदालत में बाहर तो गमजाना पर ले, पर वह मैगार हो नहीं जा। तोई बात नया प्रयत्न। कुछ साफ़ और नया न वह, प्रयत्न प्रयत्न आप ही बदल जायेगा। हम थाकर हमारा कचूमर निकाल देंगे। देखते-देखते ही वह भाग खड़ा होगा।”

डेकेदार चुप था। वह बड़ा अजीब अनुभव कर रहा था—मानो वह किसी लड़के पर जा रहा है और अचानक उसका सिर किसी प्रदूष्य, चट्टान जैसी सख्त चीज में टकरा गया है।

गमय बीतता गया।

बोल्गा अब जम गई थी। लगता था, जैसे कभी किसी ने इस विशाल मक़्द मंदान को नाव से पार नहीं किया था, जैसे वहां कभी कोई बजरा नहीं रहा था और घाट तो परीवर्थाओं का बर्फ़ का बना मक़ान जैसा ही लगता था।

नव वर्ष के कुछ ही दिन पहले सहायक वकील व्लादीमिर इत्योच सत्यानोव को स्थानीय न्यायाधीश का सम्मन मिला। उसके परिवार में उस मुक़दमे के बारे में मालूम था। उसकी मां अपने बच्चे को मरफ़, जो किसी अनिधि के साथ जनरल बन रहा था, भुगत हुए नितापूर्वक मोचने लगी कि इतना ज़ ज़ेमे दूसरे छोर पर अभी हम जगह पर हम के बिना उस एक रात और अनमोय गगनपर शक़ाती, तोई में नया पेंशन जाना होगा। वह जानती थी कि उसका जगदा बदलवाने से निश्चिन्त करना बेकार रहगा, मगर वह वह रहे बिना न रह सकती।

“व्लादीमिर, काश कि तुम डेकेदार पर जवाबा मुक़दमा वापस ले लो। इसका कुछ नतीजे निकालना क्या था प्रत्या-जाना करने में तुम अपने का बग़-बराबरी हो, और कुछ नहीं।”

“मुझे जाना ही होगा, मां,” बिगा। पर मे प्राची आने उठते हुए उसने कहा। “मुझे यह भरोसा पूरा लगता है कि मैं ऐसे मीके को गुजरने नहीं दे सकता। चारे के लगे बिना ही खो न डालें, आखिर उन्हें कैमला तो सुनाना ही पड़ेगा। गा-क-...। इसका पता चल जायेगा—सैकड़ों लोगों को, यह बतल परिणम मचा रहेगा! मैं ख़ूब जानता हूँ कि न्यायाधीश कन सा रहा है। वह इसे जितना हो सके, उतना खींचने को, उतना टाकने का प्रयत्न कर रहा है, क्योंकि उसके आगे कोई चाना नहीं है।” और अपने प्रतिद्वंद्वी की तरफ़ मुसकराकर देखने हुए उसने कहा, और न तुम्हारे पास ही है—मात! लेकिन वह मुझे सत्य नहीं मक़ना, अफ़सोस वम इसी बात का है कि मुझे रात को सोने तकनी प्रेमी।

बसंत आ गया था। पिघलती बर्फ़ सैलावी नदी में प्रेमी चान में वह रही थी, तेरती हिम शशियां आपस में टकरा रही थी नाफ़ पानी के अंतराल चौड़े होते जा रहे थे। गीले खेतों में माघ उठ रही थी और हर चौबच्चे के पेंदे में गुनहम गुनहम से टपकते गढ़े हुए थे। नदी में अभी जहाजरानी जम नहीं हुई थी। स्त्रीमर अभी अपने गले साफ़ कर रहे थे और फटी छद्मों में एक-दूसरे को पुकार रहे थे, लोग नालियों और घाट की बर्फ़ से तोप रहे थे मगर यात्रियों का नदी के पार जाना शुरू हो गया था।

नावों का एक विशाल बेड़ा यात्रियों को उधम-उधम ले जा रहा था। इनमें भारी मछलीमार नावें भी थी और माग़रण दोड़ी नावें भी। और जहां भी लोग आपस में बातचीत करने का प्रयास होते, वे घाट के मालिक, डेकेदार की ही आंखें करने, जो उस समय जेल में अपनी सजा के दिन काट रहा था।

पुरानी छोपी पहने मांझी जवान-नायर जैसा अनुभव कर रहा

जा। वह जान नहीं थी कि उसी समय-समय गा गाए भी मुना  
 ने बना है और हर बार वह उसी कुछ और जोड़ देता था।

वह जानता था कि वोना ने जोड़ा था। यह तो उसे डेढ़ने  
 के साथ साज हो जाता है। वे नीजवान मगर नवरदल है और  
 क्या गरजनी आवाज है! उसने कहा, 'मारो डांड!' तो मेरे  
 साथ तो अपने आप ही नष्पू चलाने लगे!"

"उहरो जरा, ठेकेदार के छूटने दो! देख लेना, वह तुम्हें  
 ठीक कर देगा! तुम सभी रोओगे!"

लेकिन मांझी हंस पड़ा:

"अरे नहीं! उनका तो उसकी चाय ने ही हम ले लिया है, हां!  
 वह क्या फिर जेल जाना चाहेगा? और अगर वह कुछ करने की  
 सोचता भी है, तो क्या हुआ, हम..." मांझी ने गहरी सांस ली  
 और गुरीया: "चाल उलटो! रोक दो!"

म० प्रिलेजायेवा

जाड़े का दिन

इस कहानी में वर्णित घटनाएं पिछले वर्षों में सोवियत संघ में पड़ी  
 थीं—जाराणाही जमाने में लेनिनग्राद का उद्देश्य मान था। जाराणाही  
 इत्येव उस समय वहीं रहा करते थे।

सरदियों में एक दिन व्लादीमिर ज्योव पुर्तगाल जागवाना  
 देखने के लिये गये। उनके परिचित एक डॉक्टर ने मेनजर-न  
 कहा कि एक बड़े विद्वान व्यक्ति आये हैं। और वह हमारा घर  
 खाना देखना चाहते हैं।

कारखाने के कार्यालय के एक कर्म ने प्रवेष्टन बना दिया,  
 जिस पर लिखा था: "यह प्रमाणित किया गया है कि श्री ज्योव  
 इ० उल्यानोव को कारखाना देखने की अनुमति है।"

व्लादीमिर इत्येव ने उसे धन्यवाद दिया और कारखाना के  
 अहाते में प्रवेश किया। वह बड़ा विशाल था और उसमें कई विभाग  
 थे। लेनिन कारखाने की मशीनरी और मशीनों की निपुणता में  
 बहुत प्रभावित हुए, जिनके चेहरे बहुत ही खूबसूरत और निपुण थे।

फोरमैन ने बताया, "हम राजनीति की उन्नति करने हैं। उन्नीसवीं  
 ये सब बीमारों से नज़र आते हैं।"

जहर पर काम फिर आरंभ था। जाराणाही उन्नीसवीं उस समय  
 उन्नीसवीं बिलाई विभाग में था। उसमें उन ने जोड़ने के लिये नए  
 तल के लोहा की रोजनी थीं, उनका जोनी रोजनी में नजराना हर  
 कोई बीमारों की तरह जड़ ही नज़र आता था। जाराणाही की जोड़ी  
 उन्नीसवीं अफसर समझने का फोरमैन ने उन्हें काम की निम्न प्रशिक्षण



हा परिणाम दिया। लेकिन उसका म निरन्तर जाने ही माने र  
आप अभी वर नहीं हुए ही नहीं हो था।

"यह क्या हो रहा है?" फोरमैन ने उल्लू जैसी गोल-गोल  
सांख्योवाले एक जवान मजदूर से उगटकर पूछा।

जो जवान अपनी गंठों व अपने टांके को धरमने हुए इम्पान  
की एक पटरी को लंबे चिमटे से संभाल रहा था।

"क्या हो रहा है वह?" फोरमैन ने और भी ज्यादा सहृदयी  
के साथ कहा।

"भूख के आगे किसका बस है, भैया!" मजदूर ने हंसकर  
कहा।

"खीसे मत गाढ़ो। जानते नहीं, किससे बातें कर रहे हो?"

मजदूर की तयारी चढ़ गई।

"जाओ उस्ताद तुम, अपने रास्ते जाओ!"

फोरमैन के तेवर भी चढ़ गये।

"बदतमीश! इसके लिए तुझ पर जुरमाना किया जायेगा,"  
उसने कहा और वहां से चल दिया। व्लादीमिर इत्येच उसी के  
पीछे हो लिये दरखुमा इफतार में फोरमैन ने एक सेज की दरवाज  
में उस मजदूर की गंठों पुस्तिका लगायी और उसमें कुछ लिख  
दिया।

"क्या मैं इसे देख सकता हूं?" व्लादीमिर इत्येच ने पूछा।

"नहीं।" खंचारते हुए उन्होंने इस्वात विन्हाट विभाग  
क्या अन्य विभाग की जांच-माफ़ी को कहा "मजदूरों का हाथ-  
पिंजरा बांध रहे हैं और उनमें खाना खाने की छुट्टी नहीं है।"

माथ बिना यह काम कैसे करेंगे?" व्लादीमिर इत्येच ने

कहा।

"वे अपना खाना साथ लेकर आते हैं।"

मगर आपने तो उस आदमी को खाने के लिए ही डांटा था।"

"उसने बदतमीशी जो की थी, फोरमैन बदतमीश मगर  
वह गमझ गया कि आगंतुक जुरमाने व पिंजरा व गंठों को  
अजीब बात थी।

टन्-टन्-टन्-टन्।

कोई लोहे की पटरी के टुकड़े को बजा रहा था, या विभाग  
में घंटों का काम देता था। उसकी आवाज को मजदूरों के  
भोहू ने पकड़ लिया था। दिन की पाली खुदम हो गई था।

"अरे, ओ फ्योदोर!" फोरमैन ने उस मजदूर से आवाज  
लगाई, जिसे उसने डांटा था। "मैंने तुम्हारा जुरमाना मारकर  
दिया है। इसके लिए हमारे उन मेहमान का शुक्रिया अज करें।"

मजदूर उनकी तरफ देखे बिना चला गया।

"गंवार कहीं का! देखा आपने, कैसा गंवार?" फोरमैन  
ने माराजी के साथ कहा।

"थके और भूखे आदमी से शिष्टता की उम्मीद मत की जा  
सकती है!" व्लादीमिर इत्येच ने कहा।

वह सैकड़ों मजदूरों की भीड़ में मिलकर भारघाते में निरत  
गये। एक घंटे बाद ओगोरोदनी गली में पुतोलोव मजदूरों के  
की अध्यक्षता-मदली की बैठक होनेवाली थी। व्लादीमिर इत्येच भी  
अपेक्षित थे। मजदूर उन्हें फ्योदोर पेवोविच के नाम से जानते थे।

शाम होते-होते सरखी चढ़ गई थी। तेज ठंडी हवा उनके  
मुंह पर थपेड़े मार रही थी। व्लादीमिर इत्येच ने अपने सावनीट  
के कातर को उठा लिया।

"क्या जिंदगी है!" उन्होंने मन में सोचा "एक घंटे रोने की  
मशकत, खाने की भी छुट्टी नहीं और अगर मेरे कदम पर जुरमाने।"

लेकिन ओगोरोदनी गली में मजदूरों पर पड़ने की बाहर ही  
एक परिचित मजदूर ने उनकी समझती की वनाखाने समर  
के गुन दरवाने में कने रानी की मजदूर-अनी आवाज गुनाई की

“आपने इन मेहमानों का ज़रिया खड़ा करी। मेहमानों का अपने सस्य गया, पर मुझ पर एक फिर ज़रमाना होगा।”

“आयद होगा, और तो भी बिना किसी वजह के,” व्लादीमिर इत्योच ने जल्दी से कमरे में घुसते हुए कहा।

मेज के आगपास बैठे लगभग पंद्रह लोग उसी मजदूर की बातें सुन रहे थे, जिसे उन्होंने आज दिन में देखा था।

“मेरा नाम फ़्योदोर पेत्रोविच है, मतलब यह कि हम दोनों नामराशि हैं,” व्लादीमिर इत्योच ने कहा और मुसकरा दिये।

“घरे! यही तो आज हमारे विभाग में आये थे,” फ़्योदोर ने कहा और खड़ा हो गया।

उन्होंने मंजूर किया कि मंडी। कुछ लोग बहुत ही नाराज़ नज़र आने लगे। मगर इससे वह विचलित नहीं हुए, बल्कि वह खुश हो गए।

“यह खुशी की बात है कि आप लोग इतने सतर्क हैं,” व्लादीमिर इत्योच ने कहा। और साथी फ़्योदोर, आपने स्थिति को बहुत अच्छी तरह समझ लिया है। सचमुच, ‘मेहमान’ अपने नाम चला गया है, मगर फ़ोर्मेन और मैनेजर वही हैं और वे ज़रमानों से आपकी नाक में दम करते ही रहेंगे।”

मजदूर अपनी बातों को बहुत ध्यान में सुन रहे थे, क्योंकि ज़ा वह वह रहे थे, उसका उनके जीवन, उनके भविष्य के साथ संबंध था। फ़्योदोर खामोशी में बैठ गया।

“हम इसका मुकाबला कैसे कर सकते हैं?” व्लादीमिर इत्योच ने पूछा। निर्भय भाव से।

“सबसे पहला है,” फ़ोर्मेनिया ने प्रतीति नहीं निपटा जा सकता। हम एकजुट होना होगा,” फ़्योदोर ने सोचा। उसने अपने को पहले किसी भी समय की अपेक्षा अधिक अवितशाली और माहुरी अनुभव किया। देर गये गन नव मजदूरों ने जार की हुकुमत के खिलाफ़,

सरकार के मालिकों के खिलाफ़ लड़ने के लक्ष्य पर ध्यान दी और व्लादीमिर इत्योच की कही बातों में सारी सोचा।

जब अध्ययन मंडली बिखरने लगा तो फ़ोर्मेन ने कहा “चलिये, मैं आपको घर पहुंचा दूँ।” उन्होंने अपने चमकते चेहरे को उसके लिए आज की शाम अवितशाली थी।

लेकिन व्लादीमिर इत्योच ने जवाब दिया

“नहीं, यह असंभव है। हम दोनों ही जानकार हैं कि जो हमारा पीछा करने की कोशिश में बाहर कोई जातिवादी गजाल तो? इसका मतलब होगा कि हम दोनों पर सारा ज़माना हम दोनों को अलग-अलग ही जाना होगा। मतलब यह तोपनीयता की बात को कभी मत भूलना। भ्रुकिया पुनिस रेगमेंत का मैं हूँ किसी को भी हमारे संघ के बारे में हवा भी नहीं बरसी जातिवादी ठीक है न?” और उन्होंने उसकी तरफ़, प्रकटतः मज़ाक में, ज़रमाने असल में गंभीरता के साथ अपनी तंगली हिलाई।

पहले एक मजदूर गया, फिर दुसरा, फिर तीसरा यार... बाद व्लादीमिर इत्योच के जाने की बारी आई।

सड़क पर जाने पर उन्होंने ठंडी हवा में सुख से सांस मारा। यह खुश थे, क्योंकि मजदूरों ने ज़रमानों की प्रणाली और पूँजीपतियों के चिरुद लड़ाई के बारे में ज्यादा समझने की उनकी प्रकट की थी। उन्होंने निश्चय किया कि वह इन विषय पर ध्यान लगा लियेंगे।

मध्य पर चलते-जाने पर उन वेद के बारे में ही सोचने लगा... बादनी गन थी गणना पर सफ़ेद बाइल ईड... यह थे और उनके बीच वेस्ता पीछा नाद सुनी मंडी के दर पर सार वेच को आलोचित कर रहा था। ख़ासतः व्लादीमिर इत्योच की निगाह एक आदमी पर पड़ी जो सड़क के दूसरे पहलू पर जातिवादी में छिपा-छिपाकर चल रहा था। उन्होंने उसे पहचाना था दिया कि

सुप्रिया पुलिस के आदमी पर उसकी निगाह नहीं पड़ी है और प्रीतम ने साथ साथ साथ चले गए, यद्यपि अब वह पहने थे नए चूने के जूते। उन्होंने पीछे मुड़कर, साथ पर कौन जमा दाय को चढ़ी की आवाज नहीं। किसी ने ज़रूर उन्होंने उस पर ध्यान दिया। अगर सुप्रिया भी उन्होंने उस पर ध्यान ही दिया था। ब्लादीमिर इल्यीच ने उस पर जल्दी से एक निगाह फेंकी : उसकी मुँह काली थी और उसने काला चप्पल लगा रखा था। ब्लादीमिर इल्यीच अपने दरवाजे के साथ वाली सीढ़ पर बैठ गये। उन्होंने अपने ओवरकोट के कालर को उठा लिया और सोचने लगे कि उससे कैसे पीछा छुड़ाये।

उनका स्टाफ अभी भी बहुत दूर था, इसलिए वह नौद के झोंके में आ जाने का दिखावा करने लगे। उन्होंने अपने सिर को झुका लिया और ह्राम की गति के साथ-साथ झूमते हुए बचकर निकलने की तरकीब सोचने लगे। छिड़कियों पर झक जमी हुई थी, इसलिए वह यह नहीं देख सकते थे कि हैं कौनसी जगह पर। बुझिया उनसे दो सीट पीछे बैठा हुआ था।

[illegible]

साथ पर ताम्र छोटो-छोटो कजादीमिर इतनाच नें चर्फ के  
मक नन्दम निम्ने गो पिपरा दिया था। उन्हान आगे मिर्चामिच्यार  
बडा कि दाम तला पर है। बस, एका ही स्ट्राप और जाना था...  
घोर खर खर भी आ गया। दाम मुर्ची हुई।

कोई उत्तर रहा है वहाँ पर? इन्टर ने पूछा। किसी ने जवाब नहीं दिया। जार्जामिन ज्यों-जैसे भाग रहा, त्यों-त्यों ही, अगर उनका दिल धक-धक कर रहा था। धातु नकल का ट्राम ने लटका खाया। उसी क्षण जार्जामिन ज्यों-जैसे जहाँ से उड़ और चलती ट्राम से कूद पड़े। वह जगह पर पर प्रज्ञा में पड़ गये, जिससे दूसरी सड़क पर निकला जा सकता था। वह जानते थे कि यह बचने का अच्छा रास्ता है। जार्जामिन ज्यों-जैसे ट्राम की घंटी के बजने और लोगों के चिल्लाने की आवाज सुनी। रास्ता के भीतर उन्होंने क्षण भर के लिए खड़े होकर पीछे की तरफ नज़र डाली। ट्राम को रोक दिया गया था, खुफिया जैसी नीले रंग की गाड़ी थी और अब वह सड़क पर इधर-उधर देख रहा था। अगर कोई मुनसान थी। कहीं, किसी भी मकान में कोई भी नहीं रुका हुआ था। तब तक ट्राम जा चुकी थी।

व्लादीमिर इत्येच्च ने अहाता पार किया, हमरो माला फा निकल आये और घर चले गये। उनकी मकानदारिन बाँट गई थी। वह दूधे पांय रसोईघर में गये, कुछ चाय बनाई और गली उठाई क्योंकि वह बहुत ही भूखे थे।

“तो, साथियो! हम किस चीज के बारे में बात करेंगे?” गरम-गरम चाय पीते और रोटी को कुतरते हुए, अनामिका उन्धीच ने अपने में ही कहा।

इन्कोच ने खिड़की की तरफ देखा। कांच बर्फ़ न मनोहारी बनने और पत्तियों से ढंका हुआ था।

“कोई हमें आज़ाद नहीं करेगा, हमें अपनी आज़ादी के लिये आप लड़ना होगा,” यफ़े के नीले और सफ़ेद फूलों की चमकते हुए उद्घाटन बोधा ।

मई का महौला था। झुंजेन्कोये' ग्राम के आनपाम के काले खेतों पर हनुमानों की चादर बिछ गई थी। विरल बलों पर एक नई ही सुषमा उभर आई थी। कौचड़ भरे रास्ते मुख गये थे।

घन के बाहर बैठा ओम्कार उदाम आँखों से अपनी मकानदारिज की उंगलियों में छनछन करती मलाइयों को देख रहा था।

“क्यों बेटा, जो लोक नहीं है क्या ?” बुढ़िया ने पूछा।

ओस्कर ने जवाब नहीं दिया। कहता क्या? उसे नहीं मालूम था कि खनखी है क्या? ज्वाइमिंग इल्योच ने यह जानने के लिए कि उसे तकलीफ क्या है और कहाँ है, पूरे एक घंटे उससे पूछताछ की थी, मगर ओस्कर उन्हें कुछ नहीं बताना चाहा था। वह कमजोरी महसूस करता था, कम, और कोई शान नहीं थी। उसमें नाकन हो नहीं रही थी, और सो भी बर्डिंग साल की उम्र में ही। और वह तो नई मसौदा हो थी। मोना ने फिर व बीच ब्राह नयकद हो गया। कहता तो व अगद-अगद नदकी डाल ही रहता। बंदना के वह नय नय बाना तो रि उनके साथ रहे थे।

उन्होंने जो बातें भी समझ में नहीं आती थीं, श्रीस्कर ने कहा।

श्रीमान् कल्याणदासजी महाराज

आप : तुम्हें हम ठीक करके रहेंगे—यह नय

ज्यादीमिर ज्योंच अमाचारज अदमो छे । वह जस-सु-  
 रहते थे — निर्वासन में रहने ने वह जस-सु-  
 वह काफ़ी जाम करते थे, काफ़ी गिरफ्तो र छे । जस-सु-  
 का और जतरंज की इन अजीब परिस्थितियों ने हरे कर्म-  
 नमय निकालि लिया करते थे । जाम की वह संस्कार र जस-सु-  
 निक पुस्तकें पढ़कर सुनाया करते ।

कंधे पर अपना बस्ता लटकाये पलंग पर लेटा और सोने लगा।  
दुखान में भागना निकल गया। उनके लगे पैरों में दुखान का गंध  
गंधार उठा दिया।

श्रीमन्मन्त्र को उनके पिता, जो एक मित्रिज मन्त्र में उदा  
धर ने जागिरी के लिए ले गये थे, तो वह मन्त्र में उदा  
वड़ा रहा होगा। वे पीतलबर्त में नेत्रकी मारों पर मित्रिज एक बड़े  
इकान की छिड़की के नामने आकर लड़े हो गये थे। मित्रिज में  
बैठनी मन्त्रमन्त्र पर मन्त्र ब्रह्ममन्त्र में उदा मन्त्र मन्त्र मित्रिज  
हूआ था। अन्तरालों में मन्त्र ब्रह्ममन्त्र मन्त्र में मन्त्र मन्त्र  
मन्त्रियां और बहुमूल्य रत्नों के गुच्छे बड़े मन्त्र मन्त्र मन्त्र  
की बूंदों जैसे, तो कुछ श्रीमन्मन्त्रों जैसे मन्त्र मन्त्र मन्त्र  
दिन तुम भी इसी तरह की चीजें बनाओगे, मन्त्र मन्त्र मन्त्र  
रहा था। "मे तुम्हें मुनार का जागिरी बनवाने ले उदा मन्त्र मन्त्र  
बुझी के मारे लड़के का चेहरा फूल उठा। वह मन्त्रमन्त्र में मन्त्र  
को मन्त्रमन्त्र टोपी पहले और मन्त्रमन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र में  
मन्त्र ब्रह्ममन्त्र चीजों को बनाते देखने लगा।

जिस आँखार से ओल्फर का सबसे बड़ा भ्राता पैदा हुआ, वह थी इस्पात की एक छड़ जिस पर झूलिया गये जाते थे। मुत्तार का नाम था ताडफेर, और वह लड़कियों से बने लोग उसके लिए परमान्वत था कि जिसकी कोई बिल्ली नहीं थी। ओल्फर को उसको नाम से कभी नहीं बुलाया जाता था बल्कि

होगा "ओ किन्नी!" ही कहा जाता था।

अगले गार वसों में आम्बर अपने गार्निक के बच्चों को छिलाने और रोटी और वोद्का लाने जैसे काम ही करता रहा, मलवसा बीच-बीच में उसे सुनार के काम की कुछ प्रारंभिक बातें भी सिखा दी जाती थी। जब वह सोलह साल का हुआ, तो वह अपने गार्निक का घर छोड़कर चला आया और पुतीलोव कारखाने में काम करने लगा।

कारखाने में सुनार का शागिर्द खराबी बन गया। हर किसी की हिंइधिया खाने और प्रभाए माननधाना इवना पनना छोपना एक हड्डा-कट्टा मजदूर और बहादुर क्रांतिगारी बन गया। मजदूरों द्वारा बेनकाब किये गये एक खुफिया ने इस बात को स्वयं अनुभव दिया कि ओस्कर किन्ना शक्तिशाली है। खुफिया की मरम्मत करने की सजा के तौर पर ओस्कर को तीन वर्ष के लिए साइबेरिया निर्वासित कर दिया गया।

... वह बेंच पर से उठा और घर के भीतर चला गया और अपने सिर के नीचे हाथों को लगाकर बिस्तरे पर इस तरह पड़ गया कि लगता था कि ऊँचा रहा है या गहरे विचार में डूबा हुआ है।

गाँव में पहिला की चरमगट्ट और बच्चों के चिल्लाने की आवाज़ें सुनकर वह उठ बैठा। उसने खिड़की पर जाकर बाहर की नज़र देखा। सड़क के उस पार, जिर्यानीव परिवार के मकान के सामने एक धोड़ागाड़ी आकर खड़ी हो गई थी। उसमें शहरी शर्ट पहने दो महिलाएँ बैठी थीं। आगपाम नाटू लगाकर खड़े बच्चों में एक ल्योन्का भी था।

"अरे! यह तो व्लादीमिर इल्यीच की मंगेतर है! ओन्कार उठा और सामनेवाले मकान की तरफ लपका।

"आप नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना है न? नमस्ते!" उसने भूरी पोशाक पहने छरहरी युवती का अभिवादन किया।

युवती ने अपनी भूरी आँखों से उस पर गहरी नज़र डाली और मुसकरा दी।

"और आप वीमार ओस्कर हैं? मैं तो मगर आप को जग ही वीमार नहीं लगन। नमस्ते!" उसने आँकुर में हाथ धिपकाया। "मेरी माँ, येलिजावेता वसील्येव्ना से मिलिये, और व्लादीमिर इल्यीच हमसे मिलने के लिए यहाँ क्यों नहीं हैं? कहीं वीमार तो नहीं हैं?"

"वह शिकार खेलने गये हैं," ल्योन्का ने शरमाते हुए पैरों से कुछ धूल उड़ाते हुए बताया।

दूसरे लड़कों ने इस समाचार की पुष्टि की।

"व्लादीमिर इल्यीच रोज़ आपका डेतजार करते थे। वह तो चिंतित होने लगे थे। और आज ही उन्हें शिकार पर जाना था!" ओस्कर ने निस्स्वाहजनक समाचार की तल्छी को कम करने की कोशिश करते हुए कहा।

"उफ़! फिर हम क्या करें?" नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने मनाक में असहायता प्रकट करते हुए कहा, "क्या हम जागम चले जायें?"

"अरे नहीं," ल्योन्का ने विरोध करते हुए कहा, "वह शाम तक वापस आ जायेंगे।"

लड़कों ने महिलाओं के सामान को घर में लाने में ओन्कार की सहायता की। इसके बाद ओस्कर अपने कमरे में चला गया।

उसी शाम को ल्योन्का ने उसकी खिड़की पर दस्तक दी और कहा कि व्लादीमिर इल्यीच ने उसे निमंत्रित किया है। ओन्कार ने सावधानी से कपड़े बदले।

जिर्यानीव परिवार का घर उस दिन शोर और उल्लास में भरा हुआ था। प्रसन्नमन व्लादीमिर इल्यीच मंच पर नज़रिया और प्याले लगाने में नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना का साथ दिया था।

[illegible]

“हां, ये बड़ी जक्सिजालीं गोलियां हैं,” व्लादीमिर इत्पीन ने सहमति जताई।

[illegible]

श्री दुखी-बनती त्रिया इन भारी टोकरी को लाड़े बाग़ हज़ार  
 'मनामोहन' के पैरों पर रखी है। उसे खोज़ना पड़ा कि किसी

बार उन्हें रेल और छोड़े बदसने को चक्कर पड़ा होगा। अगर किसी  
ही बार सायद उन्हें कोई मददगार भी न मिले होगा। यों उन्हें जो  
साप ही डोना पड़ा होगा।

“यह आपकी ही गलती है,” ओल्सन ने जवाब में जवाब देते हुए  
 से उल्लाहना भरे स्वर में कहा। “मैंने ये चीजें वही सच माने थे  
 सन। हाँ, मैं इनका सपना अनवस्था देखा करता था

भोस्कर ने एक बार व्लादीमिर इन्पोच से कहा कि निम्न छोटे-से गांव में ज़रादी के लिए काम न हो सका था। उन्होंने दारों और व्यापारियों से मुनार को काफ़ी काम मिल गया था। इस बात को वह तो बड़े दिन में भूल गया था, पर रस्मिने ने उसे याद रहो थी।

“व्लादीमिर इत्योच ने आपकी बीमारी के काम के लिए दहशतनाक खत लिखा था कि हम तो आपके लिए जगह बनने लगे हैं तैयार थीं,” येलिजावेता बसील्गेन्ना ने हँसते हुए यह सब व्लादीमिर इत्योच ने सभी सबको तरफ घूँकर देखा था। उनके मुँह पर लाकर चुप रहने का इशारा किया।

अगली सुबह को ओस्कर ने अपने कमरे को इन चीजों से सजा दिया, जैसा उसने कभी नहीं किया था : ऊर्ध्व की दीवारें लकड़ी की भेल को साफ किया और उन पर साफ कपड़ा बिछाया और इसके बाद अपने खजाने को उस पर फैलाया।

वह जानता था कि उसे क्या करना है।

उसने अपनी जेब से एक पाँच कोशे का सिक्का निकाला और उस पर बने दोमुँहे उकाव को गौर से देखा - वह स्वयं साम्राज्य का राज्यचिह्न था। पुलिस की स्टेशनों पर हो जाने के कारण हुआ करता था। उकाव के पंजों में राज्यदंड या राज का संकेत को सुनार के हाथ में उसे पीड़ने के लिए उठो चले जा रहा था।



प्रोक्टर ने अपनी चपलता से जर्मनों के परिवारों में भय फैलाने की योजना बनाई थी।  
जर्मन कानून के अनुसार, अगर कोई व्यक्ति अपनी सेवा से हटने की इच्छा रखे तो उसे  
अधिकार प्राप्त होगा। प्रोक्टर ने इस बात को ध्यान में रखा कि जर्मन लोग अपने अधिकारों को  
रक्षित करने के लिए तैयार होंगे।

य श्रगुडिया श्रव मासी म वनिन मयनायक म रति ह्रीः ।  
समय के प्रभाव से उसका रंग स्याह हो गया है, मगर व श्रव न भी  
सुंदर है, क्योंकि उन्हें स्नेह के साथ चुन गया व बनाया है, जो  
काम करने के लिए व्यग्र थे। सचमुच, यह स्नेह ही भेद है  
मनमुच, य मिनता भी श्रगुडिया है।

तीन दिन से पानी लगातार बरस रहा था। छवारियों में फूल थोड़े हलन्धे लग रहे थे, पेड़ों पर से शाखें छोटे-छोटे टुकड़े-टुकड़े भेदा से छबरे भरे हुए थे। पक्षी खामोश थे। लगातार की बारिश से चढ़ी हुई नदी अब अहाते के सिरे से थपेड़े मार रही थी।

बुराब मौसम और चिंता ने काठ को बने इस छोटे-से मकान पर भी अपना छाप बना रखा था। अभी कुछ ही दिनों पहले तूफान की गरमी ने मकान की प्रकाश और प्रसन्नता से भर रखा था। उल्यातोव परिवार व्लादीमिर इल्योच को आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था।

...इस ही दिन पहले उनकी माँ ने यह सोचकर राहत की सांस ली थी कि समीवन का बका अन्न पीछे छूट गया है और उनके सभी बच्चे अब स्वतंत्र हैं। व्लादीमिर इल्योच अभी अभी मास्कोविया में नीचे का निर्वाणन पूरा करने वारस आये थे। पुलिस ने उन्हें न उनको देश के किसी भी आन्दोलनिक नगर में रहना वर्जित कर दिया था और इनका घर मास्कोव में रहने लगे थे, नाकि गतिशील पेंडुलम के व्यापक निकट रह सकें। कम से कम ही भाग में मास्कोव की सड़कियाँ, कार्रवारिया तक जानेवाले सुत्रों का प्रारम्भ बिना पानी के शीघ्र नगर ही बन गया। लेकिन यह आगमन-की पार्टी अगवहन की स्थापना की बनियादे अल रह थे

उल्यातोव ने अपने परिवार से वादा किया था कि वह मास्कोव में रहने साथ रहने आयेगा। लेकिन अभी उन्हें पीटरसबर्ग में लीनिन की निरपत्ताई की खबर मिली। वह घर आना चाहता था ज्यादा से ज़ेद से था

लेनिन की माँ के लिए यह रहा बड़ा आधान था। मरीया अलेक्सान्द्रोवना बीमार पड़ गई। उसी दिन मास्कोव में यह आधान बने इस मकान में इस कदर परेशानी आई कि माँ ने उसी दिन कुतिया फ्रीडका तक यह महसूस करती लगने ली कि यह घर गड़बड़ है। वह अपने कानों को उठाये सतर्कता से बाहर जाकर बाहर के पैरों में पड़ी, दुमीत्री इल्योच की तरफ देख रही थी।

मरीया अलेक्सान्द्रोवना को देखने के लिए डाक्टर आये थे, आन्ता, मरीया और दुमीत्री खाने के कमरे में बैठे और माँ के कमरे से आने की प्रतीक्षा कर रहे थे और व्लादीमिर इल्योच को छुड़ाने के तरीकों पर सोच-विचार कर रहे थे। दुमीत्री को कक्षा विज्ञान की एक किताब के पन्ने पलटते हुए उसमें अपनी माँ की बीमारी के बारे में कुछ हूँदने की कोशिश कर रहे थे। अपने झण्ड की गिरफ्तारी से उन सभी को बड़ा जबरदस्त धक्का लगा था। इसका मतलब था आंतिकारी अखबार ग्यापिन करने का शरी योजनाओं का अंत। लेकिन परिवार इस समय व्लादीमिर इल्योच की कोई मदद नहीं कर सकता था—मरीया और उनका भाई दुमीत्री—दोनों—अभी हाल ही में जेल से छूटकर आये थे। वह कि आन्ता और उनके पति मार्क तिमोफ़ेयेविच भी अभी पुलिस के निगरानी में ही थे।

बारिश की बूँदें खिड़कियों पर गिराए गए नहीं थी और काच पर निर्मल धाराओं का रूप लेकर नीचे दब गयी थी। गोलियों पतियाँ काच पर थपेड़े मार रही थीं, दयाही से एक मकान कुल्लुडानी हुई अपने चूड़ों को अपने गरम पंखों के नीचे रहने और बाग़िच के थमने तक ढहरने के लिए फुसला रहा थी।

डाक्टर लेवीत्स्की ने खाने के कमरे में प्रवेश किया, दोनों रुके जा गये।  
“उन्हें हुआ क्या है? उन्हें क्या देना चाहिए?” आन्ता ने चिंता के साथ पूछा।

“मचराने की कोई बात नहीं है। और सबसे अच्छी दवा  
नाशा हवा, धूँव दहनना प्राण रंग लाली से ही मचरे मृनना।”

“लेकिन माँ का दिल गुराब है। वह कितनी परेशानियों में गुजर रही है, मंगेया न रहा।

“गोरू जय रं पैसदू रं भी नो पणना अमर दिखाने लिहै।”  
इसोही बोले।

इसकी बात।  
 हासल न अपनी शर्तों को मीनते हुए इसीनी क हाथ में  
 किलाव पर नजर डाली।

“डाक्टर साहब,” उन्होंने कहा, “इसका जवाब इस किताब में मैं नहीं दे पाऊँगा। मैं तो सिवाय माँ के दिल का कुछ नहीं जानता।” उमर मदन मोहन निर्मिता विज्ञान के लिए रहस्य ही बने हुए है। खुशी की बड़ी माता इसके लिए हमेशा सबसे अच्छी जगह है। उनकी मेहनत आपसी माँ की उमर की पूजाजत दे दी है। मैं उन्हें देखने के लिए कल फिर आऊँगा। नमस्ते।”

दुश्मिनी डॉक्टर को दरवाजे तक छोड़ने लगे। लेवीत्स्की एक प्रेम प्रान्त में रहने लगे थे। जब दुश्मिनी ने पोटोम्स निर्वासित किया गया, तो कोई भी डॉक्टर एक ऐसे विद्रोही छात्र को अपने नीचे रखने का खतरा मोल लेने को तैयार नहीं था, जिसे प्राकृतिक गर्तिश्रमियों का सख्त विपक्षविशाल ने निन्दा दिया गया था। लेवीत्स्की ने न केवल उन्हें अपना सहकारी ही बना लिया था बल्कि वह उनका एक गतिमान ने अपने मित भी बन गये थे।

उन्होंने न सपनी माँ के कमरे की तरफ़ जो कदम बढ़ाये,  
 या उठाने लगे अगलाने में लपटें खोलने और जान बचाय जाना।  
 गिरी हो, माँ

कहते हैं कि मैंने आज ही अपना जीवन समस्त आनंद ही व्यस्त करने के लिए समर्पित कर दिया। "मैं आज पीटर्सबर्ग जा रही हूँ।"

“लेकिन तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है, इस तुम्हें नहीं जान  
देगी।”

“मैं यहाँ बैठी-बैठी तो कुछ होने के अवसर में नहीं रह सकती। शायद वहाँ जाकर मैं ज्वादीगिर के पास कुछ कर सकूँ। मैं जाकर पुलिस कार्यालय में अपील करूँगी।” ज्वादीगिर ने आग्रह से कहा, “दुमीवी, स्टेशन जाकर मेरे लिए पीटमैंगर का एक तीसरे दर्जे का टिकट तो ले आओ! सरम स्पष्ट पत्र बनना चाहिए वरना तो जन पहचाना मत भूलना। ऐसा पानी बरस रहा है।”

वे समझ गये कि उनमें धात करना और उन्हें रोकने की कोशिश करना बेकार रहेगा। इसलिए वे यह कोशिश करने लगे कि वह दूसरे दरजे में आने के लिए तैयार हो जायें।

हर्षावज्र नहीं। मरीचा यत्नमान्द्राक्षा ने कहा। उसे तब-तब पेंता बनाना है। जायद मुझे ज्वालाभिन् र किन् वहीन रत्ना पड़े। आन्ता, देखना, मेरी पोशाक तो ठीक है, न! मरीचा और मैं जाकर सामान रखती हैं।

इसीकी ने करमाती गन्नी प्रीदया की उज्ज्वल पकड़ी धार  
 धारण ही तरह चल दिये। आस्ता न खपती या ही खाले पागार  
 को अनमानी मे निहाला धार उन गर गर नया सफा गन्नी  
 टांकना शुरू कर दिया।

“मां की प्यारी जंगी पोशाक !” उसे दुनार से हाथों में पकड़े-पकड़े आन्ता ने अपने मन में कहा।

पकड़े-पकड़े आन्ता ने अपन मन में कहा।  
पोशाक सामाजिक मेल-मुलाकातों के लिए नहीं, बल्कि मरीया  
अलेक्सान्द्रोव्ना के पुलिस कार्यालय तथा नगरपालिका के विभिन्न  
कार्यालयों में जाने के लिए ही प्राण लेने पर बल देती है। अब  
भी उसका कोई बच्चा अपने नवतोलक विद्यालय के लाना मसीखन  
में पड़ना वह एक धोखाधड़ी, सपना और काल्पनिक मर्त्य शून्य कर  
देती। अब, पोशाक का लाना किसी तरह से वह जानना का नि

[illegible]

कितनी बार उन्होंने इन इन्जामिया शब्दों को सुना था और इसे सुनकर कितना दुःख हुआ था कि “उह हरे प्रिय, जि आरके सबसे बड़े लड़के को फाँसी दी गई थी।” लेकिन इसे सुनकर निराशा से इनको नहीं माननी थी। उन्होंने तब तक उम्मीदों से हर बार एक नया प्रार्थनापत्र लिखने के लिए फिर कलम उठा लिया था, जो हमेशा इन औपचारिक शब्दों से ही शुरू होता था : “प्रिय महोदय, सेवा में निवेदन है...” पुलिस कार्यालय की छानवीं में ऐसे कितने प्रार्थनापत्र थे! कितनी बार ऐसी ही एक और हदरहित शब्दों से यह शब्दों के समान शब्दों के समान ने न न कमान को अपनी जेब में घुमाकर रखा था!

खिड़की पर चाँद की बूंदें नज़र नहीं आती। इयोड़ी में  
जहाँ धूप लगे है। खिड़की के बाहर पर नीली चमक  
बढ़ते हुए है।

अचानक पंटी की टनटनाहट ने इस निराशाजनक खामोजी को भंग कर दिया और ऐसा लगने लगा, जैसे गरमी का तेज नुझान घर भन में होकर गुजर रहा है।

मा' मा' जगदीश्वर सा गये ।

“अपने घड़े से लिपटने के बिना  
“होना है नुः किलकुल फट गया है नः”

“मेरे बहन जी अच्छी तरह हैं। पूरी तरह आराम है और  
जोड़ा बड़ा है।” गीला कोट उतारकर माँ का आलिंगन करने लगा,  
जैसे-जैसे दृष्टीक बोने।

[illegible]

“ज्यादीमिन्, भैया, मैं सो तो रही हूँ कि मैं भी  
देख नहीं हूँ, वह नकल नहीं, जब तुम्हारे सामने है और  
भाई ने पूछा।

आन्ना, जाओ, मेरी पैंताक को बन्दी में लाना है मर  
हो। मैं उसे देखना भी नहीं चाहती," भां ने कहा।

“बड़ी खुशी के साथ,” समझा बोली। उन्होंने तुरन्त ही चापल अलमारी में हाथ दिया और दरवाजा से उल्टा हाथ दिया, मानो उन्हें यह डर लग रहा हो कि कहीं वह बाहर न निकल आये और उनकी खुशी में चरण न चढ़ाये। “आओ, मैं तुम्हें फिर प्यार कर लूँ,” उन्होंने उल्टा हाथ में अपनी बांहें डालते हुए वह बोली।

[illegible]

“जावाज !” व्यादीमिर इन्पोंच ने उससे निरुद्ध हो जाकर कहा। “कोई पुलिसवाला आवे, तो हमको सबकदम करेगा। वह सुनते ही फ़ौद्का मस्त चाल के घर में चल गई और ग्यारहों के पाम ताकत पर गई।

काठ का वह छोटा-सा घर एक बार फिर ज्वालन साधने से गुँज उठा।

गार्दोभिर हस्तोव न आर्तं मां रो आश्रित्वा य सोऽन्तर  
अपने पास सोफे पर बैठ लिखा ।

नकन। 'हि धूपदार शिरो से यह जगह शिखरी सुदूर खसी होगी ।'

"जरमाती दिनों में भी यह दुरी नहीं लगती," उल्लसित मा ने कहा, देखने नहा, दारिद्र्य जिनकी नाज़मी देनी है।"

"अच्छा, ज्वादीमिर, यह बताओ, तुम कैसे पकड़े गये थे और फिर तुमने किस तरह रिहाई हासिल की?" आन्ना बोलीं।

मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना समोवार के पास बैठ गई और चाय  
 खाने लगी ।

“जैसे ही मैं पीटर्सबर्ग पहुँचा, मैंने देखा कि मेरा पीछा किया जा रहा है।” अनार्दीमिर उन्नीच हँस। “जब मुझे पुनर्निर्वाणों ने शोध ही लिया, तो मुझे बस अपनी जेब खाली करने की बात ही सूझ गयी थी, मगर यह ग़रबान ही बेकार था। वो भागी-भगदम जनानों ने मेरी एक-एक बांह को जकड़ लिया और उन्हें पीछे की तरफ़ मोड़ दिया, जबकि नीमन यह देख रहा था कि मैं किसी चीज़ को निगल न जाऊँ। और मालूम है, मेरी जेबों में क्या था? अख़बार के लिए जमा किये गये दो हजार रूबल, प्लेखानोव\* के नाम एक लंबा ख़त, जिसमें इस बात की विस्तृत रूपरेखा थी कि अख़बार को कैसे मर्गठित किया जायेगा, गण्य पते और सबके ज़वद।”

"मुझे तो इसकी बात सोचकर ही कंपकंपी आ रही है,"  
भरीमा बोली।

जबकि वान यह है," जब उमली उठान हुआ, क्लादीमिर  
इस्योच ने कहा, "ये सभी बातें दूध, नीबू के रस और दूसरी खाते

\* संसदीय प्रयोग ( १९६६-७६७६ ) - इसी प्रयोगशील और विचारक, प्रगत नागरिकों

को चीजों से लिखी हुई थीं और गाँव के लोग जिना का नाम नहीं जानते थे।  
 ही कहानी के बीच में तबालन ने कहा कि मैंने सोचा था कि पुलिस को कार्रवाही पर गरम करने के लिए मैं कहूँ कि गाँव में कोई भी नहीं है।"

“फिर क्या हुआ ?” भरीया ने बेसुत्री : सत्य पृ. ११।

“इस दिन बाद मुझे जेलर के कार्यालय में बुलाया गया और वह चेतावनी दी गई कि मैं पीटर्सबर्ग तथा माइकल जेल में नहीं जा सकता और वह कि मैं किसी भी कारण से जेल में नहीं जा सकता। उन्होंने मेरे सारे कागज, रसीदें और पैसे जमाने के मे अपनी आगों पर विश्वास नहीं कर सका क्योंकि वे सभी पुराने कागज के जल्लू हैं। इसलिए मैंने सबसे वित्तपूर्वक प्रायश्चित्त के मुझे तुम लोगों से मिलने के लिए अनुरोध है।

तथापि पुलिस को इतना भरोसा नहीं था कि क्लासिफिकेशन को अकेले सफर करने दिया जाये। एक पुलिसवाला उन्नीस साल पोदोल्स्क तक आया और उसने उन्हें स्थानीय पुलिस के प्रमुख के सुपुर्द कर दिया।

यहां उन्हें बुद्धि की एक नई परीक्षा से गजरना पड़ा। पुलिस के प्रमुख ने व्लादीमिर इत्यीच का वंदेशिक पासपोर्ट छानने के लिए मांगा और उसको पल्ले पलटने के बाद उसने उसे यथानियत यामि मेज की दराज में रख लिया। "आपको विदेश जान ही ज़रूरत नहीं है," वह बोला, "इसलिए आपका पासपोर्ट में नया लेना, वह सुरक्षित रहेगा।"

व्लादीमिर इत्योच ने अपनी बात जारी रखी । म...  
 गुस्से में भर गया । उस बूढ़े सबकार ने वो...  
 योजनाओं को ही अपनी दरार में बंद कर दिया था । म...  
 वेहद नाराज हो गया था और मैंने कहा कि मैं आपकी...  
 नी कार्रवाई की आपके... म...

आधी चोर में बोला होऊंगा क्योंकि वृद्धा मूलने पर गया। उसने  
जो भी वे लोग हो सोना और अब उसने देगा कि मैं पलटवार जाने  
ही गया हूँ, मैं पर न शामद करन लगा कि मैं पानसार्ट बापरा न  
न और उसकी शिकायत न करे।”

अपनी कहानी से उस हिस्से पर पहुँचने-पहुँचने व्लादीमिर इत्योच  
अपने सिर को पीछे सीढ़ी पर डालकर खुशी के साथ हँसने लगे थे।

मरीया भी उनके साथ-साथ हँसने लगी।

“तो तुम्हें वैदेशिक पासपोर्ट मिल गया है,” उनकी माँ अपनी  
मिराशा की न प्रकट करने का प्रयास करते हुए बोलीं।

“हाँ, मुझे जर्मनी जाना होगा,” व्लादीमिर इत्योच उठे।  
घरों की आदत से उन्होंने दरवाजे का कुंडा लगाया, खिड़कियाँ  
कसकर धंद की ओर इची हुई आवाज में बोलते रहे, “हम एक  
बड़ा बड़ी चीज की योजना बना रहे हैं—हम एक अखबार  
निकालनेवाले हैं।”

वह अपनी संजोयी हुई योजनाओं के बारे में बड़े जोश के  
साथ बतलाते जाते, हर जगह मजदूर अधिकाधिक लगातार होते जा  
ने हे जिस योजना की जल्दबाजी है, यह है एक केंद्रीय अखबार, जो  
स्वतन्त्रता के लिए और जन के शिक्षण संबंध का पर-प्रदर्शन करे।  
जल्दबाजी है पर उसे अग्रिम-नयी अखबार की जो नानो मजदूरों  
आप रिश्तों का समझाते कि उनके आगे कोम-में कार्यभाग है, जो  
काम का संगठित कार्यक्रम तैयार करे। उन्होंने और उनके साथी  
कर्मियों ने माइक्रोफोन में निर्वाचन के समय उस तरह के अखबार  
की स्थापना की योजनाओं पर विचार-विमर्श किया था। उस में  
पुष्टि है उसने के कारण उसका प्रकाशन की कोटि सभावना नहीं है।  
जोकि यह नया किया गया कि उसे विदेश में प्रकाशित किया जाये।  
कि अखबार की प्रतियाँ को गुप्त रूप से इस पहुँचाया जायगा,  
जहाँ विश्वनीय लोग उसका मजदूरों में वितरण करेंगे

व्लादीमिर इत्योच गैरा-सोवियत पोटसेवो और मास्को  
में भी प्राप्त थे, भावी विवरण उन्नीस की स्थापना पर कि वे और  
विभिन्न साथियों में सफल भावना करने इस बात की व्यवस्था कर  
चाये थे कि वे अखबार के लिए सब भजने रहे।

‘अखबार का नाम क्या रहेगा?’ आन्ना ने पूछा।

“‘ईस्का’\*। याद है, ‘चिनगारी’ में पढ़ेंगे या नहीं?”

“हाँ, याद है,” मरीया ने जवाब दिया। ‘यह पुष्टि’  
हो दिमवरवादिवा” के प्रसिद्ध उत्तर की पर प्रतीति है।

अपने बच्चों की बातचीत को सुनते-सुनते मरीया अपना-आपना  
समझ गई कि यह उत्तरदायित्व कितना बड़ा है।

“किस्मत तुम्हारा साथ दे! तुम सफल हो!” उन्होंने धीरे-  
से कहा।

“हाँ, आन्ना! मैंने तुम्हारे लिए भी कुछ सोचा है,”  
व्लादीमिर इत्योच ने कहा। “तुम्हें मर पीछे-पीछे जर्मनी जाना  
होगा और संगठनात्मक काम में हाथ बंटाना होगा। नाइजदा जैसे  
ही निर्वासन से रिहा होंगी, वह हमारे काम में आ जायगी।

“तभी जाकर आन्ना लेखिका बन पायेंगी” मरीया  
अलेक्सान्द्रोवना बोलीं।

आन्ना हर्ष से पुलक उठी। वह हमेशा ने ही सार्थक्य के सपना  
अपनाने का सपना देखती आई थी। उन्होंने बच्चों के लिए कथावस्तु  
लिखी थीं और अंग्रेजी, जर्मन तथा इतालवी कितने-कितने का रूस में  
अनुवाद किया था। लेकिन यह कितना महत्वपूर्ण और चरम  
का काम था—वे लोग मजदूरों के लिए अखबार निकालने होंगे

\* ईस्का—कसी ने लिखा है।

\*\* अलेक्सान्द्र पुस्तक 1938-39, पृष्ठ 211

\*\*\* दिवाकरवादी—सुखी दिवाकरवादी का अर्थ है कि वह एक व्यक्ति का नाम है  
किसी या और दिवाकर, 1938, 3 शतक के अनुसार कि 1938



“काश कि मैं नमारा और निज्जी नौबर्गोंगद लकना हुआ और  
जायद मिश्रान भी होता हुआ बोल्गा नदी के रास्ते जा सकना होता  
और नादेज्दा के पास जा सकना।”

“उम्का अभाव अनुभव करते हो न?” मां ने सहानुभूतिपूर्ण  
आवाज़ में पूछा।

“हां, बहुत! हम लोग गहरी बार चलने लगे हैं। इसके  
आगे हम लोग इस बोलचाल के अभाव में नवद स्थिति में हैं  
मैं उन लोगों से मिलना चाहूंगा। हम हर कहीं ज्वालाएं भड़का  
सकते हैं। मजदूर मर्घों के लिए तैयार हो चुके हैं। हम में दिन-दिन  
और वाक्य डकड़ा होता जा रहा है। और ‘ईस्का’ ही वह  
चिनगारी होगी, जो इसमें आग लगा देगी।”

“अगर तुम पुलिस से इस यात्रा की आज्ञा मांगो, तो?”  
उनकी मां ने पूछा।

“तुम्हारे मर्यादा में क्या मैंने यह किया नहीं? मगर उन्होंने  
साफ़ इनकार कर दिया है।”

मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना विचारमग्न हो गई।

“बेटों, मैं तुम्हें तुम्हारा कमरा दिखा दूँ,” वह बोली।

नर्ममानी सीढ़ियों पर जाकर वह बाग़ दूसरी मंजिल पर पहुँचे।

“अरे! यह तो बिल्कुल सिम्बोस्का में मेरे कमरे जैसा है!”

आर्सेनिय इवोच ने अपना हाथ दाखल नीचे छत का छूँटें हुए  
आखर में रखा।

गर्द दीवार में सटा सोफ़े का फलंग था, जिस पर चारखान  
का कवच पड़ा हुआ था। दाईं तरफ़ एक चिड़की थी और एक  
दरवाजा था, जो छज्जे पर खुलता था। चिड़की के पास एक छोटी-  
सी मेज थी और उस पर हरे गन्धाना नेप था। अलमारी में  
उसकी प्रिय पुस्तकें सजी हुई थीं।

यहां तो पूरा आराम हो जायेगा।” व्लादीमिर इवोच ने

इहां। “और काम के लिए वह कितना बड़ा एक सिद्धांत है। मैंने  
कितने ही माथियों को यहां आने के लिए कितना रक़म दिया है  
इन्हीं तरह से बानचीन कर सकते हैं। उन्हें धन नहीं, बल्कि  
ही बहुत अपना है।”

व्लादीमिर इवोच ने दरवाजा खोला और बाहर निकल गया।  
अरिज बंद हो गई थी। बाग़ फूलों की गंध में भरपूर था। बाग़  
इन दिनों बाद मूरज को देख पक्षी पंखों में उड़ने लगा था।

“बेटों, मां, बाग़ में चलें। लेकिन अपना सेंद पालन को  
और बरसाती जूते पहनना भी मत भूलना, जिससे पैर न भीगें।  
तुम मुझसे हमेशा यही कहा करती थीं।”

मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना ने चमकती आंखों में आनंद के तीव्र  
तरफ़ देखा:

“बुनो, व्लादीमिर, मुझे एक तरीका मिला है जिससे तुम  
नादेज्दा के पास जा सकते हो और बोल्गा के किनारे मां को  
भी जला सकते हो।”

मां ने

हा-हा। आगिर अपनी दुर्बलता में तो मरना ही कभी जानगी  
ही है, मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना ने अपनी बात बारीक़ी और  
उनकी मुसकराती आंखों के इर्द-गिर्द झुर्रियों का एक छोटा-सा  
धिर आया।

“नादेज्दा से मिलना?” व्लादीमिर इवोच ने ठगती  
आवाज़ में पूछा। मगर तुम तो नादेज्दा को कभी नन्दन जानती हो।

लेकिन पुलिस तो तो वह तरह मानस है न। तुमने  
निर्वासन में ही जाती ही थी और वहां से लौटकर तुम अपनी  
पत्नी को साथ नहीं ला पाय थे।

पुलिस ने उनकी उजाड़न नहीं की। उसकी मर्जा में अभी  
छ. महीने बाकी हैं।

कि है। नगर मुखे तो तुम्हारे पत्नी में मन्त्रणा रखी  
ले। ना तो ऐशियन में मझे इसका अधिकार है। कोई कानून  
नहीं जो कानून कि ऐसा कर हो करता। मैं पीटमबर्ग जाऊँ  
इसकी इरखास्त दूँगी।”

“लेकिन तुम्हें तो वहाँ जाने के लिए किसी की अनुमति की  
जरूरत नहीं है।”

“लेकिन मैं अकेली कैसे जा सकती हूँ? मैं पैंसठ साल की  
हूँ। मैं अपने पिता की डीमाँगी हूँ। प्यराशो भन ४२ याना मजबूत  
है,” उन्होंने जल्दी से कहा। “और वह बेटे का कर्तव्य है कि वह  
अपनी पत्नी का अपना या ने तनिकार रखे—तुम्हारा व्लादीमिर।  
कन ही मैं पीटमबर्ग जाती हूँ।”

व्लादीमिर इल्योच अपनी माँ से चिपट गये।

तभी उनकी बहन आन्ना वहाँ आई।

“तो तुम्हें अपना कमरा कैसा लगा, व्लादीमिर? माँ से  
तो रहा ही नहीं जा रहा था कि तुम कब आकर उसे देखोगे।”

व्लादीमिर इल्योच ने कुछ नहीं कहा। वह मुन्नी भी नज़र  
आने से थोड़ा संकुचित थी।

आन्ना मरीया अलेक्सांद्रोवना ने अपनी बेंटी में कहा,  
“बेंटी, मैं पीटमबर्ग जा रही हूँ। इसलिए तुम्हें मेरी काली पोशाक  
पागिर निकालना ही पड़ेगी। इसीकी न वह दो कि स्टेशन जाकर  
टिकट खरीद लाये। और हा, इस बार मैं हमारे दरजे में ही जाऊँगी।”

अपनी मुन्नी डाक्टर लेवीत्स्की आये।

“आपकी माँ आज मझे बहुत अच्छी लगी,” उन्होंने इसीकी से कहा।

“आपका कहना चितना हीन था, डाक्टर साहब! खुशी ही  
आने अच्छी डवाई है। चलिए, आपकी अपने भाई से मुलाकात

करवा हूँ,” डाक्टर को बाग की तरफ न जाने देते इसीकी  
ने कहा।

डाक्टर लेवीत्स्की जानते थे कि जगदीश्वर मरीया अलेक्सांद्रोवना,  
और बड़े पड़े-लिखे आदमी हैं और उनका खयाल है कि इसीकी  
मेंद बाग में गंभीरता के साथ टहलने ज़िन्दा बड़े बर्तार काम  
नगावे भद्र पुरुष से होगी। हाथ में जोके का नमूना है, वह  
बदन के एक तीजवान को देखकर उनके अचरज की सीमा न लगे।

व्लादीमिर इल्योच दिलचस्पी के साथ उस शूटिंग में भाग लेता है।  
उनकी बहन मरीया गेंद को दोनों विकेटों के बीच से चित्तार सकती है  
या नहीं।

“जाबाब!” उन्होंने चिल्लाकर कहा।

उन्होंने बल्ले को दूसरे हाथ में लेकर डाक्टर लेवीत्स्की से  
मिलाया और उन्हें खेल में हिस्सा लेने के लिए प्रार्थना किया  
बोलने-बोलने व्लादीमिर इल्योच ने डाक्टर का हाथ पकड़ लिया और  
झली। लेवीत्स्की उम्र में उनसे साल-दो-मास छोटे थे। उनके मुख  
बेहरे पर घनी कत्यई दाढ़ी और रेजम जैसे बाल थे। उन्होंने थोड़ी  
मुग्ध। आगे प्रतिभापूर्ण थी और नगिन ही दुनिया की बहनें थी।  
कुल मिलाकर वह एक उदार और भले नवयुवक लगते थे।

इसीकी ने देखा कि उनके भाई और डाक्टर ने एक-दूसरे को  
तुरंत पसंद कर लिया है।

उस दिन रविवार था। व्लादीमिर इल्योच ने साथ ही कि नगर  
में सैर करने के लिए चलना चाहिए।

डाक्टर लेवीत्स्की अपने नये मित्र की माँइकी में जग भी  
संकोच का अनुभव नहीं कर रहे थे। उन्हें वह रविवार पसंद था  
जिसके हुए मरम्मत की अलग-अलग मरिजा हैं। जिसमें सभी  
सुसंस्कृत, खुशमिजाज और मिलनसार थे और उन्हें एक नया नाति  
वह सदा इस परिवार के मित्र बने रहना चाहते थे।

पन्द्रह नवें पर मजी में नाव चले-खन व्लादीमिर इत्यीच ने लवीत्स्की से कई बातों के बारे में प्रश्न किये, जैसे पोदोलस्क प्रदेश में वाद-भय की हाली, ऊनी पर कौन से और फौज में जबरन मर्जी किये जानेवाले लोग इनकी वही भाषा में डाक्टरों परीक्षण से क्यों अयोग्य घोषित किये जाते हैं।

“इसका कारण है हमारे पोदोलस्क की मशहूर नमदे की टोपियाँ,” डाक्टर लेवीत्स्की ने कहा।

व्लादीमिर इत्यीच ने अचरज से उनकी तरफ देखा।

“यह बात मेरी समझ में आई नहीं।”

“मैं आजकल पोदोलस्क प्रदेश की आवादी के शारीरिक विकास का अध्ययन कर रहा हूँ,” डाक्टर लेवीत्स्की ने अपनी बात जारी रखी। “और मैंने यह बात साबित कर दी है कि जनता का स्वास्थ्य पारे के धूँ के कारण लगातार बिगड़ रहा है। यहाँ का नमदा परगोंज का रोया न बनाया जाता है और कारखान इसको पैयार में पार का इस्तेमाल करते हैं। इनका मतलब है कि हर टोपा एक आदमी के स्वास्थ्य का सत्यानाश करती है। मैंने इस नृशून उत्पादन-अधाली का बिरोध किया है, मगर मालिकों को तो अपने अलावा और किसी से क्या! जब तक उनके मुनाफ़े बरकरार हैं, उन्हें अपने मुलाजिमों के स्वास्थ्य की क्या परवाह है?”

“आपका कहना सही है,” व्लादीमिर इत्यीच ने जवाब दिया।

“अब आगे क्या करने की राय देते हैं?”

“मैंने एक फ्रांसीसी पत्रिका में पढ़ा था कि वहाँ नमदे को पारे के बिना पैयार करने का एक नया तरीका निकाला गया है। रूस पार की जगह मॉन्टेन पोदाय का इस्तेमाल किया जाता है।”

“क्या हमारे मजदूर इस बात का मतलब है कि उन्हें बाकायदा अहर दिया जा रहा है?”

“मैंने इस बारे में सिर्फ मालिकों से ही नहीं, बल्कि छोटे

मजदूरों और मजदूरों से भी बात की है, मगर वे अपना राय नहीं छोड़ सकते। उनके पास मजी कमाने का और सारे इशिया रहि है।

“और आपने कितने मजदूरों से इस बारे में बात की है?”

“तीसियों में।”

“मेरे खयाल से रूस भर के मजदूरों को इसके बारे में पता चलना चाहिए — उसी तरह, जैसे पोदोलस्क के टोपा बनानेवाले मजदूरों को दोन के खनिकों की, या इवानोवो-वोइनेसेन्स्क के मिल मजदूरों की या लना की सोने की खानों के खनिकों की काम की अमानवीय परिस्थितियों के बारे में पता चलना चाहिए।”

“लेकिन यह किया कैसे जा सकता है?”

“उन्हें इसकी जानकारी अपने खुद के अखबार में मिलनी चाहिए और सिर्फ यही नहीं, उन्हें यह भी दिखाया जाना चाहिए कि मिल मालिकों के खिलाफ मर्गटिल डग में कैसे लड़ना चाहिए — उन्हें आजादी पाने का रास्ता दिखाया जाना चाहिए।”

लेवीत्स्की ने कड़वी मुसकानट व साथ पूछा, “मैंना पेना कौन सा अखबार होगा, जो इन सब बातों को छापे?”

“मे बतलाना है आपको कौनसा अखबार। उसका नाम है ‘इस्का’। क्या आप यहाँ के वास्तविकों की हालत के बारे में कुछ लिखेंगे? आप यह लेख द्मीत्री को दे दीजिये — वह जानते हैं कि उसे कहां पहुँचाया जाये।”

व्लादीमिर इत्यीच ने नाव को बहाव के साथ छोड़ दिया और उनकी आँखें पाछा के दूसरे किनारे पर घूमने लगी।

पानी के साथ-साथ ऊबरी की घनी गुलाबी जालियाँ या उनके पीछे एक बड़े बदमजनु के पेड़ के नीचे एक लुनी जगह थी, जिम्मे बावूने के फूल फिटके हुए थे। पड़ ही जानों की हनी नदी में सूरज की किरणें चमकमा रही थी।

“चारों ओर कितना सुहावना है! ताजी हवा का भहासागर

फिर भी इस अद्भुत जगह के रहनेवाले पारे के धुएँ से  
जब तक कि उनका मन नहीं रुकता, तब तक वे निरंतर चले जाते हैं।  
होते हैं। अन्त में उनका मन रुकता है। यह निश्चय है कि यहाँ  
किस्मत के मातृक आप कैसे बनें।

“आप ठीक कहते हैं। अगर ऐसा अद्भुत सचमुच में हो ...”

“वह होगा, निश्चित रूप से होगा, प्रिय डाक्टर साहब।”

पर लौटने पर व्लादीमिर इल्योच सतोप के साथ अपने हाथों  
को आपस में रगड़ते हुए कमरों में चहलकदमी करते रहे। फिर  
टहलना बंद करके उन्होंने दमीत्री से कहा :

“मुम्हारे डाक्टर बहुत ही दिलचस्प आदमी हैं। वह बहुत  
ही समझदार हैं। उन्हें चैन से मत बैठने देना—उनसे ‘ईस्का’ के  
बारे में कुछ बातें कहनी होंगी जिन्होंने उन्हें पढ़ने से निराश किया।  
वह बहुत ही बढ़िया आदमी हैं!”

रात को उन लोगों ने स्टेशन जाकर मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना  
की पीडर्सबर्ग की गाड़ी पर सवार करवाया।

“माँ का जाना अकारण ही रहेगा,” जाती हुई गाड़ी की  
दरवाजा खोलते हुए आन्ना बोली। “वे लोग कभी उझाड़न नहीं देंगे।”

लेकिन कम से कम उन्हें यह तो मनोरंजन होगा कि उन्होंने  
किस भयंकर कष्ट से कुछ कर लिया है। मरीया ने कहा :

उन्होंने अपना आनंद के पहले हम जितना कुछ कर सकते हैं  
हम कर लेना चाहिए, ताकि उनके लौटने के बाद हमारे पास  
किसी ने जगह नहीं खोज सके। व्लादीमिर इल्योच ने कहा :

उन्होंने अपने माँ से कोई भी चीज निकाल देने का कष्ट  
नहीं उठाया था जो पसंद नहीं थी। पर तब भी गुप्त भावना का दे  
सक। दमीत्री ने अभी-अभी आया विज्ञान-वर्गीय परिवार का जन मान

का शक लाकर दे दिया। यह भारी-भरकम परिवार था जिसका  
से व्लादीमिर इल्योच के प्रयोजन को सिद्ध कर सकते हैं। उन्होंने  
इसके पन्ने पलटे और स. तुगुनोव के लेख “विज्ञानवाद के विचारों  
के दृष्टिगत मनुष्य की मुक्त परीक्षा” पर आकर ठहर गए।

“ठीक है, इससे काम चल जायेगा,” वह बोले। यह आन्ना  
तकीरों के बीच में हसी सामाजिक-जनवादी पार्टी के पार्षदों का नाम  
तो लिख लेंगे और इस तरह उसे सीमांत के बाहर ले जाएंगे।

मरीया ने एक प्याले में दूध लिया, अपने कलम ने नए लिख  
सगाई और “मनुष्य की मुक्त परीक्षा” की लकीरों के बीच इस  
से लिखना शुरू कर दिया। वह प्रारंभिक कार्यक्रम की तैयारी  
में थी। जब वह थक गई, तो उनका भाई दमीत्री ने उन्हें रुक  
ले ली और नकल के काम में लग गये।

गतिचार को आन्ना के पति मार्क निमोर्फेव्सका मास्को में  
गए। व्लादीमिर इल्योच ने उन्हें अपनी गोलतापो के बारे में बताया।  
वेनों ने मारीया को एक ऐसी बात मन की स्फुरत आने में सहा  
दी, जो पार्टी के गुप्त कार्यों को दिखाने को तो निराश कर  
हो, मगर पुलिस की तेज आँखों में झूल जाए।

मार्क ने अपना यात्रा जब पूरा किया तब ही उनकी माँ  
ने उस तमरे में मूर्ख ही पहली जिन्हें या धुँसी थी।

यह मेज़ रखने में मददगी मेज़ की तरह पड़ती थी। इस प.  
सो गान स्नाय जलनेवाले थे और वह बार-बार विचारों के बीच  
ले मेज़ जैसी चलती। इस गोल मेज़ की तीन सहायकदार सजे  
होती। इसका ऊपरी हिस्सा बड़े बारीक तामा का था और  
उसमें बड़े छोटी-छोटी दरवाज़े लगे हुए थे। यहाँ से  
दिलहदार विस्तार बनाई जा सकती थी। शिवाजी की वह तीन  
चुन थी—उसे निकाल देने पर जीने का गुप्त यात्रा निरंतर  
आता।

“छोटी-छोटी दराजों में पुलिस बेहद दिलचस्पी लेगी। दिलहावदी के कारण डारा हिस्से की अमली गहराई का पता नहीं चल पायेगा। भई, बाहू! नमूना सचमुच आनंदार है!”  
 “आधीश्वर इमीन ने वृत्त होने का नहीं। “अब हमें बस, किसी मजदूर बहई की ही जरूरत है जो ऐसा हो कि उस पर हम पूरी तरह से विश्वास कर सकें।”

“मैं एक बिलकुल ऐसे ही आदमी को जानता हूँ। मैं उसका जिम्मा ले सकता हूँ,” मार्क सिमोफ्रेयेविच ने जवाब दिया।

इस निपुण बहई के नाम का वही हवाला नहीं मिलता, मगर इसकी जासूसी ने भवन के गल्ले खाने से पार्टी के निगम आदमी सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेजों का नक्काश किया था। नगर के सभी की सभी अर्थात् एक अमूल्य प्राप्ति की विजय तक अच्छी तरह छिपाकर रखना संभव बना दिया। कई घाट पैसा हुआ कि पुलिस ने इस मेज के हर हिस्से को करीब-तरीब उखाड़ ही डाला, उसकी दराजों को निकाल डाला, उसे उलटा और उसे सभी तरफ से ठोक-बजाकर देखा। लेकिन इस छोटी-सी मेज ने अपने राज को एक बार भी जाहिर नहीं किया। यही वजह है कि अब इस मेज को मास्को में लेनिन संग्रहालय में एक सम्मानित स्थान प्राप्त है।

लेनिन के अगले उन मार्क्सवादी के साथ पत्र व्यवहार की पुलिस द्वारा बारीकी से जांच-पड़ताल अवश्यमावी थी, जिन्हें रूस में ही रहना था। उसका मतलब था कि उन्हें इसके लिए किसी सांकेतिक भाषा निकालनी थी जिसकी सुझाव तो आसान था पर जो साथ हो पड़े तो था कि पुलिस के अनुभवों में संकेत-विशेषज्ञ भी उन्हें न पढ़ पायें। इसके लिए अलादीमिर इलीच ने गणितीय जैसी गणित-व्यवस्था और उभिया जैसी अन्त प्रणाली में काम करते हुए संकेत निकाले और उनको परीक्षा की। साथ ही इस बात को भी ध्यान में रखना

जहरी या कि गिरफ्तार हो जाने पर गांधियों के आन्ध्र और प्रफुल्लता को कैसे रखा की जाये।

“तुम जल्दी ही पूरे डाक्टर बन जाओगे,” अलादीमिर इलीच ने अपने भाई से कहा। “मुझे तुमसे कुछ राखरी परामर्श लेना है। अगर कोई जेल में पहुंच जाये, तो वह अपने जो हिस्से पर नजर और मला-त्तंग रख सकता है? जब मैं जेल में था तो मैं, निगाम और अपनी कोठरी के नकड़ी के फलों पर गारिज करने के मोको को कसो हाथ से नहीं जाने देता था। अगर यह अच्छा तरीका था, मगर यह काफी नहीं था। यदि ऐसा वैज्ञानिक कार्यक्रम होना चाहिए, जो आदमी को अपनी आर्थिक शक्ति और इच्छा शक्ति बनाये रखने में सहायता दे।”

इमीन ने अपने भाई की तरफ आश्चर्य से देखा। उस पूछा “तुम जेल की बात क्यों सोच रहे हो? तुम तो विदेश जा रहे हो, न?”

“सभी कुछ हो सकता है,” अलादीमिर इलीच ने जवाब दिया। “आखिर मैं हमेशा के लिए तो विदेश नहीं जा रहा हूँ। इस तरह की राय हमारे सभी साथियों को मिलनी चाहिए। हर विमो को इसके लिए तैयार होना चाहिए और जानना चाहिए कि जब मैं अपने नजर रख जा सकता हूँ।

आखिर तम्बोव प्रदेश से शेस्तेरनीन दंपति आये और उन्होंने के पीछे-पीछे पतेलेइमोन लेपेशोन्स्की भी साथ पहुंचे। वे कमिशनर थे और अलादीमिर इलीच के साथ निवासन में नाउवेरिग में रह चुके थे।

गान्धा नदी के तट पर स्थित मजड़ी का यह छोटा-सा घर फौजी सदर-मुकाम जैसा लगने लगा। जैसे ही नजरवान नाम गुपचर बातचीत करने के लिए खाने के कमरे में इकट्ठा हुए, फौजवा हाल के दरवाजे पर जाकर चौकीदारी करने लगते। लेकिन अब वह

जुगुप्सा कि वे नंगे हाथों में जोके से बल लाने लगें। ती नगर, जो वह मुह में डाली की तरह स्वाद लागे व गान्धों में और भर जायज नगरीय सबह ने समझ जब घर में रहनेवाले सभी लोग नदी में नहाने के लिए जाते, तो फ्रीदका किनारे परबेठी निना लगी प्राप्ति से उन्हें देखती रहती समय ज्यादा चिता उसे नतीजामित इत्योच की तरह से भी होती थी। अभी वह तेरने चले जा रहे थे कि तभी अचानक पानी में सायब हो गये। फ्रीदका उनकी तरफ अपनी गरदन ताने उठल खड़ी हुई। मगर व्लादीमिर इत्योच तो सायब हो चुके थे। निमित्त मात्र में ही फ्रीदका नदी में कूद पड़ा। इसी बीच व्लादीमिर इत्योच दम लेने के लिए सामनेवाले किनारे के पास पानी के ऊपर आ गये थे। वह मजे में हंसते हुए किनारे पर जा चढ़े।

"मैंने तुझे डरा दिया था, न? क्या तू यह समझी थी कि मैं डूब गया हूँ?" उसकी गीली गरदन को थपथपाते हुए उन्होंने कहा।

उस शाम को पुलिस का प्रमुख उनकी मकानदारिन के पास आया। वह जानता चाहता था कि उल्यानोव परिवार वाले क्या करनेवाले हैं, उनके यहां कौन-कौन आते है, कहीं वे लोग गुप्त बैठके या जार के खिलाफ कोई षड्यंत्र तो नहीं कर रहे हैं।

मकानदारिन ने उनकी गरम आश्चर्य में रखा। उसने पुलिस के प्रमुख से अपने साथ घर के बाहर आने को कहा। वहां बाड़ की इन्ग्री नगर से लोगों के आनन्दपूर्ण हसन और चिल्लाने की आवाजें आ रही थी। चक्की की तैलों की घटघट बुनाई से रंगी थी और समोवार से उठते नीले धुएँ का हल्का-सा लज्जा उन्ही की तरफ बल खाता आ रहा था।

तभी चुरीली आवाज में कोई गाने लगा।

"वह कौन है?" पुलिस के प्रमुख ने पूछा।

"उनका सबसे बड़ा बेटा अलेक्सांद्र इत्योच" मकानदारिन ने जवाब दिया।

"वही, जो साइबेरिया में निर्वासन में अनोखी नौकर आया है?"

"मेरे खयाल से इस बारे में आपको बेसी गतिवृत्त या अज्ञात है। मगर वही सबसे जोर में हंसता और खोले तमज्जा सीटी बजाता या गाता रहता है। वह यहां के लोगों के साथ गहरे मुह नदी में तैरने जाता है। प्रता नहीं, आपने उसकी गान में गान सुना है, मगर जो भी हो, वह सही नहीं है। जिनकी लोग अपना वक्त इस तरह नहीं काटते। ये सभी ईमानदार नोनवान हैं मकानदारिन ने गंभीरता के साथ अपनी बात पूरी की।

अचानक फ्रीदका का विशाल सिर बाड़ के ऊपर गिर आया पुलिसवाले की बरदी को देखते ही उसने अपना मुह फाड़ कर उनकी आखे खोपनाक तरीका से चमकने लगे। पादमाला हल्के से घर के भीतर घूम गया।

मरीया अलेक्सांद्रोव्ना तीन दिन बाद वापस आ।

सारा ही परिवार स्नेहन पर उठ मिले। मगर उस संध्या के बारे में किसी ने उनसे कुछ नहीं कहा, जो गहरे व डिमाग में था। उनकी यात्रा सफल हुई या नहीं? वह भी कुछ नहीं जानी। तथापि घर पहुंचने के साथ उन्होंने एक सरकारी-सा तमज्जा अपने बटुए से निकाला और उसे व्लादीमिर इत्योच के गान में दब हुआ बोलीं:

"लो, तुम्हारे लिए एक उपहार मार है।"

"इजाजत मिल गई?" व्लादीमिर इत्योच ने ससराने का कहा और अपनी गाँ को कसकर अपनी बातों में सीज लिया।

इस गान नहीं सकती, माँ, फिर मर जाऊँ। फिर फिर जाना-पहाना है।

सभी ने यह तय किया कि क्लादीमिर इल्यीच और नरैता माँ के उफ़ा खाना होने से पहले ही ग्राम का नाव से सैर करे। उन्होंने चेदमजन के पेड़ के नीचे ही नदी के किनारे बसवा दिया, गाने गाये और खेल मचा। मरीया अन्कमान्द्रोव्ना घर में गहरे पड़ के छूट पर कड़ा नाखाना रो माँ को मनाने लगती रही।

ग्राम के समय वे जगती पत्नी के गलबले लेकर बाजार और नरैताजा होकर वापस आ दिया। वे नदी के किनारे पर आ गया। पानी पर नीला कुत्ता छल रहा था। सुरंग खो गया। हवा ताज़ा लटे घास की गंध में गहक उठी और माना बाई इशारा पाने के साथ दिहो। रा मंगीत फट पड़ा। नीरव पानी में एक मछली ने छपावा मारा, एक मेढक टरटरा उठा और पास की झाड़ियों में एक बगवन् कटे बार चहलचढ़ घोंगे की तंगी पीछ पर सवर गहरा उन्हें रात के लिए चरागाह ले जाता छोड़ता था एक लाट घासी में जाकर आँखों में ओझल हो गया। एक बार फिर नीरवता का टिंग ही चरचराहट ने भर बिधा। पहले नारे निकल आये।

घर जाने की किसी का मन नहीं कर रहा था। सभी चारे के साथ छेर के पास बैठ गये। क्लादीमिर इल्यीच ने मीठी हवा की गहरी गाम तन और धानर्षा भरनी की गरमाटे का मन्ता लेने हुए मुखे पास के छेर पर अपनी कमर टिका दी। कल के अलग-अलग रास्तों पर चले जायेंगे। शेम्तेरनीन दपत्ति सम्बोध वापस चले जायेंगे, लेपेशीन्स्की स्कोव जा रहे थे। क्लादीमिर इल्यीच अपनी माँ और बहन आन्ना के साथ बोल्गा नदी की यात्रा पर जा रहे थे। डाक्टर लेवीत्स्की अब 'ईराना' के संवाददाता थे, जबकि मरीया और दुमीत्री उमरे भाया बितरक बन गये थे। बस घामोशों में बंटे-बंटे वे उस कठिन

गंठों के लिये सचदूरी को एकाग्र करला और मुक्त सडसिया में उन्हें निर्वासित करना चाहती है।



1. 1947-48 में राज. विद्यालय  
का स्थापना



विद्यालय (बंगाली) में यह मकान,  
जहाँ जेम्स के मिशन में 'ईसा'  
का पहला सहायक रह चुका था।

इस मकान पर 'ईसा' का पहला  
घर बना था।







भारत का पहला परमाणु परीक्षण  
 1974 में हुआ था।  
 इसका नाम 'स्मॉल फिश' रखा गया।



भारत 'स्मॉल फिश' परमाणु परीक्षण का पहला  
 परमाणु परीक्षण 1974 में किया था।





२११ २१ - २१२ २११ २१२ २१३ २१४  
 २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२०



२२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६  
 २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२



विजय की सेवा में  
 यह विजय की विजय के  
 नाम के नाम के नाम के



हर मुकाम लेनिन सचिवार पदों थे—  
 इस में क्या-क्या हो रहा है? दुनिया  
 की क्या खबर है? लेनिन लेनिन  
 ने अपने कमरे में। उन्हें पता नहीं  
 था कि वस्तु निवृत्त हो रहा  
 है



ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ  
ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ  
ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ



ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ  
ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ  
ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ



गान " गुन्धरपुर में बसंत  
 गुन्धर " १ बसंत गान, काली  
 गान संकेतों १० गान १०



का १ गान १० बसंत गान १०  
 गान १० गान १० गान १०  
 इस चीक से गैलाइट का वन स्मरण है।







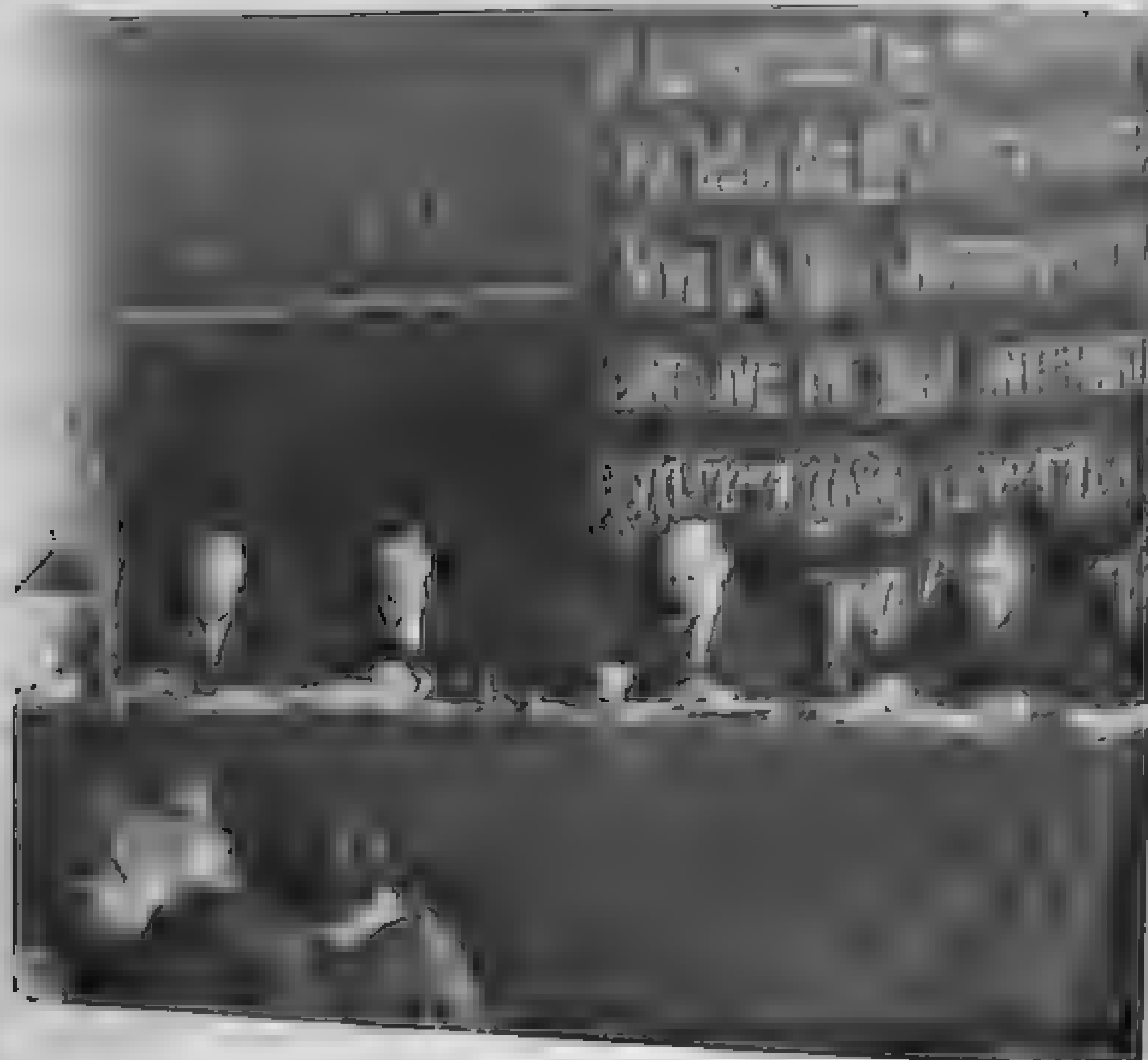
"रुस का विजयीकरण होगा।"  
गोविन्दों की भाठर्धी कांग्रेस में  
भाषण देते हुए लेनिन।



कमिन्स राव के विचारों में एक  
नया ही विचारमिश्रण बनाना था  
मगर वे विचारों की न रचना  
करके बस ही थे। शीघ्र ही  
उनके विचारों में एक ही धारा बहाई  
गई। वह बस चिल्ला बच्चों के  
साथ ही प्रता होना!



11. 1. 1900  
12. 1. 1900  
13. 1. 1900  
14. 1. 1900  
15. 1. 1900  
16. 1. 1900  
17. 1. 1900  
18. 1. 1900  
19. 1. 1900  
20. 1. 1900  
21. 1. 1900  
22. 1. 1900  
23. 1. 1900  
24. 1. 1900  
25. 1. 1900  
26. 1. 1900  
27. 1. 1900  
28. 1. 1900  
29. 1. 1900  
30. 1. 1900  
31. 1. 1900  
32. 1. 1900  
33. 1. 1900  
34. 1. 1900  
35. 1. 1900  
36. 1. 1900  
37. 1. 1900  
38. 1. 1900  
39. 1. 1900  
40. 1. 1900  
41. 1. 1900  
42. 1. 1900  
43. 1. 1900  
44. 1. 1900  
45. 1. 1900  
46. 1. 1900  
47. 1. 1900  
48. 1. 1900  
49. 1. 1900  
50. 1. 1900  
51. 1. 1900  
52. 1. 1900  
53. 1. 1900  
54. 1. 1900  
55. 1. 1900  
56. 1. 1900  
57. 1. 1900  
58. 1. 1900  
59. 1. 1900  
60. 1. 1900  
61. 1. 1900  
62. 1. 1900  
63. 1. 1900  
64. 1. 1900  
65. 1. 1900  
66. 1. 1900  
67. 1. 1900  
68. 1. 1900  
69. 1. 1900  
70. 1. 1900  
71. 1. 1900  
72. 1. 1900  
73. 1. 1900  
74. 1. 1900  
75. 1. 1900  
76. 1. 1900  
77. 1. 1900  
78. 1. 1900  
79. 1. 1900  
80. 1. 1900  
81. 1. 1900  
82. 1. 1900  
83. 1. 1900  
84. 1. 1900  
85. 1. 1900  
86. 1. 1900  
87. 1. 1900  
88. 1. 1900  
89. 1. 1900  
90. 1. 1900  
91. 1. 1900  
92. 1. 1900  
93. 1. 1900  
94. 1. 1900  
95. 1. 1900  
96. 1. 1900  
97. 1. 1900  
98. 1. 1900  
99. 1. 1900  
100. 1. 1900



11. 1. 1900  
12. 1. 1900  
13. 1. 1900  
14. 1. 1900  
15. 1. 1900  
16. 1. 1900  
17. 1. 1900  
18. 1. 1900  
19. 1. 1900  
20. 1. 1900  
21. 1. 1900  
22. 1. 1900  
23. 1. 1900  
24. 1. 1900  
25. 1. 1900  
26. 1. 1900  
27. 1. 1900  
28. 1. 1900  
29. 1. 1900  
30. 1. 1900  
31. 1. 1900  
32. 1. 1900  
33. 1. 1900  
34. 1. 1900  
35. 1. 1900  
36. 1. 1900  
37. 1. 1900  
38. 1. 1900  
39. 1. 1900  
40. 1. 1900  
41. 1. 1900  
42. 1. 1900  
43. 1. 1900  
44. 1. 1900  
45. 1. 1900  
46. 1. 1900  
47. 1. 1900  
48. 1. 1900  
49. 1. 1900  
50. 1. 1900  
51. 1. 1900  
52. 1. 1900  
53. 1. 1900  
54. 1. 1900  
55. 1. 1900  
56. 1. 1900  
57. 1. 1900  
58. 1. 1900  
59. 1. 1900  
60. 1. 1900  
61. 1. 1900  
62. 1. 1900  
63. 1. 1900  
64. 1. 1900  
65. 1. 1900  
66. 1. 1900  
67. 1. 1900  
68. 1. 1900  
69. 1. 1900  
70. 1. 1900  
71. 1. 1900  
72. 1. 1900  
73. 1. 1900  
74. 1. 1900  
75. 1. 1900  
76. 1. 1900  
77. 1. 1900  
78. 1. 1900  
79. 1. 1900  
80. 1. 1900  
81. 1. 1900  
82. 1. 1900  
83. 1. 1900  
84. 1. 1900  
85. 1. 1900  
86. 1. 1900  
87. 1. 1900  
88. 1. 1900  
89. 1. 1900  
90. 1. 1900  
91. 1. 1900  
92. 1. 1900  
93. 1. 1900  
94. 1. 1900  
95. 1. 1900  
96. 1. 1900  
97. 1. 1900  
98. 1. 1900  
99. 1. 1900  
100. 1. 1900





जुवा धरभुत पथ में धार में मोच रह थ, जिन पर कितने ही  
इमानदार रुसी नर-नारी अग्रसर हो रहे थे।

‘आओ, एक गाना गाय’ जामाशी का मोहने हुए ज़ादीमिर  
इत्थीच न कहा, “अपना मनपसंद गाना।”

नभी ओर ने उमड़-पुमड़कर दुमन वाइन-मे छावे  
मत्वाचारी की पछाड़िया, बुलियों के काने नादे

हलकी आवाज में उनके साथियों ने भी उनके साथ गाना  
शुरू कर दिया।

सिर पर नकन बाधकर हम्मे, दुमन की नरकग है  
हमस ता मनजान-भरिचित, भावी भाग्य इनाम है

नदी के उस पार से हवा अलाव के जलने और अंगारों पर  
अलुओं के भुनने की गंध लेकर आ रही थी। यह छोकरों द्वारा  
घाटी में जलाये अलाव की गंध थी। ज़रा ही देर में पास ही  
जलाये गये एक और अलाव की लपटें भी लपलपाने लगीं। वे आग  
की पृष्ठभूमि में छोकरों के चेहरों को देख सकते थे।

“इन आंगों को देखो,” ज़ादीमिर इत्थीच ने चित्तामन्न  
होते हुए कहा। “हम भी रुस भर में ज्वालाएं जला रहे हैं और  
ये ज्वालाएं ‘ईस्का’ द्वारा जलाई जायेंगी।”

“और कौन जाने,” लेपेशीन्की बोले, “शायद यही छोकरे  
एक दिन क्रांति की आग को भी जलाये!”

छोकरों ने आग में और सूखी लकड़िया डाल दीं और लपटें  
और भी ऊपर लपकने लगीं। उन्होंने अलाव के अंगारों को कुरेदा  
आग प्रनगिनन चिनगारिया आलाय में ता जने सोर इन निनगारी  
बहा जाकर एक-एक तारा बन गईं

घास में चिरचिराते टिट्टे और ऊपर भनभनाते मच्छर मच्छ  
मीसम की सूचना दे रहे थे।



शाम को उमने कहा कि सभी कुछ बेगान है। हमने कहा कि हमें पौ फटने से पहले ही निकल जाना होगा। हमने अपने पड़नेवाले गांवों से अंधेरे में ही गुजर जाये घाट निकलनेवाले अंधेरे द्वारा बर्फ में बनाये रास्ते नमक पर ही चलें। हमने अपने अपने मेहमान के चमड़े के बटन की तरफ, बाइबल की तरफ से

... पीर वाले के बाद कही गया था। जब वह वापस आया, तो  
उसके हाथ में मर्कट का बड़े-बड़े मुँह का फल था।

... पीर वाले ने मुँह के नीचे से दो ही पेटे थे। गृहस्थाभिनी ने  
उसी हुई मर्कट मर्कटों, गेहों और काली का नाला लेव पर लगा  
दिया। बन्दी-बन्दी बड़ नाला करने के बाद व्याधीमिर इन्धोच ने  
गृहस्थाभिनी से स्नान हाथ मिलाया और कहा:

... गृहस्थाभिनी! ...  
इसके लिए बहुत मुँहिया!

नम्र से सगुनार मर्कटों की आवाज आ रही थी। कोहरे  
ने ने उड़ित होना बाद खाड़ी की काली नाला पर अपनी गेहों  
हानि लगा।

नाव पर नहीं आये बल्कि के एक-एक छोर को पकड़े दोनों  
आदमी उसे आगे धकेल रहे थे। नाव का चपटा पेटा बर्फ की अनमान  
मलह में नम्र और टकरा रहा था। वे लोग बर्फ में जमे देगों  
पर ओकर खाने चल रहे थे। व्याधीमिर इन्धोच एक हाथ ने बल्की  
को पकड़े हुए थे और दूसरे में नाला लेव लिए हुए चल रहे थे।

वेगमान उन्हें एक गुप्त डेढ़-मैडे गन्ने में ले जा रहा था,  
जो शायद मित्रों उसे दो सालों का था। हर पचास-सौ कदम के  
बाद वह रुक जाता था और नाव की काँटेदार बल्की को अपने  
हाथ में धकेल देता था। वे आदमी बर्फ में धकेल रहे थे।  
... कि वह बर्फ में धकेल रहे थे।

... कि वह बर्फ में धकेल रहे थे।  
... कि वह बर्फ में धकेल रहे थे।

... कि वह बर्फ में धकेल रहे थे।  
... कि वह बर्फ में धकेल रहे थे।

बादलोंभरी पीर रही थी, ...  
... कि नाला था। जैसे दिन निकलेगा ही ...

हाथों के बीच बर्फ के बीच अब नाव ...  
... कि वह बर्फ में धकेल रहे थे।

“अब हमें उन आरु पर पहुँचना है,” वेगमान ने प्रान,  
ने नामने की नाला उगारा करने हुए कहा।

व्याधीमिर इन्धोच अब भी नाव पर दूकी आड़े ...  
... कि वह बर्फ में धकेल रहे थे।

“हम कितना चल चुके हैं,” उन्होंने पूछा।

“नम्र से ...  
... कि वह बर्फ में धकेल रहे थे।

... कि वह बर्फ में धकेल रहे थे।  
... कि वह बर्फ में धकेल रहे थे।

वे एक बड़े और सफाई हिमवाह के पास ...  
... कि वह बर्फ में धकेल रहे थे।

... कि वह बर्फ में धकेल रहे थे।  
... कि वह बर्फ में धकेल रहे थे।

ति मांगी हिमपात पानी में डूब गई और उना जून में भी पानी भर गया। बत्ती चरमरा उठी...

उदात्त और न साथ हिमपात अलग-अलग होने लगे। पैरों के नीचे की चक्रों भी फिसली जा रही थी।

व्लादीमिर इल्यीच ने अपने सहयात्री की तरफ नजर डाली। वेर्गमान का चेहरा स्याह था और आंखें फटी हुई थी। नाव के किनारे को पकड़े वह कमर तक पानी में छपछपा रहा था।

"नाव पर! जल्दी से नाव पर!"

बत्ती पर लटके-लटके दोनों ही नाव पर दोनों तरफ से झपटे। उनके बोझ से बत्ती झुक गई और चरमरा उठी। उन्होंने डांड के कंडों को जकड़ा और अपने को किनारों पर से उछालकर दोनों एक साथ ही नाव के अंदर आ पहुंचे।

व्लादीमिर इल्यीच को अचानक ज़ोरों की कंपकंपी ने जकड़ लिया। दांतों को कटकटाने को तो वह न रोक पाये, पर उनकी हंसी फूट पड़ी और वह बोले, "हां, भई, पानी तो बेशक ठंडा है..."

वेर्गमान नमदे के एक बड़े बंडल को खोल रहा था। कांपते हाथों से उसने उसमें से व्लादीमिर इल्यीच ने चूट निकाले वे उस नरम गरम थे, मानो अभी-अभी अगीटी पर से उतारे गये हों। जूनो के भीतर एक लोड़ा जमी भोजे थे जिन्हे मछुए की पत्नी ने उनमें सहजकन रख दिया था। मछुए ने अपने सहयात्री को अपनी तरफ कृतज्ञता के साथ देखते पाये।

व्लादीमिर इल्यीच ने बुटों से भोजे निकाले और वेर्गमान से पूछा कि उनके पैर भीगे तो नहीं। उसने जवाब दिया कि नहीं भोजे में वह विरगमच का जकड़न होगा पड़ने लगा था, जिसमें वह भी डूबे गए थे। व्लादीमिर इल्यीच ने अपने भोजे और बूट

बदले और बदल को गरमाने के लिए अलग-अलग अलग निकले लगे।

इसी बीच वेर्गमान ने नमदे के बंडल में से एक बंडल निकाल लिया था। उससे उसकी डांड को हाथिलाने के साथ निकाला। वह गरमानरम काफ़ी की गंध से महक उठी।

"भई बाहू! क्या बात है!" व्लादीमिर इल्यीच ने गरम काफ़ी की चमकीली नज़रें लगाई।

एक-एक प्याला काफ़ी पीने के बाद वे जूनो के पेटों के चक्रों के अगले छोर पर पहुंच गये और नाव को अपने ऊपर से खींचकर ले जाने के लिए उससे निकल आये।

अब वे नागू टापू ने आघा किलोमीटर ही रह गए थे। वहां से हिमतोड़क ने पानी में खुला रास्ता बना रखा था। वहां उनके आबो से स्टाकहोम जानेवाले स्टीमर का इंतज़ार करना था।

यात्रा की यह आखिरी मंज़िल ही सबसे विकट थी। आखिर वह पानी की इस पतली पट्टी पर पहुंच गये। एक और महाप्रयास करके वे नाव में चढ़ गये और निजक डेड स्टीमर का इंतज़ार करने लगे।

वेर्गमान ने आड़ी बत्ती और दूसरी चमकियों को उगाया। नाव अब उनकी ज़रूरत नहीं थी। अपनी नाव वह वहीं चालें पर रोककर मछुए के पास छोड़कर स्टीमर पर बैठकर घर लौट आया।

कोहरा बिखर गया। बर्फ़ीला मैदान सब अवाक्यता बना, हरित-नील दिखने लगा था। दिन निकल रहा था।

नाव में बैठे-बैठे दोनों स्टीमर का आगमन का पता प्रसार देखने के लिए उत्तर-पूर्व की ओर जाग गये हुए थे।

सबसे दूरवर्ती टापू के आगे जिनके पूरे नाव पर बत्ती नजर आया। आ गया! पानी की पतली पट्टी ने नाव को वहां तक

ही जा रहा था। दोना जार्ज अपने गलूबदों को हिलाने लगा,  
स्टीमरवालों ने उन्हें देख लिया।

स्टीमर से उनके लिए एक नाव उतारी गई, जिसमें एक जहाजी  
बंदा हुआ था।

ब्लादीमिर इल्फ़ीच ने वेर्गमान से हाथ मिलाया, फिर ऊपर  
गए गये लगे लिया।

"अलविदा! आपकी यात्रा सफल हो!" वेर्गमान ने आहिस्ता  
से कहा।

११०

न० खोज

पौछा

मेरी याद के अनुसार यह घटना १९१७ की है—जब ३ मरीन  
की। उस समय मैं बख़्तरबंद पलटन में शामिल था।

एक रात को मैं अपनी कार लेकर नावोचिम्बो ग्राम में गया।  
वहाँ हमारे सैनिक प्रतिनिधियों की बैठक हो रही थी, मैंने कार  
का इंजन बंद किया और इंतज़ार करने लगा, क्योंकि मुझे कुछ  
प्रतिनिधियों को वारकों को वापस पकड़ाना था।

बैठक ख़त्म हो गई। मेरी कार पर मैंने अपना सामान रखा  
बस, वे बैठे और हम चल देंगे।

तभी हमारी पलटन-समिति के प्रधान उपस्थित हुए और पास  
आये और कहने लगे:

"मेरे तुम्हें एक पार्टी-आदेश दे रहा है।

"कैसा पार्टी-आदेश?" मैंने पूछा।

"बताता हूँ। अभी बारह बजे हैं। १० मिनट।

"ठीक है, बारह ही बजे हैं। तो फिर?"

"तो फिर यह—अभी दस मिनट के भीतर मैं एक साथी  
को लेकर तुम्हारे पास आऊंगा। वह साथी जहाँ रहे वहीं जायेगा  
जाना है। समझे?"

"समझा," मैंने जवाब दिया। और उन साथी को जान  
रहा है?"

यह सुनते ही हमारे प्रधान बहुत नागर्ज हो गये और वे  
आवाज़ में बोले

११

१११





यनी नक वा हम उसमें बहुत आगे नहीं निकल पाये थे ...  
 व यही भी वे पीछे ही आगे नज ना नहीं चला सकते आगे ? ऊपर  
 तोपियाँ कीजिये

मैं कार को पहले ही जितना तेज हो सकता था, चला रहा था।  
 मैं सिर घुमाकर पीछे देखने की जुरत नहीं कर सकता था, मगर  
 आनी सावधानी से बहुत बूझने में यह बेशक जानना था कि वे  
 जीन्सों की कोशिश रण भी हमें पकड़ नहीं सकते - नहीं पकड़ सकते।

हम लीगोव्का के पास पहुँच चुके थे। अगली सड़क पर मुड़ते  
 समय मैंने देखा कि सामने ही एक बड़ा गढ़ा है। गढ़े के चारों तरफ  
 एक जर्जर जंगला था और जंगले पर आगही के लिए एक लाल  
 सालटेन जल रही थी।

अचानक मेरे दिमाग में एक विचार आया। मैंने कार को  
 रोका, बूदकर बाहर आया, लालटेन बुझाई और ठोकर मारकर  
 जंगले को गिरा दिया। इसके बाद मैं लपककर कार में बैठ गया  
 और उसे होशियारी के साथ गढ़े के धराधर से निकालकर ले गया।  
 लेकिन हा अब मैं कार को बहुत तेज नहीं चला रहा था। हम  
 भटक रहे। हमें डोंग पर पहुँचे ही थे कि पूरा जंगल सुनाई दिया। जो  
 यही हुआ! हमारा पीछा करनेवाले गढ़े में जा गिरे थे - तो भी  
 पूरी चाल से!

बेशक खूब शोर मचा - चीजें, पुलिस की सौटियाँ - सभी कुछ!  
 जैसे क्रयामत ही आ गई हो!

मगर बुद्धिजीवी नीर पर, हमारा उस शोर से नूनने का कोई  
 उदास नहीं था और हम पूरी रफ्तार से साथ लीगोव्का की तरफ  
 हो जाते रहे। आखिर जब हम लीगोव्का पहुँच गये, तो मैंने एक  
 बार फिर मुख्य जनित की तरफ देखने की हिम्मत की। मैंने निर  
 चमका और देखा कि वह हम रहे हैं। मैंने मचमच की भी हमने  
 ही हा और मैं भी उनके साथ मिलकर जाकर हमें पड़ा।

उस तरह हम हमने हुए अपनी मजिल पर पहुँच गये और  
 किन्तु मैं तो नम्र पर।

(“मार्था इवोनोव” नामक कहानी में)

विद्रोह के दिन - २४ अक्टूबर, १९१७ का ललित मुवह  
 से ही बहुत बेचैन थे। वह जानते थे कि जिनकी ज़िन्दगी फल  
 की गई है और उन्हें कहीं-कहीं लगाया जानेवाला है लेकिन फिर  
 भी उनसे निश्चित बैठकर इस बात की प्रतीक्षा करते नहीं बन।  
 रहा था: “क्या हमारे साथी निश्चयात्मक ढंग से काम कर रहे हैं?”  
 वह लगातार यह जानते रहता चाहते थे कि हर बात किस ढंग  
 रही है।

मुवह ही वह भारीतरा फोफानोवा को कई बार बीबीग टाका  
 पार्टी समिति के दफ्तर भेज चुके थे। उन्होंने उनसे कहा था कि वह  
 अपनी आंखें खुली रखें - वह देखती जायें कि सड़कों पर क्या हो रहा  
 है और मुगकिन ही, तो यह भी जानने की कोशिश करें कि घटनाओं  
 का रुख क्या है।

लेकिन वह इन्हें बताती क्या? मंगलवार हमेशा ११ नवम्बर  
 दिन होता है। दफ्तरों और कारखानों में काम हो रहा था। रंगने  
 और सिनेमा खुले हुए थे। अलबत्ता सड़कों पर हमेशा ११ नवम्बर  
 शायद ट्राभों की तादाद कम थी और बरदी पहने लोग ज्यादा थे।

दिन में यह पता चला कि निकोलायेव्स्की पुल को जला दिया  
 गया है। फोफानोवा वसील्येव्स्की डोंग पर रात भर रुकी थी और  
 बीबीगें हलका पहुँचने के लिए उन्हें काफी बख्तर सादकर, दनादनी  
 पुल को पार करके आना पड़ा था, क्योंकि बाकी सभी रास्ते बंद थे।

मांजी अपनी छोटी-छोटी नावों से राहगीरों को नशा व आनन्द  
 ले जा रहे थे।

व्लादीमिर इत्योच अपने हाथों को पीछे बांधे हाल में  
इतना डर रहे थे। उन्होंने अपने नक्ली खानों को उन  
दिखा था, जो इनके दृष्टिकोण से अगले थे।

मगर में क्या हो रहा है? सब कुछ पंगे चला रहा है?   
मरानजान्ग के घर में घूमने की उन्हात पृष्ठा। मगर मार्गरीता  
फोफानोवा उन्हें जोरें पाने जान नहीं बना पाउ। उन्होंने उस सन्ता  
पर हुक्मियायः आर्द्धमियों को ही देखा था लेकिन यह उन्हें कोई  
नहीं बता पाया कि नेवा के पुल क्यों सठा दिये गये हैं।

"जी, मगर अपना कोट मत उत्तारिये," व्लादीमिर इत्योच  
ने कहा, "कृपया यह पुरजा हलका समिति में पहुंचा दीजिये।"

यह केंद्रीय समिति के नाम पत्र था।

बोबोर्न हलका समिति के दफ्तर में फोफानोवा ने पत्र जिम्मेदार  
साथियों के हवाले कर दिया। उन्होंने प्रत्यक्षतः स्मील्नी टेलीफोन  
किया होगा, क्योंकि उन्होंने फोफानोवा से कहा कि वह जाकर  
लेनिन को यह बतये कि केंद्रीय समिति ने लेनिन को घर से निकलने  
की आज्ञा नहीं दी है।

"तो वे लोग मुझे बाहर नहीं निकलने देंगे?" व्लादीमिर  
इत्योच ने मार्गरीता फोफानोवा के वापस आने पर कहा। "उन्हें  
मर्ग सुरक्षा की चिन्ता है। यही ख़ुब। मगर में इस ज्ञान से सहमत  
नहीं हो सकता, उन्हें अपना विचार बदलना होगा।"

लेनिन ने जल्दी-जल्दी एक पुरजा और लिखा, वह जाहिरा  
तार पर बहुत मजबूत रहा होगा, क्योंकि जब मार्गरीता ने उसे हलका  
समिति के सचिव के सुपुर्द किया तो नादेज्दा बोन्सनाल्कीनोवना उस  
बख्श ने अभयता दृष्ट आई, जिसमें समिति की डेज हो रही थी।

क्या व्लादीमिर इत्योच बहुत नाराज हैं?" उन्होंने पूछा।  
"बेशक।"

"फिर भी आपको उन्हें जाकर यही संदेश देना होगा कि अभी

वह बाहर नहीं निकल सकते थे। उन्हें अगले मदद की प्रतीक्षा करनी  
पड़ेगी।"

मार्गरीता फोफानोवा ने घबराकर लेनिन को मजबूत से लिखा।  
वह देख सकती थी कि लेनिन फोनन क्या हो रहे थे।

आपको उनके पास फिर जाना पड़ेगा। उन्होंने अनुरोध  
किया, "अब और इंतजार नहीं किया जा सकता - लेंगे तो दिया  
धरा सभी दरवाद हो सकेगा।"

"ठीक है, मैं जल्दी जाऊंगी," मार्गरीता ने अपनी रजामर्द  
जताई, "मगर, एक शर्त है - पहले देखिये और खाना खाइये। मैंने  
कितना अच्छा खाना पकाया है आपके लिए और आप इसे बिना  
हाथ भी नहीं लगाया!"

व्लादीमिर इत्योच मुसकरा दिये।

"चलिये, मैं खाना खा लूंगा, लेकिन आपको समिति में  
जाकर और लगाना होगा। मैं केंद्रीय समिति की एक पुरजा को  
लिख रहा हूँ।"

वह अपने कमरे में फिर चले गये और मार्गरीता खाना बनाने  
करने के लिए रसोई में घुस गईं।

"साधियो!" व्लादीमिर इत्योच ने जल्दी-जल्दी लिखा,  
"मैं ये पंक्तियां चौबीसवीं तारीख की शाम को लिख रहा हूँ।  
परिस्थिति अत्यंत विषम है। वस्तुतः अब यह पूर्णतः स्पष्ट है कि  
विद्रोह में तनिक भी विलंब करना सांघातिक होगा।"

उन्होंने कागज को मोड़ा और उसे रसोईपर मल्ले गये।

"लीजिये, यह रहा। जल्दी-से-जल्दी लौटकर या जाइये। अगर  
आप ग्यारह बजे तक वापस नहीं आइं तो मजबूत तौर पर, मैं  
वह करने को अपने आपको आजाद समझूंगा।"

फोफानोवा रजामर्द हो गई और तारीख पर वह वापस नहीं  
आई। सभी दरवाजों पर आइनों राहिया न दन्तक है। लेनिन उन्हें

सुनकर बहुत नाराज हुआ। उन्होंने राहिया को अपने साथ आने से मना कर दिया कि वह निर्मात्मीन किया और अपने वह पूछना शुरू किया कि शहर में क्या हो रहा है।

लेकिन राहिया भी क्या बता सकते थे? वह कोई सैनिक-कर्मियों की निर्मात्मीन र मध्य तो था नहीं। मार्ग जानों की जानकारी सिर्फ मार्ग के मध्यमालय - मोन्नी - म मार्ग करनेवालों को ही थी।

राहिया ने मार्ग मोन्नी र दा प्रवेशपत्र र। लेकिन मध्यमालय यह था कि वहाँ पहुँचा कैसे जाये? हमें इतनी रात में चलती नहीं थी और पैदल जाने के लिए जगह बहुत दूर थी - कम से कम दस दिनों की।

कोई बात नहीं, किसी-न-किसी तरह हम पहुँच ही जायेंगे,"

व्लादीमिर इत्योच ने कहा। उन्होंने फाफामोवा के नाम एक पुराना मित्र और एक वदमल जग लेनिन र दिग वग वदले बिना बाहर निकलना मनमाना था। उन्होंने उन्होंने सफली वान नगाये आगों पर चरमा चढ़ाया, छोड़ी पर इस तरह रुमाल बांध लिया, मानो शान में हों और फिर पर एक पुरानी मुन्नी-मुन्नी टोपी पहन ली।

"चलो, बदल गया भेस! अब चलें यहाँ से," उन्होंने कहा, "बत्ती बुझा दीजिये।"

राहिया ने बत्ती बुझा कर दिया, वे मोन्नी पर से उतरकर नीचे आ गये।

वदमल नृतमान थी। आखिरी ट्राम दिगों की तरफ जा रही थी। व्लादीमिर इत्योच उनके और उनके पासशन पर जा चढ़। उन्होंने के पीछे-पीछे राहिया भी उस पर आ सवार हुए।

मार्ग में उनके आवाज और कांड समाप्ति नहीं था। व्लादीमिर इत्योच राहिया के सामने बैठ गये और उनसे पूछने लगे कि ट्राम फिर जा रही है। वह बत्ती से खिड़की के बाहर अंधेरे में आगे बढ़ाये हुई थी।

"चुप रहिये!" राहिया ने धुमकता आवाज में कहा "एसा न हो कि वह कहीं आपको बोलते चुन चुकी है। आप आपका आवाज से आपको पहचान ले।"

लेकिन व्लादीमिर इत्योच चुप नहीं हुए।

"डिपो जा रही है, न?" उन्होंने उनसे फिर पूछा उनके प्रश्नों से नाराजगी रान हुए वह दृष्टि।

हाँ।

"किसलिए?"

"तुम्हें इससे क्या? तुम यह सब जानना चाहते हो?"

"एक मजदूर।"

उसने उनकी तरफ एक नजर डाली और बोली:

"बड़े आये मजदूर बननेवाले! 'कहाँ' 'किसलिए'।" वह नकल करते हुए बोली। "अगर कोई समझ ही नहीं, तो क्या करे? हम जा रहे हैं पूंजीपतियों से लड़ने के लिए और निर्मात्मीन आया समझ में!"

व्लादीमिर इत्योच को उसका जवाब बहुत पसंद आया।

वे लोग आखिरी स्टॉप पर ट्राम से उतर गये और निजेंस सड़क पर पैदल ही चलने लगे। सभी भक्तियों के इन्काउट पर वे सड़क पर कोई नहीं आ-जा रहा था। जगता था कि अब वे ज्वल के बाहर हैं और बिना किसी परधानी के मोन्नी पहुँच जायेंगे। तभी मोड़ पर अचानक दो धुड़सवार नजर आये। वे नरम आग निकल गये, मगर फिर ठहर गये और आग में हने लगे। वे तोपखाना स्कूल के अफसर छात्र थे।

"आप सीधे आगे निकल जाइये," राहिया ने व्लादीमिर इत्योच से धीरे-से कहा, "मैं इन लोगों का पता लगाऊँगा।"

उसी बीच में घुड़सवार मुड़ चुके थे और राहिया की तरफ जा रहे थे।

“पास दिखाओ!” उन्होंने कहा।

“कैसा पास?” राहिया ने शराबियों जैसी आवाज में पूछा। और उसी बीच स्लादीमिर इल्थीच उनसे लगातार दूर होते जा रहे थे।

“पास दिखाओ, वरना...” एक घुड़सवार ने यह कहते हुए अपना चाबुक उठाया।

“हां-हां, मार! तूने अपने को समझ क्या रखा है!” राहिया ने झूमते हुए चिल्लाकर कहा। उनका एक हाथ अपनी जेब में चला गया था और उन्होंने अपने पिस्तौल को कतकर पकड़ लिया था। फिर उन्होंने इसी तरह झूमते हुए बीच की तरफ एक कदम बढ़ाया। चौड़ा बिदककर पिछले पैरों पर खड़ा हो गया।

“अरे, छोड़ो भी—शराबी के क्या मुंह लगना!” दूसरे घुड़सवार ने इसी हुई आवाज में कहा।

“भाड़ में जाये यह! चलो, चलें।”

घुड़सवार ने अपना चाबुक पेट में सटकाया और दोनों नीलदनी प्रोमैन्स की तरफ सरपट चले गये।

आखिर रास्ता तय हुआ। स्मोल्नी की लंबी-चौड़ी इमारत सामने में नजर आने लगी। मनुष्यों की मर्दानी विद्यालय की हर गिरफ्तारी रोडों से जगमगा रही थी। पेड़ों के नीचे बद्धरखंद गाड़ियां लगी हुई थीं। अचानक एक गाड़ी रुक गई। उसका मालिक था कि मन्थ्यालय में काम का एक कारनामा।

मन्थ्यालय और पत्र-पत्रिकाओं की इमारतें प्रचिन नगी हाथम है प्रचिनियों की भीड़ लगी हुई थी। वे इस न होने-हाने में इसमें काम करने के लिए आए हुए थे। उन्हें पता चला कि मोचिरी ने उन्होंने प्रचिनियों की मर्दानी पर काम कर लिया था, विलकुल आखिरी

क्षण पर प्रवेशपत्रों का रंग बदल दिया : और अचानक मन्थ्यालय की लाल प्रवेशपत्र दे दिये हैं, जबकि यह लाल के गान बकड़ प्रवेशपत्र थे, और उन्होंने पहरेदारों को पाठ्य : दिया : कि लाल प्रवेशपत्र के बिना किसी को भीतर न प्रवेश :।

प्रवेश द्वार पर खड़े लोग गुस्से से चिल्ला रहे थे।

एक मजदूर पहरेदार के सामने अपना गाने प्रवेशपत्र दिखा दिया नाराजी से पूछ रहा था :

“तुम मुझे कैसे रोक लोगे? मैं प्रतिनिधि हूँ... तुम कौन रोकनेवाले कौन होते हो?”

वह धवराये हुए पहरेदारों से भिड़कर खड़ा हो गया। उनके आसपास खड़े लोग चिल्ला रहे थे :

यह क्या हो रहा है? पहले मन्थ्यालय लगे ही छान फिर हमें ही घुसने नहीं देते! आओ! चलो, घुसो यहाँ।

भीड़ ने जबरदस्ती भीतर प्रवेश कर लिया। उनके पीछे से नानिन भी अरर घुस पाये।

“हमारा पक्ष सदा विजयी होगा!” लोड़ियों पर चले गए उन्होंने मन्थ्यालय में कहा।

उन्होंने तीसरी मंजिल पर जाकर उन कमरा में प्रवेश किया, जो सैनिक-क्रांतिकारी समिति के कब्जे में थे। वहां उन्होंने देखा कि क्रांतिकारी दस्ते योजना के अनुसार बिना लड़ाई की जा रहे हैं।

उसी रात को लाल गाड़ों ने नगर के सड़क स्थान-मेकडे स्टेजनों, बेंकों, पुलों, टेलीफोन और मन्थ्यालय-पर काम कर लिये। रात भर सदैवसदा स्मोल्नी का-काकर अपने पुत्र का लाल बिदे जाने को, नदी को नाव द्वारा पार करते ही मन्थ्यालय के मन्थ्यालय के और फौजों के अत्यायी तरफत के मन्थ्यालय लाल मन्थ्यालय के साद-की तरफ बढ़ने के हर्षदायी मन्थ्यालय लाल मन्थ्यालय

धो फटने-फटने नारा ही शहर विद्रोहियों के हाथ में आ चुका था। अब सम्मानी सरकार या कब्जा बन, जिसपर प्रसाद है नामने के चोंक और उससे लगी कुछ गड़कों तक ही सीमित था।

ज्वादीमिर इल्यीच नामने का भी आगम मिये चित्त मानी जान जम म चले मुवह लोने-पार यह मम र सभी नामने के नाम अपील को पूरा कर चुके थे।

पेजोग्राद में विद्रोह सफल हो चुका था और अब सारी सत्ता सैनिक-क्रांतिकारी समिति के हाथों में थी।

इतिहास में पहली बार विद्रोहियों को रेडियो व्यवस्था का उपयोग कर जान ता असमर प्राप्त हुआ और उन्होंने उसके मिये अपनी अपील सारे लोगों को प्रचारित कर दी।

उसी मुवह एकदम क्वांत और धके हुए लेनिन ने पेजोग्राद सोवियत को बैठक में भाग लिया, जो चौबीस घंटे से ज्यादा ने लगातार चल रही थी।

अब नामने के मजदूरों और मीलों ने अपने प्रिय ज्वादीमिर इलीच को देखा, उन्होंने गढ़े प्रोफर जय-जयकार और तालियों की गड़मड़ाहट के साथ उनका स्वागत किया।

मजदूर वर्ग के नेता गंच पर आ खड़े हुए। उन्होंने खामोजी छा जाने पर ऊंची और साफ आवाज में कहना शुरू किया:

“नाथियों! मजदूरों और किसानों की सत्ता, जिसकी आवश्यकता पर बोल्शेविक लगातार जोर देने रहे हैं, स्थापित हो गयी है!”

अगले दिन सोवियतों की अखिल-रूसी कांग्रेस ने ज्वादीमिर इलीच लेनिन को जन-समिति परिषद् का अध्यक्ष निर्वाचित किया।

अक्टूबर क्रांति के बाद के पहले दिनों में पेजोग्राद में उत्तम का वातावरण छाया हुआ था। हर कोने में सैनिकों के इत्तफा में लगता था। स्मोल्नी में आने-जाने लोगों का सारा बचा हुआ था।

यहां, स्मोल्नी में ही बोल्शेविकों का प्रधान सम्मेलन था। उनका नाम था सैनिक-क्रांतिकारी समिति। ज्वादीमिर इल्यीच को अपने से मिलने आनेवाले सभी लोगों का उन्होंने स्वागत किया और उनसे उस दिन बड़ी घटनाओं के बारे में और वास्तविक उस बारे में सवाल किये कि सिगिर प्रसाद में और उसके पहलू-मार्ग पर क्या हो रहा है।

बोल्शेविकों में यह खबर बड़ी तर्ज के साथ देनी गई कि ज्वादीमिर इल्यीच स्मोल्नी में हैं। बहुत-से लोग उन्हें अपना सारा ध आर दे वही आ गये। इनमें से प्रत्येक को एक सज्जन के भीड़ लग गई। फिर उन लोगों ने भी अपने-अपने विचार-विमर्श घटनाओं से कोई ताल्लुक न था। विदेशी सैनिकों की सहायता से अन्धकारों के संवाददाताओं ने उनके कार्यालय में पहुंचने की राहों को। वे यह देख चुके थे कि सबसे ज्यादा लोगों का पाना-पना गरी हो रहा है, इसलिए बाहिर था कि यहीं वह रह गया नहीं, जहां से विद्रोह का निदेशन किया जा रहा है।

\* ज्वादीमिर बोल्शेविक ३-११-१९१७ में सम्मेलन में भाग लेने के लिए अपने प्रमुख कार्यकर्ता।



'अश्वमेध' सार प्रिन्स को लाया न निर्गुण प्रसाद पर भाव्य  
 कल हल हा शरण दिया लाल गाड़ी सैनिक और नानेनिना  
 न मोनन प्रमद शशा सीडियो भीतर जाने और बाहर निकलन  
 न राश्वी पर राजा कन लिया २५ २६ अगस्त की रात को  
 शिशिर प्रसाद आंतिकारी फौजों को कब्जे में आ गया। अस्थायी  
 सरकार को गिरफ्तार करके पहले में पीटर-पाल किला भेज दिया  
 गया। कोरेन्स्की स्त्री को वेश में एक गुप्त रास्ते से होकर निकल  
 गये और अमरीकी दूतावास की कार में बैठकर बच भागे।

काले चमड़े का कोट और चमड़े की पतलून पहने साइकिल  
 सवार एक सैनिक गलियारे में तेज फौजी कदम बढ़ाता जा रहा था।  
 उसके कंधे पर चमड़े का थैला लटका हुआ था। अपने बायें हाथ  
 से उसने थैले को अपनी बगल में दबा रखा था, जिससे वह झटके  
 न खाये।

"सैनिक-आंतिकारी समिति का मुख्यालय कहां है?" उसने  
 दरवाजे पर खड़े दोनों लाल गाड़ों से पूछा।

'किससे मिलना है?"

नानिन ने गहरे अंदरे मदेश पहुंचाना है।

एक सतरी मुड़कर अपने साथी से कहने लगा:

"इसका मतलब है कि हमें नायक को खाना होगा। उस  
 मदेश-मह ३ पास प्रदणन गती है, यह भयानक जाना चाहता  
 है लॉन से मिलना चाहता है।"

नायक ने सैनिक से पूछा कि वह कहा से आया है और उसे  
 किसने भेजा है।

"मैं शिशिर प्रसाद से आया हूँ। मुझे कमांडर पोद्वोडस्की  
 ने भेजा है।"

'मेरे पीछे आओ।"

"मैं संदेश लाया हूँ। मंदिर न अपने कमरे में प्रवेश करने  
 हुए कहा। "मुझे खुद लेनिन से मिलना है।"

"क्या बात है, साथी?"

"क्या आप ही लेनिन हैं?"

सैनिक ने अप्रच्युत उत्सुकता से व्लादीमिर इल्यीच से वरक  
 देखा: हर्ष से उसकी आंखें चमक उठी। उसने जल्दी से अपने गले  
 का बटन खोला, उसमें से एक कागज निकाला उसे सादर नानिन  
 के हाथ में दिया, सलामी दी और बोला:

"संदेश!"

"धन्यवाद, साथी," व्लादीमिर इल्यीच ने कहा और उसी  
 तरफ अपना हाथ बढ़ा दिया।

सैनिक जैसे संकोच में पड़ गया उसने अपने दोनों हाथों से  
 व्लादीमिर इल्यीच के हाथ का भिन्नाया समुपकरण और चमकी  
 के साथ उलटा घूमकर फौजी चाल से बढ़ा न चल दिया।

बाहर जाते-जाते उसने लेनिन के कमरे में ध्यान पारक  
 को अपने थैले में रख लिया।

"शिशिर प्रसाद पर अधिकार कर लिया गया है अस्थायी  
 सरकार को गिरफ्तार कर लिया गया है कोरेन्स्की बल्लर भाग गये  
 हैं!" व्लादीमिर इल्यीच ने संदेश को जोर से पढ़ा।

लेनिन ने वाक्य पूरा ही किया था कि वह आनंद हुआ  
 की आवाज उठी, जिसे बराबर के कमरे को लाल गाड़ी ने दुहरा  
 दिया।

सारे ही कमरे और गलियारे "हुरा" के गगनभेदी गाने में  
 गूँज उठे।

हम लोगों ने सुबह काठ और धातु-गठान में नर पर  
 उल्लान ने भरपूर - भावनी में जाना शुरू किया। मेने व्लादीमिर  
 ११



उन्हीं ने प्रस्ताव किया कि वह मेरे घर चलकर सोयें। इनके पतले ही गेन गेड्डरुन्वेन्की हल्के थे। टेलीफोन करके नगरस्थ मजदूरों के दस्तों से कह दिया था कि वे आसपास की सड़कों को निरापद रखें।

हम लोग स्मोल्नी से निकले। सारा शहर अंधेरे में डूबा हुआ था। हम लोग कार में बैठे और मेरे घर की तरफ चल दिये।

व्लादीमिर इत्योच बहुत ही थके हुए थे और उन्हें रास्ते ही में झपकी आ गई थी। घर पहुंचकर हमने कुछ रुखा-सूखा खाता खाया। अब व्लादीमिर इत्योच की सुविधा के लिए सभी कूट करने की कोशिश की, लेकिन मैं उन्हें खान पान पर सोने के लिए बने मजिक्न में ही गहरी कर पाया जो एक छोटे से कमरे में था। कमरे में एक मेज, सागज और म्याली और मेरा पुस्तकालय भी था। आखिर वह तैयार हो गया और हम वेष रात के लिए अलग हुए।

मैं बगलवाले कमरे में बोंफे पर पल गया और गेन निश्चय किया कि मैं तभी सोऊंगा कि जब मुझे यह विश्वास हो जाये कि व्लादीमिर इत्योच सो गये हैं।

ज्यादा सुरक्षा के खयाल में गेन हर गाने को लगा दिया था और बाहर से दरवाजे पर साकल भी चढ़ा दी थी। मैंने यह सोचकर अपना पिम्बाल भी निकालकर रख लिया कि घर में घुसने और व्लादीमिर इत्योच की हत्या करने की कोशिश की जा सकती है आखिर क्या कुछ संभव नहीं था।

जल्द ही पर समय आने के लिए मैंने व सभी टेलीफोन नंबर भी लिख दिये जो मुझे याद आये साथियों के, म्याली के मजदूरों की हत्या समितिवा क, ड्रेड-मिनियों ने यह इसलिए कि संकट के समय में भूल न जाऊं," मैंने अपने मन में कहा।

व्लादीमिर इत्योच ने अपने कमरे की बत्ती जला दी। अपने अवन में पड़ा 'ज्या वह सो गया' शरा भी आवाज नहीं पड़ी थी। मुझे अपनी आ नई। मैं सभी पूरी तरह से सोया नहीं था कि अभी मुझे व्लादीमिर इत्योच के दरवाजे के सोने के प्रकाश की तरफ पनली-सी गर्दी प्रकाश होती दिखाई दी।

मैं चौकन्ना हो गया। मैं चुन गया था कि यह फिर वरद आहिस्ता से पलंग से उतरे, धीरे से कमरे का दरवाजा खोला और इस खान में लमकती करन के बाद कि मैं ना गया हूँ, पांच दरवाजे अपने कमरे में मेज के पास चले गये फिर वह उभरा सामन बैठ गये, दावान खोली, कुछ कागज लिये और लिखन लगे। दरवाजे की दरार में यह सब मुझे दिखाई दे रहा था।

व्लादीमिर इत्योच कुछ लिखने कुछ लिखें जा कर रहे अपने लिखे हो पड़त और फिर खनक कागज पर कुछ लिखने लगते आखिर उन्होंने एक साफ़ प्रतिलिपि तैयार करना शुरू कर दी।

रान दल गहीं थी। पनोवद की लिखन जागरीय भी पढ़ रही थी—व्लादीमिर इत्योच ने बत्ती गुल की और पनन पर जाकर सो गये। मुझे भी नींद आ गई।

सुबह मैंने घर पर सभी से कहा कि वे पादम लामोजी रख, क्योंकि व्लादीमिर इत्योच ने लगभग सारे रान खान किया है और उनके लिए सोना जरूरी है।

अचानक उनके कमरे का दरवाजा खुला और वह पूरे अफ पहन, एकदम नरोनाजा, मराकनन रूप निकल आये।

'समाजवादी खान ने पंद्रह दिन की वधाई।' इत्यादि हमसे कहा।

उनको चेहरे पर थकान का निशान भी न था। क्या था, जैसे वह रात भर आराम में सोया रहे, क्योंकि वह ऐसे अनानिजर चौबीस घंटों के बाद दो-तीन घंटे में जरा सा बिगड़ल नहीं गये थे।

कई साथी आ गये थे। जब सभी लोग चाय पीने बैठ गये और मादजडा सोल्मनलीबीवना भी आकर बैठ गई, जिनोंने राम हमारे घर ही गुजारी थी, तब व्लादीमिर इल्यीच ने अपनी आय से एक सप्ताह गिनाले और उसे अपनी विम्वान भूमि-मवधी आर्जनि पदकर मुनाई, जिसे उन इन निर्धारित दिनों में तैयार करने में लगे हुए थे।

19 रेन बाद हम पैदल स्मोन्ती ही तरफ चले दिये और फिर एक ट्राम पर सवार हो गये। सड़को पर शांति और व्यवस्था को देख व्लादीमिर इल्यीच का चेहरा चमकने लगा।

जाम को, सोवियतों की दूसरी कांग्रेस में, शांति के बारे में आर्जनि के स्वीकार कर लिये जाने के बाद व्लादीमिर इल्यीच ने प्रतिनिधियों को माफ और गुजनी हुई आवाज में भूमि-मवधी आर्जनि पदकर मुनाई। उसे बड़े जोश के साथ एक स्वर में स्वीकार कर लिया गया।

दानील्का पेन्नोप्राद में लीतेइनी सड़क पर स्थित एक छोटे स्थान के तहखाने में रहता था। वह इसी स्थान में पैदा हुआ था और उसके हर निवासी को जानता था।

पहली मंजिल पर काउंटेस अंबास्यका रहता था। दूसरी मंजिल पर राजा पिरोगोव-पिश्चायेव का निवास था। उनसे ऊपर की मंजिल पर अंतःपार्षद गोरोखोव रहते थे और सबसे ऊपर की मंजिल पर राज्य-पार्षद अर्दातोव। सभी गितावकले से अलग-अलग हलवे और महत्व के खिताब। बस, दानील्का के मामा-पिता 7 दिना खिताब या पदवीवाले साधारण लोग थे।

पिछले दिनों में, शांति की उद्घोषणा के बाद में कितनी ही बातें हो चुकी थीं। दानील्का तो अब अचरजों में डूब गया था लेकिन उस दिन...

दानील्का के पिता अम्बुवार लेकर घर आये, जहाँ सोमा और अपने बेटे की तरफ देखने लगे।

“तो,” उन्होंने कहा, “अब से तू रूसी जनतंत्र का नागरिक है। इसमें यही लिखा है। व्लादीमिर इल्यीच ने निम्न से यह आर्जनि पर दस्तखत किये हैं।”

दानील्का को यह बड़ा मानदार खिताब जैसा लगा, लेकिन यह बात पूरी तरह से साफ नहीं थी कि कौन कौनसा है जहाँ-जहाँ का क्या मतलब है।

“क्या यह राज्य-पार्षद से ज्यादा महत्वपूर्ण है?” उसने पिता से पूछा।

“भूमि-मवधी आर्जनि - जाम को, सोवियतों की दूसरी कांग्रेस में, शांति के बारे में आर्जनि के स्वीकार कर लिये जाने के बाद व्लादीमिर इल्यीच ने प्रतिनिधियों को माफ और गुजनी हुई आवाज में भूमि-मवधी आर्जनि पदकर मुनाई। उसे बड़े जोश के साथ एक स्वर में स्वीकार कर लिया गया।

“शांति के बारे में आर्जनि के स्वीकार कर लिये जाने के बाद व्लादीमिर इल्यीच ने प्रतिनिधियों को माफ और गुजनी हुई आवाज में भूमि-मवधी आर्जनि पदकर मुनाई। उसे बड़े जोश के साथ एक स्वर में स्वीकार कर लिया गया।

ज्यादा महत्वपूर्ण है ' पिता ने जवाब दिया।

"अंतःपार्षद से भी?"

"हां, अंतःपार्षद से भी।"

"काउंट से भी?"

'हां।'

"और क्या राजा से भी ऊंचा?"

"राजा से भी बहुत-बहुत ऊंचा," पिता ने हंसकर कहा।

दानील्का अपने दोस्तों से मिलने और उन्हें अपनी जानकारी से परिचित कराने के लिए बाहर भाग गया।

उसे बान्या दोजोरेव मिला।

'मज़बूत बहुत-बहुत ऊंचा खिनाब मिला है ' उसने शैली बघारते हुए कहा। "राज्य-पार्षद से भी ऊंचा, अंतःपार्षद से भी ज्यादा महत्वपूर्ण, काउंट से भी बड़ा, राजा से भी ऊंचा! मैं हूँ रूसी जनतन्त्र का नागरिक। अखबार में नहीं लिखा है। खुद व्लादीमिर उल्यानोव-लेनिन ने आज्ञा पर दस्तखत किये हैं।"

दानील्का आगे भाग गया। उसे ल्यूका कोज़ुलिना मिली। उसने वही कहना शुरू किया:

"मुझे बहुत बड़ा खिनाब मिला है... बहुत ऊंचा, बहुत ऊंचा..."

दानील्का उस दिन कितने ही दोस्तों से मिला और उसने उनमें से हर किसी को यह खबर सुनाई। आखिर वह बिलकूल बक भव और अपने मतान के बाहर बैठकर आगम करने लगा।

बड़े-बड़े वह सोचने लगा 'मन्त्रा उल्यानोव-लेनिन को उसका-दानील्का-के बारे में कहा में पता चला होगा? पिता ने लेनिन को बताया होगा? वह सोच में डूबा हुआ ही था कि गया देखना है कि मान बोलवाया किरील्ल भागता हुआ चला आ रहा है। उसका दम धका हुआ था और वह चिल्ला रहा था:

मानुस है, में राजा हूँ? मैं हूँ रूसी जनतन्त्र का नागरिक। दानील्का इतनी हैरत में आ गया कि उस हिचकिचा आन लगी।

"क्या मतलब? कैसा नागरिक?" उसने गर्वपूर्वक कहा।

"नागरिक मैं हूँ। अखबारों तक में पढ़ा लिखा है मेरे ही बारे में।"

"बाह रे तू!" किरील्ल ने मोटी चमकत हुआ कहा "तुने ऊपर कौन कागज़ बरबाद करेगा?"

यह दानील्का की बरदास्त के शीर्ष था, वह उठा और किरील्ल के सामने जा खड़ा हुआ और उसे समझा मत हाथ जमा दिया।

दोनों एक-दूसरे पर मुक्के बरसाने लगे।

"नागरिक मैं हूँ!" दानील्का ने निर्गुण्य में निन्दितार गया।

"नहीं, तू नहीं, नागरिक मैं हूँ" गान बालाबाल विगोन्स की चीख ने सारी सड़क को गुंजा दिया।

इसी वक़्त एक नौजवान गजदूर उधर से गुज़रा 'उसने दोनों छोकड़ों को अलग किया। मगर उन्होंने यह नहीं चाहा 'इसा कि लगभग दस वारे में था। लेकिन आगिर उद्वान बाद वक़्त ही थी। गजदूर खिलखिलाकर हंस पड़ा और अपने अपने जूतों में एक अखबार निकाला। तीनों अपने सिर गिराकर उसे लोरे छोड़े पान लगे।

"जायदादों और असैनिक श्रमिका के उन्मत्तन के बारे में आज्ञा" शीर्षक के नीचे लिखा था कि कुर्ज़िन व्यापारी निम्न-पूर्जर्पात जैसी श्रमिकों और उसी तरह राजा, काउंट राज्य-पार्षद अंतःपार्षद जैसे सभी खिनाब का उन्मत्तन कर दिया जायगा। इसके बजाय रूस के सभी निवासी आगे से सभी जनतन्त्र का नागरिक के नाम से ही जाने जायेंगे।"

आज्ञा के नीचे हस्ताक्षर थे 'प्रधान जन-उन्मत्तन पार्षद उल्यानोव (लेनिन)।"

"तो, देखा तुमने, बात तो तुम दोनों ही ही ठीक थी,"

मजदूर न रहा। 'तुम सभी जनतंत्र के नागरिक हो, उमन  
जानीवरा ने तुरफ उठाया किया और तब भी, 'उमने किरीन्क  
की तरफ इशारा करते हुए कहा, "और मैं भी। हम सभी अब  
सभी जनतंत्र के नागरिक हैं। व्लादीमिर इल्योच लेनिन ने हम सभी  
मेहनतकश लोगों के लिए ही यह आज़ाप्ति लिखी है।"

पहले तो दानील्का को यह जानकारी बड़ी निराशा हुई कि  
आज़ाप्ति अपने सभी के लिए नहीं, बल्कि हर किसी के लिए लिखी  
गई है। लेकिन फिर वह इस तरीके पर पहुंचा कि इस तरह तो  
यह श्रम भी अच्छा है, क्योंकि व्लादीमिर इल्योच इयानोच लेनिन  
न अपनी आज़ाप्ति में हर किसी को - उसके माता-पिता को और  
उसके सभी शत्रुओं और परिचितों को भी - शामिल कर लिया है  
उन्होंने किसी को भी रहने नहीं दिया। शाबाश लेनिन!

लेकिन काउंट्स स्वेर्दलोव राजा पियोगोव-पिश्चायेव और  
पापंद गोरोगोव और राज्य-पापंद यदालोव को लेनिन की आज़ाप्ति  
में खुश होने नहीं लगी। वे बड़ी जल्दी-जल्दी में देश में भाग गये।  
चलो, अच्छा पीछा मूटा! अब लेनिनकी सरकार के बड़े मरान म  
नय परिचार रहने के लिए आ गये। वे सभी दानील्का के माता-  
पिता की तरह साधारण लोग हो थे। सभी मेहनतकश लोग वे  
थे। वे केवल नागरिक ही नहीं, देश के मालिक भी थे।

कला० बोंच-बुर्योच

## सोवियत राज्यचिह्न

हर ही चीज का हमारे देश में नये ढंग से निर्माण किया  
जा रहा था। और, इसीलिए, एक नया राज्यचिह्न भी जरूर था  
ऐसा, जैसा मानवजाति के इतिहास में नहीं बना था - मगर  
पहले मजदूर-किसान राज्य का राज्यचिह्न।

१९१८ के प्रारंभ में एक नये राज्यचिह्न का निर्माण शुरू  
दिया गया। मैं उसे तुरंत व्लादीमिर इल्योच के पास ले गया।

व्लादीमिर इल्योच अपने कार्यालय में दो स्टेनोग्राफरों\*  
तथा कई अन्य साथियों से परामर्श कर रहे थे। मैं चित्र-कमल  
की मेज पर रख दिया।

"क्या है - राज्यचिह्न? आओ, देखो मेरी को और यह सब  
पर झुककर उसे देखने लगे। सभी लेनिन के आग्रहानुसार खड़े  
हो गये और राज्यचिह्न के चित्र को देखने लगे।

लाल पृष्ठभूमि पर उमन मुरज की दिशों के दोनो तरफ  
गेहूं के पूले थे। बीच में एक-दूसरे को काटते शस्त्र और हथियार  
थे। नीचे पूलों से एक तलवार उठ रही थी, जिसकी मोर सफ  
किरणों की तरफ जा रही थी।

"हे तो दिलचस्प!" व्लादीमिर इल्योच ने कहा। "विचार  
बिलकुल सही है। लेकिन यह तलवार किसलिए है?" इतना हम सभी  
की तरफ बारी बारी से देखा हम सब कह रहे थे और अब तक

\*पाकोव स्वेर्दलोव (१८८५-१९१८) और काउंट स्वेर्दलोव। १९१८-१९१९ -  
कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत राज्य के प्रारंभिक नेता।



कारखाने के मुख्य वर्कशाप में सभा शुरू हो चुकी थी, लेकिन बाहर अभी भी बहुत बड़ी भीड़ थी। हर कोई व्लादीमिर इल्योच की प्रतीक्षा कर रहा था।

आखिर एक कार आई और फाटक पर खड़ी हो गई। कार का दरवाजा खुला और सभी ने लेनिन को देखा।

व्लादीमिर इल्योच ने मजदूरों का अभिनंदन किया और अपनी स्वाभाविक तेज चाल से वर्कशाप के दरवाजे की तरफ चल दिष्टे। सभी उत्तर पीछे-पीछे आगे चले गये और अज्ञाना निर्जन हो गया।

डाइवर ने कार को घुमाया और उसे फाटक से कोई पंद्रह कदम दूर खड़ा कर दिया और बैठकर उनका इंतजार करने लगा। कुछ मिनट बाद उसके पास काले कपड़े पहने एक स्त्री आई। उसने पूछा:

"साथी लेनिन अभी-अभी भीतर गये हैं, है न?"

"मुझे क्या पता, कौन गया है!" डाइवर ने जवाब दिया।

"ऐसा कैसे हो सकता है? आप कैसे डाइवर हैं—क्या यह भी नहीं जानते कि आप किसे ले जा रहे हैं?"

डाइवर ने उस पर खीझ आ गई—कैसी डीठ आंखें हैं।

मुझे नहीं मालूम!" उसने नाराजी से जवाब दिया।

ओरत पलटकर कारखाने के फाटक की तरफ चली गई।

आधे घंटे बाद सभा खत्म हो गई। वर्कशाप का दरवाजा खुल गया। व्लादीमिर इल्योच बाहर निकल आये।

उनके पीछे-पीछे कई सज्जनों की भी आंखें लागीं और नीतर ही थे कि जहाजियों की बरदी पल्लव आंखों से निकल गया और उसने अपनी बांहें फैला दीं।

"अरे धकेलो मत!" धकेलो मत! फर्श-फर्श आवाज से वह चिल्लाया।

उसका चेहरा फूला हुआ था और आंखें अंधार हो गई थीं। वह उस पोशाक के लिहाज से ही भिन्न था।

उसने अपने हाथों से दरवाजे की चाल को जमाने लगा था और आंखों को अंधारों पर टिका रखा था।

मजदूरों ने समझा कि यह लेनिन की स्तुति थी और इसलिए उन्होंने जबरदस्ती आगे बढ़ने की कोशिश नहीं की। इसी बीच लेनिन अपनी कार के पास पहुंच गया।

उनका हाथ दरवाजे पर पहुंच भी गया था कि मजदूरों ने उससे कोई सवाल पूछा। वह जवाब देने के लिए मुड़ी नहीं।

तभी अचानक एक गोली चली, फिर एक और। लेनिन गिर पड़े। मजदूरों ने जहाजी को अलग धकेल दिया और अपनी राफ लपके।

डाइवर अपनी पिस्तौल को छिपाना हुआ कार में चढ़कर उतर आया। उसका ध्यान कार के आगे था। उसने लपक कर वही एक स्त्री की तरफ गया था—वही, जो लेनिन के जाने में पड़ रही थी।

वह भीड़ में अपनी तरफ लपक कर उल्टा पीछा करना मगर नहीं वह मजा और उमन लेनिन को जमीन पर पड़े देखा।

डाइवर लपका और उनका पाग पटना से अब बंद गया।

"अरे, अस्पताल ले जाओ इन्हें जल्दी से," किसी ने चिल्लाकर कहा।

लेनिन ने अपना सिर उठाया और तनसार खिलाने में शीन।

"नहीं, मुझे घर ले जानो।"

मे ॥ वह भी न जानता है ॥ तब उसने मजदूरों में  
कहा। "मैं इन्हें किसी अस्पताल नहीं ले जाऊंगा।"

मजदूर लेनिन पर झुक गये—वह उन्हें उठाकर कार में पहुंचाना  
चाहता था। लेकिन वह धीरे धीरे खींच बारी मजिस्ट्रेट में चला उठा और  
बोले:

"मैं लड़ जा सकता हूँ।"

उसका चेहरा पहलू से हो गया था। वह कार में बैठ गये,  
मगर बैठे न रह सके और एक तरफ सीट पर डह गये। ड्राइवर  
ने दरवाजा बंद किया, उछलकर कार में बैठा और तेजी के साथ  
खाना हो गया।

उसी समय वह औरत पकड़ ली गई, जिसने लेनिन पर  
गोलियां चलाई थीं। वह भीड़ में खो जाना चाह रही थी, लेकिन  
जना में कुछ बच्चों ने उस दख लिया था और उन्होंने चिल्लाना  
शुरू कर दिया:

"यह रही! यह रही! इसी ने लेनिन पर गोली चलाई है!"

यह ३० अगस्त, १९१८ की बात है।

माजिस्ट्रेट उस के मजदूर और किसान, दुनिया भर के मेहनतकश  
अनुसार में लेनिन के सम्बन्ध के बारे में विज्ञप्तियों का बड़ी चिन्ता  
और आशा के साथ पढ़ा करते थे।

अखबारों ने लिखा कि जिस स्त्री ने लेनिन की हत्या करने  
की कोशिश की थी, उसे जनता ने दुश्मनों ने भजा था। उन्होंने  
गोलियों से बड़े पैर लहर में बुझा दिया था।

लेनिन का जन्म बहुत ही गरीब थे। दासों को उनके बचपन  
का बहुत ही कम आशा थी।

लेकिन आखिर एक वह दिन भी आया, जब अखबारों में  
यह सुखद समाचार छपा कि लेनिन की जानत अब अच्छी है।

कारखान में फिर सभा हुई। एक मजदूर ने अखबार में छपी

खबर की जानकारी पढ़कर सुनाया। उसके बाद "कौन-कौन से सम्बन्धित  
जन वगैरह आगे आने वाले हैं" का प्रश्न पड़ा।

इसने उनसे कुछ ताकती बातें सही-सही पूछीं।  
उन्हें गोलीयों से नहीं बचाया। सोचो तो, उन्होंने उनका सारा  
जीमार हो गये थे!"

वह क्षण भर के लिए चुप हो गई, फिर उसका ध्यान गोलीयों  
पर निगाह डाली और जोर से उन लोगों को सम्बोधित की जो  
किसी के दिमाग में थे:

"हम अपने गुरुविष्मन्त हैं कि हमारे पास लेनिन है!"

व्लादीमिर इल्यीच की बीमारी के समय उनके पास कितने ही पत्र आए मजदूरों । कितने ही प्रतिनिधिमंडल भी आने लगे थे । हर कोई परामर्श था, हर कोई जानना चाहता था कि उनकी नसबंदी कैसी है । मैं ही व्लादीमिर इल्यीच उठने-बैठने लग और कुछ हवाखोरी के लिए बाहर निकलने लगे, लोगों को बता दिया गया कि वह अब ठीक होने लगे हैं । हर किसी के लिए यह बड़ी खुशी की बात थी । लेकिन मजदूर फिर भी चिंतित थे, वे कहते थे कि यह तो बड़ी अच्छी बात है कि वह ठीक हो रहे हैं, लेकिन हम उन्हें अपनी आंखों से कब देख पायेंगे ।

हमने डाक्टरों से पूछा कि व्लादीमिर इल्यीच समा में भाषण करने लायक कब हो पायेंगे, तो हमें यह जवाब मिला : "तीन महीने से पहले नहीं ।" लेनिन के बारे में एक फ़िल्म बनाकर दिखाया जायेगा था । फ़िल्म कैमरामैन बोल्शान्स्की को बनानी थी । लेनिन को यह पता नहीं चलने देना था कि उन पर फ़िल्म बनाई जा रही है, क्योंकि वह सभी जगह जाऊँगे न देने । हमने बोल्शान्स्की से साथ यह व्यवस्था की कि वह पहले उजने, भेषदान दिन को आने मजदूरों के साथ केमरामैन आ जाये और उनके सहयोगी अपने कैमरा पगवागार से चार कोणों पर शस्त्रों से जगह-

जगह छिपाकर लगा दें । आगेगीन इल्यीच आगे नीचे गले चर्मी नस्त्रों पर टहलते थे ।

यह सारा ही काम बहुत तेज़ी से साथ किया जाना था, क्योंकि मूल फ़िल्म की कई प्रतियाँ तैयार हो जानी थीं और उन्हें कई सिनेमाघरों में दिखाया जाना था, ताकि देश भर में यह खबर और लोग व्लादीमिर इल्यीच को केमरामैन से जगहों पर देख सकें ।

सितंबर, १९१८ की बात है । शस्त्रों का मुताबिक १२० की टेलीफ़ोन द्वारा बोल्शान्स्की को खबर दी गई कि वह पूरी तयारी से तैयार रहें । इधर व्लादीमिर इल्यीच से कहा गया कि आप डाक्टरों की हिदायत के मुताबिक उन्हें परा न दें, बल्कि टहलने के लिए जाना चाहिए ।

व्लादीमिर इल्यीच तैयार हो गये ।

निश्चित समय पर मैंने व्लादीमिर इल्यीच को शस्त्र दिखाया कि उनकी हवाखोरी का वक़्त हो गया है । वह चुनन उठ नार हुए, टोपी पहनी और बोले :

"आज मैं ओवरकोट नहीं पहनूँगा ।" यह शब्द सुनायी दे ।

प्रबंध कार्यालय के साथियों ने बोल्शान्स्की को तैयार कर दिया कि व्लादीमिर इल्यीच चल पड़े हैं । फ़िल्म बनाए पर तयारी करते हुए मैं और लेनिन दरवाज़े से निकले और पगवागार की तरफ चल दिये ।

व्लादीमिर इल्यीच के दरवाज़े से निकलने के क्षण से खबर उनकी वापसी पर उसके बंद होने तक ही हम बात फ़िल्म पर बंद हो गई ।

इधर हम बातचीत में रहे हुए चल रहे थे और उधर सभी कैमरामैन लेनिन के एक-एक शब्द को पकड़ते रहते थे । फ़िल्मा रहे थे । वे सभी छिपे हुए थे, क्योंकि अगर व्लादीमिर

\* डार टोप - मोलहवी सड़ों में लव में डाली गई ४० टन न खादा बदन को लोप, भी लवों केमरामैन से पकड़ो । डार टोप २००० नवा लोहार्से को कला की एक बड़िया मिलाव है ।



इल्यीच ने उन्हें देख लिया होता, तो वह गलटकर वापस चले गये।

वे जाना था कि फिल्म में क्लादीमिर इल्यीच की अच्छी उम्मीद थी, लेकिन वे धीरे-धीरे उनमें अलग निम्न बन गये। यह बात उनके ध्यान में आ गई और वह कहने लगे:

“आप दूर क्यों रह रहे हैं? लोग हवाखोरी के लिए जाते हैं, तो साथ-साथ ही धूमते हैं।”

वे उनके नजदीक आ गया और हमने अपनी बातचीत जारी रखी। इसी तरह हम जार तोप तक जा पहुंचे। मेरे यह कहने पर कि ओर आगे चला जाये, क्लादीमिर इल्यीच ने कहा:

“सुझाव तो आकर्षक है, मगर हो नहीं सकता। मुझे चार वजे के पहले-पहले एक लेख पूरा करना है और दो साथियों से मिलना है, जिन्हें वक्त दिया हुआ है।”

हम मुड़कर वापस जाने लगे। हम कुछ ही कदम गये थे कि क्लादीमिर इल्यीच बोले:

“देखिये, देखिये! वह कौन भागकर जा रहा है? उसके कंधे पर क्या है? .. अरे, हां! यह तो कोई सिने-कैमरामैन है!”

“हां, है तो। वह सिने-कैमरामैन ही है और यहा कई और कैमरामैन भी हैं। वे सब आपकी फिल्म बना रहे हैं।”

“आप तो अभी जांचन किसन दी? .. उन्होंने पूछा। ‘ओर आपन मुझे बताया क्यों नहीं?’”

“जाना कि आप सभी लेंथार नहीं होने और यह बहुत जरूरी है।”

“तो यह कहिये कि आपने मुझे बना दिया! लेकिन आपने ऐसा क्यों किया, क्लादीमिर इमीलियेविच?” उन्होंने उल्लाहना भरे स्वर में कहा।

“मैं यह पहली बार आपकी चर्चा कर रहा हूँ, क्लादीमिर इल्यीच,” मैंने वादा किया। लेकिन मैंने यह भी कहा कि आपकी फिल्म बनाना जरूरी है, सभी लोग हैं कि आप अच्छे गये हैं, और सभी आपको खूबना खूबना हैं - फिर चले गियेमा : परदे पर ही सही। आखिर अभी आप कम से कम तीन महीने और मसाओ में भाषण नहीं दे पायेंगे।

“यह वाद में देखा जायेगा! .. क्लादीमिर इलीच ने जवाब दिया।

“डॉक्टरों का सही कहना है। आप मजदूर बन चुकित हैं। इसीलिए हमने यह तय किया कि आपकी हवाखोरी के पिछम बनायें और उसे हम मजदूर कलवों में डिलावे। यह मजदूर बन के एक बहुत ही जरूरी चीज है।”

“चलिये, अगर ऐसा ही है, तो दूसरी बात है। मैं आपका सब पाप माफ़ करता हूँ।”

हमने इस योजना पर खूब हंसी-मजाक किया और आपस में प्रसन्नतापूर्वक बातें करते हुए चलते चले गये।

“भई वाह! यह तो पूरा फ़िल्मी पागल है! आपका मसमर आज मुझे बना दिया!” क्लादीमिर इल्यीच ने प्रसन्न मन में कहा।

जब फिल्म बनानेवालों ने देखा कि ‘पागल’ का पता चल गया है, तो वे अपनी छिपने की तरफ़ में निजाम पाव आर करी बातचीत को खुले तौर पर फ़िल्माय कर मस पाव है कि फिल्म का यह हिस्सा बहुत सफल बन पाया था, क्योंकि इनमें क्लादीमिर इल्यीच को प्रसन्नतापूर्वक हमने दिखाया गया था। कुछ मित्राकर यह बड़ी सजीव और रोचक फिल्म थी।

जब बोल्ल्यान्स्की ने क्लादीमिर इलीच को परदे पर यह पूरा फ़िल्म दिखाई, तो उन्हें जार तोप के गमवाता दृश्य आश्चर्यचकित आया।

यह पूर्वजावन के लिए ही रात "अलादीमिर इल्सीच" की प्रदर्शन में इराकली नामक फिल्म हर सिनेमाघर में दिखाई गई। ऐसे एक समानांतर फिल्म के दिखने के रूप में पहले मामलों के मतभेदों में और फिर नगर तथा देश के अन्य भागों में दिखाया गया। इस फिल्म में खूबसूरतों ने दर्शकों को बयान करता मजिद्वर है। जैसे ही अलादीमिर इल्सीच परदे पर नजर आते, हर कोई अलग ही जान और ताजिया बजाने लगता। हान नागों से गंजने लगता।

"अलादीमिर इल्सीच सिंदावाद!"

१९२७ में काशिनो ग्राम के गहनवानों ने एक छान-सा बिजलीघर बनाया।

बड़ी मुसीबतों का वक्त था वह - मधुमे वरगी मामला भी ग्रामप्य था।

और ऐसे वक्त में काशिनो के किसानों ने याने-प्राण अपनी जड़ों से और अपनी खुद की उछा में घाता बिजलीघर बनाया शुरू किया। बड़ी मुश्किल से उन्होंने टेबोरोस का तार काटे और प्राप्त किया। यह तार बहुत मोटा था और मामला तार में बंधा बनाया गया था। उसे जमीन पर बिछा दिया गया और पनामा, चिमटों और हाथों से उसकी बटों को मोटा गया उसे याने उन पर उनके पास काफ़ी तार हो गया।

फिर वे खंभे लगाने के लिए लगान में बहुत से माय अब उन्हें बिजली पैदा करने की मशीन - डायनामो की तकनीक की

अगर इस बात को ध्यान में रखा जाय कि उस वक्त का मामूली कील खरीद पाना भी लगभग असम्भव था तो इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि डायनामो का तानित करना कितना मुश्किल रहा होगा।

काशिनो के किसान मान्यो गये। डायनामो की तकनीक में जहां भी वे जाने, अपना नाम यह कहकर ही शुरू करते कि बिजली के पास नारे देश में बिजली लाने की योजना है और हम उसी योजना का अनुसार काम कर रहे हैं।

काफ़ी प्रयास के बाद उन्होंने आखिर एक डायनामो प्राप्त कर ली।

वे डायनामो को अपने गांव लाने लगे। वहां उसे एक बड़े भूखंड में लगा दिया। इसके बाद उन्होंने सड़कों पर लंबे गाड़ों और उन पर बिजली के तार लगा दिये। हर घर को एक-एक बल्ब दिया गया।

जब सभी चीजें तैयार हो गईं, तो उन्होंने लेनिन को पत्र लिखकर बिजलीघर में आयोजित उद्घाटन समारोह में भाग लेने के लिए निमन्त्रित किया।

पत्र तो भेज दिया, पर किसी को भी विश्वास नहीं था कि लेनिन अपने काम के समय निश्चय पारंगत होंगे। फिर भी उन्होंने उद्घाटन-दिवस की तैयारियां शुरू कर दीं। गांव के सबसे बड़े मकान में गांव भर का फर्नीचर पहुंचाया गया, उसके भीतर लंबी मेजें और बेंचें लगा दी गईं। हर गृहणी ने उस दिन के लिए कुछ न कुछ पकाया।

बिजलीघर या उद्घाटन-दिवस—१४ नवंबर आ गया। लेकिन निम्नलिखित बातें जाननी थी कि लेनिन की प्रतीक्षा की जाये या नहीं।

अचानक सड़क के दूसरे छोर पर एक कार रुक आई। गांव के बच्चे तो भागकर सबसे पहले पहुंचे। उनके पास पहुंचे। कार खोली गई। इसमें भीतर व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोवना बैठे हुए थे।

“तुम्हारा बिजलीघर कहाँ है?” व्लादीमिर इल्यीच ने बच्चों से पूछा।

“सवारी करवाओ, तो बतायें,” बच्चों ने जवाब दिया।

लेनिन ने बच्चों को पैदा किया और वहां चल पड़े।

बड़े मकान के सामने किसानों ने उनका स्वागत किया।

सब लोग भीतर जाकर बैठ गये और बातें करने लगे, लेनिन ने उन्हें धैर्य गाड़ों पर जान फोड़ने की विचार के बारे में बताया और किसानों को इस विचार की समझा दी। इसके बाद किसानों ने उन्हें अपने गांव में बताना जल्द विज्ञापित, लेनिन ने बड़ी दिलचस्पी के साथ उनकी बातें सुनीं। जब बोलनेवाला चुप हो जाता, तो व्लादीमिर इल्यीच उन्हें कहते “अच्छा, फिर?”

लेनिन की स्मरण-शक्ति अद्भुत थी। वह उस बात का पतलन याद कर लेते थे कि किसका क्या नाम है और जो ने वह किसानों को उनके पूरे नाम से ही संबोधित करते थे: यान्ना, एलेक्जेंडर, वसिलीसा पावलोवना। बृद्ध स्त्री-पुरुषों को यह बात बहुत अच्छे लगता।

किसानों और लेनिन के लिए यह बातचीत इतनी दिलचस्प थी कि किसी ने भी ध्यान इस बात पर नहीं दिया कि दिन तो डूबने भी लगा है। अतः, वह तो वास्तव में एक ही बातें कहते हैं— व्लादीमिर इल्यीच और किसानों का दोस्त बनने के लिए गांव आया था और इसलिए परेशान हो रहा था कि कहीं, नवंबर खींचने लायक रोशनी नहीं रहेगी।

आखिर उसने हिम्मत करके कहा:

“व्लादीमिर इल्यीच, किसान लोग आपके साथ अपनी समस्याएं चिंचाना चाहते हैं।”

“ओह... बलिये, ठीक है,” लेनिन ने जवाब दिया, मगर छूट किसानों से बातें ही करते रहे।

दस मिनट और गुजर गये। अचानक बिजली घट गई। फोटोग्राफर ने बिल्कुल हताशा के साथ कहा:

“कुछ मिनट और गुजर गये, तो तस्वीरें बिल्कुल नहीं खींची जा सकेंगी!”

ल्लादीमिर इल्याच नलवीर खिन्नवाने के लिए बैठना पसंद नहीं करते थे। लेकिन वह दूसरों के काम की कदर करते थे। आखिर फोटोग्राफर शहर से बाहर इसी अवसर के लिए आया था।

लेनिन ने कहा:

“ठीक है, आप बाहर चलकर तैयारी कीजिये। हम नादेज्दा कोस्तान्तीनोव्ना के साथ मिनट भर में आते हैं।”

फोटोग्राफर बाहर लपका और अपना कैमरा ठीक करने लगा। बरा ही देर में उसे बच्चों ने घेर लिया। हर कोई कैमरा के बिल्कुल पास सबसे आगे ही बैठना चाहता था।

ल्लादीमिर इल्याच और नादेज्दा कोस्तान्तीनोव्ना बाहर आये। फोटोग्राफर ने उन्हें बीच में बैठा दिया और उनके आसपास किमान छोड़े हो गये। लेकिन बच्चे अब भी बीच में पड़ते थे। सभी लेनिन की वजह से बैठना चाहते थे। फोटोग्राफर को मरगा आ गया और वह कदम लगा कि अगर बच्चे जानि में नहीं बैठे, तो फांटा मरवा दी जायेगी।

ल्लादीमिर इल्याच ने ऊपर आनिपूर्यक बैठाने की हाजिरी की। उन्होंने कैमरा की तरफ इशारा करते हुए कहा:

“देखो, उस काले छेद की तरफ देखते रहो।”

बच्चे बाय छेद की तरफ नाहने लग। फोटोग्राफर एक नये काले कपड़े में छिप गया और वही का वहीं जमकर रह गया।

लेनिन ने उगमे बच्चे ‘जैलये’ बच्चे मही पड मे जम न जाय।

सभी लोग तब पड शोन ‘धवराइय नही, हमान बच्चे बहुत मस्तवुन है।’

बच्चे फिर इधर-उधर हिलने-डुलने लग गये थे, क्योंकि बड़े इन्हीं के चारों में बाने कर रहे थे। फोटोग्राफर चिल्लाया “हिलो मत।”

लेनिन यह देखकर मुसकरा दिये और सभी फोटोग्राफर ने मरगा दवा दिया।

इसके बाद सभा हुई। सभी एक ऊंचे खंभे के पास जमा हो गये, जिससे एक बिजली का लैंप लटका हुआ था। उसे पतने कभी नहीं जलाया गया था। खंभा पर ली आनियों और लाख फीतों से सजा हुआ था। खंभे के पास एक मजबूती।

आसपास सिर्फ काशिनो के ही किमान नहीं थे—दूसरे शहरों के रहनेवाले भी वहां मौजूद थे। कई लोग तो बहुत दूर-दूर से आये थे। लेनिन मेज के पास गये और भाषण देने लगा।

“आपका गांव काशिनो आज एक बिजलीघर बनाना शुरू कर रहा है। बहुत शानदार काम है यह। लेकिन यह सिर्फ शुरुआत है। हमारा कार्यभार यह है कि हमारे सारे जन्मगत में बिजली की रोशनी की बाढ़ आ जाये...”

जब लेनिन का भाषण समाप्त हुआ, तो वाद्यवाद ने “इंटरनेशनल” की धुन बजाई। उसी समय भंगोरे में बिजलीघर में डायनामो चालू कर दिया।

चीक में बिजली का लैंप जलने लगा। हर घर में रातिया जगमगा उठी।

पहले काशिनो के निवासी चिराम इस्तेमाल किया करने थे जो बड़ी फीकी, हरी-सी रोशनी दिया करते थे।

अब बिजली की जगमगाती रोशनी को देखकर किसी ने कहा “अब हमारे यहां इल्याच के लैंप रातनी दे रहे है।”

लेनिन ने किसानों से विदा ली और बाय की तरफ चल दिये। एकदम अंधेरा था। नवंबर की ठंडी हवा शहरे पर थपड़ मार रही थी।

गांव से कुछ दूर निकल जान के बाद ल्लादीमिर इल्याच ने पीछे की तरफ एक बजर डाली। मरगा खानों के बीच में काशिनो के मकानों की जगमगाती छिड़कियां दिखाई दे रही थीं।

लेनिन छिड़गी के फास खड़े थे। उनके हाथ पतलून की जेबों में गूर गहरे घुस गए थे। ऊर्जा महराजी छत घोंगरी बाड़ी गिर-क्रियोगाने आगे हमरे में टूट घोंगरी सोचने थी। सरदियों के आगिरी हस्तों बेहद ठंडे थे।

गिर-क्रियोगाने में जवादीमिर इलीच गोली से बदलकदनी वनी अस्वागार की इमारत लोडस्काया मीनार जिम पर लना जवाब धसर आकाश की पृष्ठभूमि में स्पष्ट नजर आता था और जो मानेज की इमारत से दूरे जाने की दानिमत यहा से कम ऊंची प्रतीत होती थी। कमलिन की दीवार का कुछ हिस्सा और कारकों को दख सकत थे। चोंक में जहां पत्थर धंस गये थे, वहां गड़े बन गये थे। अस्वागार ने निडोन्काया मीनार की तरफ जाती राह-रोशनियों की कतार हुकदार घास जैसी लगती थी।

लोडस्काया मीनार से लेकर अस्वागार तक की सड़क और चौक पर पड़ी बर्फें सदियाली और गंदी थी। बस, छतों और कैमलिन-प्राचीर के ऊपर की बर्फें ही चीनी जैसी सफेद थी।

कैमलिन से आगे के पत्थर के मकान जमे हुए से लगते थे। मग्रहालय और म्मवांसेव पुस्तकालय के आगे की धिमनियां तो नजर आती थी, मगर किसी के भी धूप का सच्चा तक नहीं उठता दोख रहा था। शहर में ईंधन नहीं था।

सरदी ने भास्को को ठंड के बर्फानी घेरे में जकड़ रखा था। गृहयुद्ध के फलस्वरूप देश को निर्जीव और निडान करनेवाले

दुश्मनों—भूख और विनाश—में अथ भीषण जाल को शामिल हो गया था।

देश में टाइटस का गयंकर प्रयोग था।

लेनिन ने एक ठंडी सांस ली। फिर उन्होंने अवागार इलाके से अपने दाहिने हाथ को जेब से निकाला और अपनी मेज की तरफ चल दिये।

एक साधारण-सा कलम जल्दी में कुछ शब्दों को लक्षित करते हुए कागज पर दौड़ने लगा। लिखावट ऐसी निपटो न जा सके। उनके दिमाग में विचार पर विचार आ रहे थे और उन्हें सभी को लिख डालना था। बस भवनों में पता लगाया जाय कि उनके पास काफ़ी जलाऊ लकड़ी है या नहीं। नहीं तो उन्हें जलाऊ लकड़ी प्रदान की जाये... धातु उद्योग में काम करनेवाले मजदूरों को चीनी और सैकरीन का राशन बढ़ाया जाये... शिक्षा की जन-कमिसारियत ग्रामीण इलाकों के लिए पुस्तकों के प्रकाशन में बिड़र रही है... आपूर्ति से साधियों को अवगत और न्योफान परवाहा है... कामेनेव को नोट लिखना है... शिदजी उद्योगपति जो अपनी बेवार् पेश कर रहे हैं... उन लड़कियां जो मानते हैं या नहीं?...

अण भर के लिए कलम हवा में ही ना रह गया।

सम्मेलन-कक्ष का सफेद मोमजामा-मड़ा दरवाजा आहिस्ता से खुला और उनके सचिव ने भीतर निगाह डाली।

“व्लादीमिर इलीच,” उसने धीरे से आवाज दी।  
लेनिन ने जवाब नहीं दिया, वह अपने काम में लग रहे।  
“व्लादीमिर इलीच...”

लेनिन ने अपना सिर उठाया और गोल ‘हा-हा, बालिव’ और नाट लिखने के लिए एक राग और उठा दिया।

‘रुगाचीभिर इत्येन, साशी गोर्जुनोव आपसं मिलने के लिए  
माये हैं।’

'दीया है,' सेनिम ने कहा।

गर्चिव अणने पीछे दरवाजे को धीरे से बंद करना था। बन्ना  
गंगा और बन्ना गिरिराज की भाँति भाँति भाँति भाँति भाँति भाँति  
करने में लगे रहे।

हिनग मी ही क्रांती ही अन्धी-धन्यही आहे नाटी याजनि  
 म्हातम मी नदरे दाख, अन्निन उठ वार ह्या आहे उनहि यमगानी  
 म्हातम मी नदरे दाख, अन्निन उठ वार ह्या आहे उनहि यमगानी  
 म्हातम मी नदरे दाख, अन्निन उठ वार ह्या आहे उनहि यमगानी

“आइसे, जेओजीव अलेखसेविन, आइये। तशरीफ रखिये,”  
 “आगमगुर्गी ती तरफ ले जाते हूँ। आदीगर पर्याप्त  
 न होय।”

अपनी अनायास कोशिशों के कारण कुरसी तक आये और  
उस क्षण में उस मनुष्य ने अपने पैरों को छिपाते हाथ जल्दी  
से घेड़ गये।

— "मिआज सय ? "

अपनी माता को यह निर्णय सुनाकर रोने लगी।

अने प्रचलीत आहे. त्यांना विनाश करायला देऊ नये, असा निर्णय  
आजकालच्या काळात घ्यावा लागेल.

अथ भविष्यत्पुत्राणां नामानि । अथ भविष्यत्पुत्राणां नामानि । अथ भविष्यत्पुत्राणां नामानि ।

[illegible]

जैन, १९२३ का नरक से,



माता के लिए गाई गांव की  
 भस्मा पकड़ लाना मिला है चाना  
 विधवा के लिए चाना करने में।

नर्मि को दूधाना बहुत पसंद था।



लक्ष्मीनारायण धाम पर भगवत्  
 मङ्गलार्चना मन्त्रों के साथ  
 इसी मन्त्रों का प्रतीक लीला  
 'पाद मन्त्रों का' शरणार्थी काम-  
 मन्त्रों का लीला मन्त्र।



मङ्गलार्चना मन्त्रों के साथ

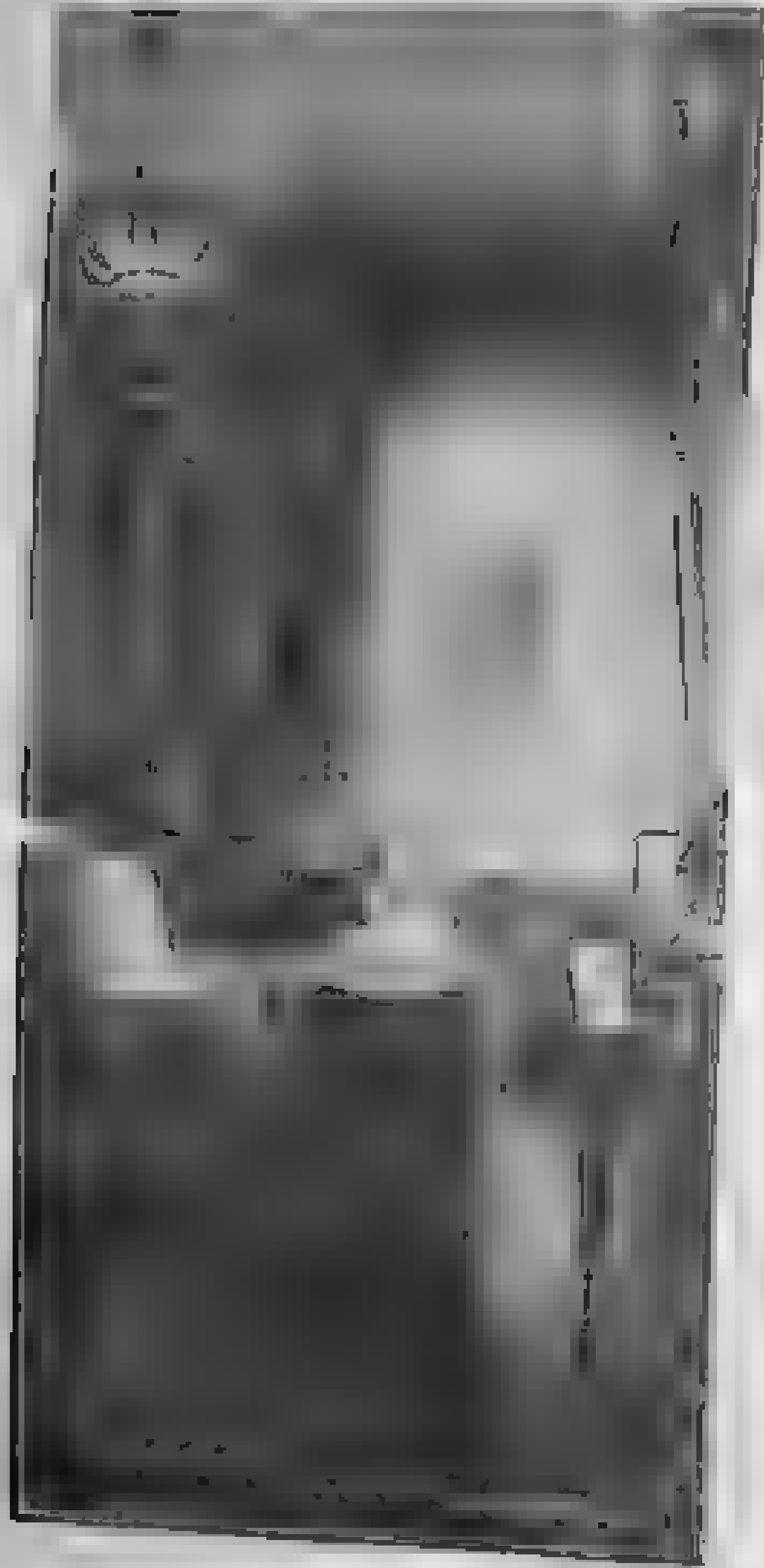




गोर्की • ज्वाइन्सिंग इंगोय क  
 फमदा। जल्लि तम् गोर्की एक मगोर  
 की लागोर था। लेल्लि गोर्की को  
 जल्लि को संपत्ति लयल्लि से और  
 उन्हाय वल्लि बुद्ध को लल्लि लयल्लि

लेल्लि लल्लि इन्सीफलीन पर लल्लि से  
 वल्लि लयल्लि थे।

लेल्लि की मेक।



गोर्की का यह मकान अब स्मारक-समूहालय बन गया है। लेनिन का नाम सड़क प्रगर है।



कोर्शुनोव ने लेनिन पर तजर डाली और देखा कि ज्यादातर इन्हीं उनकी ओर ध्यान में दृष्ट रहे हैं।

कोर्शुनोव को लग रहा था कि लेनिन इस उल्का के घारे में अच्छी तरह जानते हैं, वैज्ञानिक व विभाग और आकाशवाणी में व्यवगत है और इसलिए अपनी बातों में वह एक बहुत ही व्यक्त व्यक्ति के अत्यंत मूल्यवान समय को नष्ट कर रहे हैं। वह हकसाने लग।

‘वह उल्का... मगर आप तो इसके घारे में सभी कुछ जानते हैं...’

‘आप यह कैसे सोचते हैं, लेओनीद अलेक्सेयेविच?’ लेनिन ने कहा। ‘इसमें ज़रा मुझे कुछ नहीं मान्य था कि कर्ण उल्का गिरी है। जी, सच...’

अपना सिर एक तरफ झुकाकर और वैज्ञानिक की तरफ आगे बढ़कर उन्होंने मुसकराते हुए धीरे से कहा:

‘साल तक याद नहीं था मगर।’

कोर्शुनोव भी मुसकरा दिये।

‘अजब बात है!’ लेनिन ने गंभीर होकर अपनी बात जारी रखी, ‘कड़ियों का खयाल है कि जन-कमिसार परिषद् का अध्यक्ष और जन-कमिसार सभी कुछ जानते हैं। यह वेसिस्पेर की बकवास है। हम कम, बहुत कम, शर्मनाक तौर पर कम जानते हैं। हमारी आप लोगों से जितनी ज्यादा मुलाकातें हों, उतना ही अच्छा है। अपनी बात जारी रखिये, लेओनीद अलेक्सेयेविच। और जल्दी मत कीजिये।’

कोर्शुनोव ने उत्साहित और उत्कलित होकर अपनी सोची बातों को बताना शुरू किया, जिनसे वह लेनिन को अस्से से अवगत कराना चाह रहे थे।

‘आज आप इस इल्का की मोर में जाना चाहते हैं ?’ कोर्नोव  
चुप हुए, तो व्लादीमिर इत्येच ने पूछा :

"महीं, विदेशी संस्थाओं का इससे क्या सरोकार!" लेनिन ने तेजी से कहा। वे अपना गमक नाराज करते क्या करती? क्या हमें अपने अनुसंधान-कार्य में निष्ठा क्या क्या चाहिए?

जैनित ने सूची को पहना सूत लिया और जैसे-जैसे वह पहने  
 गया उनकी मांहों में थल पड़ने लगे। आखिर उन्होंने कागजों को  
 मज पर रख दिया, कपड़े हाथ में उल्टे फैलाये और फिर वैज्ञानिक  
 की तरह श्वा उनसे चहरे पर रखी और अन्तरी दोनों ही  
 जाय थी।

मोर्ज़ुनोव ने लेनिन की तरफ देखा और अनिश्चयान्मय स्वर में बोले

लेनिन की आँखें वैज्ञानिक से आगे, कमरे के कोने पर टिकी हुई थीं। लगता था, जैसे कमरे में दूसरे व्यक्ति की मौजूदगी की बात भी इस वस्तु उनके ध्यान में नहीं है।

उन्होंने अपने हाथों को फिर अपनी जेबों में छुँस लिया और कोशुनोव की आँखों से बचते हुए, बार-बार छिड़की के बाहर देखते हुए कमरे में इधर-उधर टहलने लगे।

कह चूक हो गये।

जानी, कभी माराजी, तो कभी वह अचानक बेहद उदामी से भर जाती।

"चीनी कम भी ले जाई जा सकती है, मगर तंबाकू जरूरी है। मच्छरों के खिलाफ हमारे पास अकेली यही चीज है," कोर्सनोव ने दृढ़ स्वर में कहा।

व्लादीमिर इल्यीच ऐसे बोलते रहे, मानो बीच में किसी ने कुछ कहा हो नहीं था:

"उपकरण गेटियों ने लिए समूर। उपकरण पाटियां!" उन्होंने दुहराया।

कोर्सनोव खड़े हो गये, उनके चश्मे के लेंस चमचमाने लगे, जिनमें मिड़कियों का अंश पड़ रहा था। उनकी आवाज में ऐसे आदमी जैसा संकल्प भरा हुआ था, जो मानो आखिरी बाजी लगा रहा हो।

"व्लादीमिर इल्यीच!" उन्होंने ऊंची और सख्त आवाज में कहा। "मैंने लेंस चमचमाने लगे, उनके चश्मे के लेंस चमचमाने लगे, जिनमें मिड़कियों का अंश पड़ रहा था। उनकी आवाज में ऐसे आदमी जैसा संकल्प भरा हुआ था, जो मानो आखिरी बाजी लगा रहा हो।"

कोर्सनोव फिर बैठ गये।

"हे भगवान!" व्लादीमिर इल्यीच ने हेरान्ती से चिल्लाकर

कहा। "वैशक, जाना जरूरी है। लेंसों की जरूरत है। हमें इनके लिए हम आपकी मांगी हर चीज आगवा ले। मगर ये चीजें आपने जो मांगा है, वह काफी नहीं है।" व्लादीमिर इल्यीच ने अनुसंधान दल के लिए इसी तरह तैयारी की मांग की। "मैं मर, आपने अपनी सूची में जितनी चीजें लिखी हैं, वे तो जल्द से बाहर जाने को भी काफी नहीं हैं! मुझे तो पता है, मैं नहीं हूँ उफ़, कैसी बुरी बात है!" लेंसिन ने फिर कहा। "मेरी बुरी खबर है कि हम आप जैसे लोगों को आपकी बख्शिश की हर चीज नहीं दे सकते—हर चीज, जो आपके लायक है।" लेंसिन ने ठोस कहा। "हम आपको सब कुछ देंगे, बस, हमें मरना पड़ेगा।"

लेंसिन की तरफ़ धकटकी लगाकर, व्लादीमिर इल्यीच ने मर में अस्पष्ट-सी आवाज निकली: "ओफ़, मैं तो सोच भी नहीं कहना चाहते थे, मगर राहत से आने वाले थे।" व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

लेंसिन वैज्ञानिक के पास आगे और सहज-सुलभ रूप से पूछने लगे:

"लेओनोद अलेक्सेयेविच, अगर हम आपकी सूची में लिखी चीजों को ही चीजें दे पायें, तो?" व्लादीमिर इल्यीच के दिये कागज को हाथ में लेते हुए कहा। "आपका अपना क्या चला लेंगे?"

"इससे ज्यादा की तो मैं आज्ञा करने की जरूरत भी नहीं करता, व्लादीमिर इल्यीच! जैसे ही उन्हें लिखित सूची मिलेगी हम सारी तैयारी करके चल देंगे। यकीन रीति, हम आपकी सूची की जरूरत है भी नहीं जानिए आपका पास सभी चीजें कोई अनुरोध लेकर ही आते हैं।" व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

"तो, आप जाने के लिए तैयार हैं?"

"जी, हा।"

“और आपको किसी और चीज की जरूरत नहीं है।”

“जी, नहीं। और कुछ नहीं चाहिए।”

लेनिन हमेशा से सामे वह कुछ नाकाम से नजर आने वा  
हिन उन्होंने मेरा हाथ नीचे अपनी निगाह फकी और उनके होठों पर  
मगकान दीख गई।

अच्छा ना। ” उन्होंने स्तम्भर्ग आवाज में त्रिनाड क साथ  
रहा “जरा यहा खिड़की के पास ना आइये लेओनीद अलशमेयाविच।

“किसलिए, व्लादीमिर इल्यीच?”

“अरे, मैं आपसे कह जो रहा हूं, वस इसलिए।”

“व्लादीमिर इल्यीच, अगर आपको सूची मंजूर है, तो मुझे  
अब आपका और समय नहीं लेना चाहिए।”

“जी, नहीं,” लेनिन ने स्तम्भपूर्वक कहा। “मैं अभी आपसे  
पूरी तरह सहमत नहीं हूं। जरा इस खिड़की के पास आइये, तो।”

कोशुनोव हिचकिचाते हुए उठे और लेनिन के पास चले गये।

व्लादीमिर इल्यीच ने वैज्ञानिक के पैरों की तरफ देखा और  
बोले:

“जो मैंने सोचा था, वही है न! मेहरबानी करके यह  
बताइये कि क्या आप अपनी यात्रा पर से उतरे नी पहनकर जाने की  
भाव रहे हैं? अरे यत्न आपके गालों में निकलने निकलने ही जवाब दे  
देते।”

“ऐसे तो बुरे नहीं हैं ये,” कोशुनोव ने जवाब दिया, “काम  
चल जायेगा, इन्हीं से और फिर इनकी मरम्मत भी तो करवायी जा  
सकती है।”

“हां, मरम्मत तो करवायी जा सकती है,” लेनिन ने  
विचारपूर्वक कहा। “मेरे खयाल से आपके पास और जूते नहीं हैं।”  
“जी, नहीं।”

“मुझे दुख है कि इस बात से उदास हो, अन्तर्गत  
लेनिन अपनी बात कहते गये। उन्होंने कोशुनोव का अपनी कमरे  
पर वापस जाकर बैठने का इशारा किया। और फिर उन्होंने वह जूतों  
के लिए कोशुनोव पर एक गहरी नजर डाली कि कहीं वह जूते तो  
नहीं मान गये हैं और कमरे में फिर इधर-उधर घूम गये।

“हमारे यहाँ अद्भुत लोग हैं,” उन्होंने कहा, “विदेशी लोगों  
को ही ले लीजिये। जरा एक छोटे-से रूम लेंगे तो हम  
कीजिये—घास उगी किसी सड़क पर, जहाँ गुश्नर और अन्य धूम  
रहे हैं। लकड़ी का पुगान भी मकान में गाँव में पर सड़क पर  
रह रहा है। वह रोटी और गहली के सामूनों में गमन पर ही  
जी रहा है, मगर मानवयुक्त अंतरग्रहीय यात्राओं की मायनाओं  
को हल कर रहा है! और मुझे यकीन है कि जून के महीने में  
कारण उनका घर भी टडा होगा और मर जाये, जरा भी उन्नी  
के पथ के राही हैं, जो फटे जूते पहनकर हमारा गमन ही नाहक  
की, माउवेरिया की यात्रा करने को तैयार हैं।

“लेनिन आप? आपका बारे में क्या कहा जाये?” कोशुनोव  
ने अपने मन में कहा। “आप ही कौन अन्ती यात्रा में हैं? एक  
ऐसे देश में, जहाँ आधे लोग ‘समाजवाद’ जब्द का गमना तक नहीं  
जानते, आप समाजवाद का निर्माण कर रहे हैं।”

और अचानक उन्हें लगा कि वह बात लेनिन पर ही मज  
से बंधे हुए हैं, कि दोनों एक ही लक्ष्य की गिराई कर रहे हैं, कि  
वही लक्ष्य ब्रह्मांड के रहस्यों को उद्घाटित करने के गमन में उन  
निग्रो-बोल्स्की की, गुट-जर्जर का तात्कालिक के पुनर्निर्माण में लगे  
भूखे मजदूरों की, जमीन को लकड़ी के जवा में जानने विमानों की  
प्रेरक शक्ति है...

जब कोशुनोव वहाँ से रवाना हुए तो वह उन दिनों का आद  
उनकी आँखें चमक रही थीं। अनैवाज दिनों के बारे में, अपने

नाम के शान्त में विनाशकारी भीषण निर्माण था, यो यो रूप  
जो जलते-बुझते थे, यहाँ केमिस्ट्री में मिलने और भाव यो यो  
पार कर गये।

... एक दिन आयेगा, जब देश भर में कल-कारखानों की  
जिमनियां धुआं जगलती होंगी, जिनमें से कई का तो अभी तक  
निर्माण भी नहीं हुआ है: ट्रैक्टर और मोटरगाड़ियां बनाने के  
कारखाने, जो अभी तक एक मेहराबी छतवाले छोटे-से और सदै  
इतर में काम में डूबे आदमी के ही सपने हैं... जब पुश्तक और  
तेल्स्कोप की रचनाएं सर-अर में मिल सकेंगी, क्योंकि ज्ञानहीन और  
अधजंगली इस सार्विक साक्षरता का देश बन जायेगा... और जब  
कूदरती तौर पर, वैज्ञानिक अनुसंधान-दल उत्तरी ध्रुव पर पहुंचेंगे  
योंगे तो मरना है कि जोई नागन की महराइया में पड़े या पार्की न जाय-  
मरना भी मरना चला जाय, और इन अनुसंधान-दलों के मरना को  
पार न पारें हवन राशी या जग में नवाक के अनुरोधों को लेकर एक  
महान नये राष्ट्र के नेता के समय को नष्ट नहीं करना पड़ेगा...  
और इस देश में मरना ही एक नई समझ रहती होगी, जिनमें मरना  
म मरना ही जगह ही एक नई ही समझ होगी यह मरना जोकर  
रहना।

यकला अभी मरना पर लफ १ दिन कम था, रुड है  
यपने जाने मरना का मरे २, बुझना-पतला धोड़ा गाड़ी को किसी  
नये लोचना के न मरना है, बंद दरवाजोंवाली दुकानें हैं, जिनके  
नग मग लामपदा पर मरना-मरना के नाम मिले हुए हैं। मरना  
नया पत्र थोक व्यापारी २० व० कोशिकन, लोहिये" आदि-  
आदि। जकन यह अभी की बात है।

लाल सैनिकों का एक छोटा-सा दस्ता चल रहा है,  
बर्फगाड़ी पर सड़े लोहे के पाइपों को खींचा जा रहा है—कहीं किसी  
मरना की तामीर या मरम्मत की जा रही होगी, किसी दफतर की

खिड़की में से कार्ल मार्क्स का चित्र और दो शान्त मरना मरना  
दिखाई देता है: "... जिनाब!" मरना मरना मरना मरना  
एक स्त्री किसी इमारत से निकलती जिन २० २०

औसत कद का एक गठीला आदमी मरना मरना मरना -  
क्रेमलिन—में अपने कार्यालय में मरना मरना मरना मरना  
रहा था और अपने विचारों को नये मरना मरना मरना मरना  
वह आनेवाली मरना और नई मरना मरना मरना मरना  
देख रहा था—ऐसी वास्तविक मरना मरना मरना मरना  
इस के चेहरे की पलट देगी।

कई मजदूर और किसान व्लादीमिर इत्योच को उपहार भेजा करते थे। इन में इस समय गांधी पत्रिका के अभाव का आश्चर्य लेनिन को नहीं आया और नीला उपहारवस्त्र भेजा करने, उपहारों में आश्चर्य भी आया परन्तु समझे कि कारखानों में काम करनेवाले मजदूरों ने व्लादीमिर इत्योच का नाम ही खान का मोट भेजा जो नोबोल्दा की लकड़वाजीवाला न इन्टर गांधी मजदूरों के पत्रों में भेजा तो पत्रों के कागड़ा मिल के मजदूरों ने गरम कंबल।

जब भी ऐसे उपहार आते, लेनिन बहुत नाराज होते।

"यह क्या बात है, व्लादीमिर इत्योच, वे अपने दिल से आपका ही उपहार भेजते हैं, नारे नहीं और महत्त्वों उनसे नहीं।

"ठीक है, मैं इस बात को जानता हूँ," लेनिन जवाब देते, मगर वह नहीं मंजूर है। उसी का मित्रान में है। पुराने समय में हमें आश्चर्य आता था कि गांधी पत्रिका की अपेक्षा दिया करते थे। अब बहुत आ गया है कि इस प्रथा का अंत कर दिया जाये। जी हाँ, इस प्रथा का खात्मा कर दिया जाना चाहिए!" वह जोर देकर कहते।

पत्र का लेनिन को गोमल प्रदत्त के क्लोत्सी नगर की स्तोदोल्काया कपड़ा मिल के मजदूरों का पत्र मिला।

व्लादीमिर इत्योच ने पत्र को पढ़ा मजदूरों ने लेनिन का आश्चर्य आता ही पाचवी ब्रह्मसूत्र के अर्थपर वह अपनी बधाईया सर्वा भी अच्छे स्वास्थ्य की कामना की थी और आगे लिखा था :

"...हम आपको अपने आदर का एक अच्छा शोध भेज रहे हैं, लिखा था कि उपहार कपड़े का एक टुकड़ा है।

पत्र के नीचे दस्तखत थे : दोनोवन नदी, पत्र का मजदूरों ने उस पर अपने दस्तखत किये थे।

व्लादीमिर इत्योच एक उपहार और पत्र का मजदूरों का पत्र, मगर वह मजदूरों का उत्सव का उत्साह भंग नहीं करता चाहते थे।

व्लादीमिर इत्योच ने कलम उठाया और मजदूरों का पत्र लिखा :

"प्रिय साथियो,

आपकी शुभकामनाओं और उत्साह का निम्न हार्दिक धन्यवाद। मैं आपको एक राज बताता हूँ और वह यह कि मुझे आगे से कभी उपहार मत भेजिये। और उन मजदूरों में यथासंभव अधिकतम मजदूरों को अवगत करवा दीजिए।

आपका

आ० उ-गोर्नोव (लेनिन)।

जब क्लोत्सी के मजदूरों को लेनिन का पत्र मिला तो वे बहुत प्रसन्न हुए। लेकिन वे समझ गये कि लेनिन को पत्र का भंग नहीं है। उन्होंने व्लादीमिर इत्योच का उत्तरों को आदेश माना। क्लोत्सी के सभी मजदूरों ने उस पर विचार किया और उन्होंने उन आदेशों को केवल सारे नगर में ही नहीं, बल्कि पत्रों में प्रकाशित कर दिया।





निजे हूँ थी। उसने अपना दाया हाथ लेनिन की तरफ बढ़ाते  
कहा :

"मेरा नाम पेनगेवा गोनोदोवा है। मैं कताईखाने में काम  
करती हूँ। मैं तुम्हारे लिये एक छोटी सी थाली लाती हूँ।"

"हां, हां, मुझे भाद है," व्लादीमिर इल्योच ने  
मुस्कुराकर कहा।

उसके पीछेवाली पुवा धीरे-धीरे लाज के साथ मनकरा रही थी।  
उसकी छोटी बाहर की तरफ निकली हुई थी, मानो उसकी मोटी  
नूनहरी बेजिया उसके निर को पीछे खींच रही हो।

"मैं तुम्हारा मजदूर पर काम करती हूँ। क्लाव्डीया गुमेवा मेरा  
नाम है।"

बाहरी इतने पहले मुगटिन गरीर का एक बूढ़ा कालीन को बड़ी  
सावधानी के साथ धार कर रहा था। उसकी बड़े-बड़े चाल-डाल के  
बावजूद वह भाफ था कि अपने काम में वह पकड़ा है।

"मैं इसी-सी कुलेन्कोव हूँ। मैं लोहार हूँ।"

व्लादीमिर इल्योच ने ऊँचे कानर की नीली कमीज पहने  
नवपुष्पक की तरफ देखा।

उसने उस लोहार को देखते ही जो भी कलहने में काम  
लाया...

उसने उस लोहार को देखते ही जो भी कलहने में काम  
लाया...

उसने उस लोहार को देखते ही जो भी कलहने में काम  
लाया...

उसने उस लोहार को देखते ही जो भी कलहने में काम  
लाया...

उसने उस लोहार को देखते ही जो भी कलहने में काम  
लाया...

इस भी वह नहीं लग रहा था कि वह लोहार को देखते ही  
वह उनसे पूछना चाहते थे, किन्तु वे चुपचाप रह गए।

"हमने एक प्रस्ताव स्वीकार किया है कि हम लोहारों को  
शराब के बारह हजार मजदूरों ने काम करने में मदद कर देंगे।  
पेनगेवा ने अपनी बात जारी रखी। वह उस लोहार की तरफ  
तुम अपनी सेहत का खयाल रखोगे, क्योंकि वह बहुत ही कमजोर  
जुहरत है।"

"मैं कोजिग कहूंगा," व्लादीमिर इल्योच ने कहा।  
मरोया इल्योचिना और नदिना लोहारों की तरफ से आती  
थी और उन्होंने देखा कि एक मनोहर मुस्कान उनके चेहरे पर  
बिखर गई है।

"हम तुम्हारे लिए मजदूरों का एक बड़ा बजट रखे  
पेनगेवा ने कहा और लेनिन को फाइल दे दी।

व्लादीमिर इल्योच ने उसे खोला और उसमें से एक  
कागज देखा। वह बड़े-बड़े काने और लोहारों के लिए था।  
या। इन जगहों पर उनका ध्यान खींचा गया था।

... इस वक़्त जब जर्मन कानि केन लोहारों को देखते  
उतनी ही जुहरत है, बिना किसी काम के लोहारों ने कुछ भी नहीं  
और हर्ष के दिनों में..."

"शुक्रिया, बहुत-बहुत शुक्रिया इन लोहारों के लिये  
कहा।

लोहारों को देखते ही जो भी कलहने में काम  
लाया...

व्लादीमिर इल्योच को देखते ही जो भी कलहने में काम  
लाया...

उनी चुन लेगी। फूल एकदम निर्मल सफेद हैं और तुम्हारी मेहनत के लिए अच्छे हैं। देखो, जरा छिड़की के बाहर...”

व्लादीमिर इल्यीच छिड़की पर गये। फूलों की बगारी के बराबर केनेल बगान पर था। उनमें से एक को उन्होंने चुन लिया। फूलों की आँखें पर एक एक करके फीका पड़ा हुआ था। हवा में झूमते इन सन्धे पौधों को देखकर उन्होंने कल्पना की कि पुष्पित होने पर वे कितने सुंदर दीखेंगे...

कुरुतेन्सोव ने लेनिन के चेहरे की तरफ देखा, जो भावावेश के कारण या अचानक कमजोरी महसूस होने के कारण जर्द पड़ गया था, और सोचने लगा: “हमारे प्यारे इन्सान! हमारे लिए तुम लोगों में धार निर्वाणन में मिलना मिला है! तुम्हें सम्भवतः मे विप्लव में मारा गया होगा किम ताम दिया, न जहर वाली गोमिहो से घायल हुआ और काम की ज्यादाती और हम सब के कारण तु बीमार पड़ गया।”

“निर्मल सफेद फूल,” मानो अपने से ही बोलते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने कहा। “शुशिया! बहुत जानदार उपहार है यह।”

लोहार अंतःप्रेरणा से उनको पास चला गया और उन्हें हलके से अपने आलिंगन में ले लिया।

“मैं मजदूर-लोहार-हूँ, व्लादीमिर इल्यीच, हम हर चीज को बर्बाद कर देंगे। ऐसा तुमने सोचा है।”

व्लादीमिर इल्यीच ने अपनी आँखें अन्धकार के दर्द-मिद लपट की ओर से डाली हुई अणु इसी तरह खड़े रहे। पलायेया ने अपने कमरे में दीप में अपनी आँख में टपकते आँसू को पान्त लिया।

नीचे के कमरे में जो फूलों और गमले में लगे ताड़ के पौधों से सजा हुआ था, खाने की मेज लगा दी गई थी, सोमवार में पानी उबल रहा था।

मरीया इल्यीनिच्ना ने प्रतिनिधियों के नीचे आकर खाना खाना था। मगर हाँ भी गाना चाना नहीं था। अन्ध विचार और लेनिन के साथ ही थे।

साथों, साथियों, साथों, मरीया इल्यीनिच्ना ने कहा, किया। खुद उनका गला भी रुंध गया था। वे प्रतिनिधियों के साथ थे। खुद व्लादीमिर इल्यीच के हाथों की चर्चा थी।

मरीया इल्यीनिच्ना की प्लेट के बगल में अनाज ही गरी लगी हुई थी। सबसे ऊपर ‘प्राव्दा’ था। मोटे अक्षरों में एक संदेश आँखों को पकड़ रहे थे: “जर्मन पजीवार्द नरें धारा नरें।” “जर्मनी में भूख”, “बुल्गारिया में जेल बाँट”, “पोलिश में मजदूरों की हड़ताल”।

विप्लव पजीवार्द अभी जना दुर्ग नहीं था। विप्लव का अर्थ है कुरुतेन्सोव ने अन्धकार की दुनिया में लगे हुए हैं। मगर ध्वजान ही चान नहीं वह दिन भी आयेगा जब जर्मन माद बुल्गारियाई और पोलिश मजदूर—सब सत्ता प्राप्त कर लेंगे।

“लेनिन की इस बात का विश्वास है, मरीया इल्यीनिच्ना ने कहा।

“आपको काम करना होगा,” पलायेया आँखें खोल कर कहते हैं।

मरीया इल्यीनिच्ना ने विरोध करते हुए कहा। “जी, नहीं। ऐसी बरसात में मैं आँखों में न मरूँ, जीव दूँगी। आप सब यहाँ से सकते हैं। फिर आप मुझे अपने साथ लाये पौधों को भी रोप सकते हैं।

प्रतिनिधियों ने आँखों-आँखों की मार मारी। वे खुश थे, क्योंकि कोई भी लेनिन के पास न गयी पाया चाहता था।

“आप लोगों का किसी तरह की मदद की जा सकती है?”

मरीया : मजदूरों को कोई परमाणी तो नहीं ? " मरीया इत्योनिच्चा ने पूछा।

मुखोवो के मजदूरों को उस वक़्त कितनी ही चीखों की ज़रूरत थी! युद्ध-जनित विनाश की जकड़ अभी भी काफ़ी मजबूत थी। लेकिन उन्होंने इसके बारे में एक शब्द भी नहीं कहा।

"हमारा तो बस एक ही अनुरोध है और एक ही सपना है : व्लादीमिर इत्योच वैसे ही स्वस्थ हो जायें, जैसे वह थे।"

प्रतिनिधि सारी रात सोये नहीं। वह चुपके-चुपके बातचीत करते और घर की खामोशी को सुनते हुए बैठे रहे। जब सुबह मरीया इत्योनिच्चा आई, तो उन्होंने छूटने ही यह मानम किया कि लेनिन ने रात कैसे गुज़ारी।

"वह रात बहुत अच्छी तरह सोये," मरीया इत्योनिच्चा ने जवाब दिया। "वह सुबह बहुत ख़श उठे और उन्होंने आपके पत्र को फिर पढ़ा। वह उससे बहुत प्रभावित हुए हैं।"

दिन धूपदार और साफ़ था। सड़ों का पानी जमा हुआ था। रात में वर्षा गिरने लगी थी और अब पाँच घंटे लग रहे थे, मानो पृष्पित हो गए हों। रात में ठंडा पड़ने पर फ़सली मरीया हिमकणों को जाँचकर गिनती करने लगी थी और वे राखी जमीन पर पृष्ठों की पकड़ियाँ जैसे लग रहे थे।

हम वसंत में, जब वसुन्ती फिर जीवन को अगड़ाई लेती है और जंगल और मैदानों में कापल फूटती है तो जिस मकान में व्लादीमिर इत्योच ने अपना अन्तिम वर्ष व्यतीत किया था, वहाँ वह बेनी के पक्षों पर बहान आ जाते हैं। वे साफ़ गर्भद कमीज़ पहने राज पायजमों की तरह सीधे खड़े हुए अपनी शाखाओं को गोर्की प्रतिनिधि में दुनिया के हर हिस्से की तरफ़ फैलाते हैं।

स० अलेक्सेयेव

बुलफ़िंचें

गोर्की में पार्क में दहलते समय व्लादीमिर इत्योच और मरीया एक जगह पर ठहर जाया करते थे वहाँ पर भूत वृक्ष के पास फ़र का एक ऊँचा पेड़ था भूत वृक्ष के चरणों पर नमक छिड़का था।

व्लादीमिर इत्योच वहाँ जाकर खड़े हो जाते और फिर ऊँचा उठा लेते। देर-देर तक वह वही खड़े रहने और ऊँचा उठाने करते। भला वहाँ ऐसी क्या चीज़ थी?

बुलफ़िंचें।

जाड़े का मौसम था आमतौर पर सभी पक्षी वर्ष में उड़ गये थे। पेड़ों पर भी बर्फ़ थी। यदि गारे दक्षिण उड़ गये थे। पार्क में बस, अकेली बुलफ़िंचें ही बाकी रह गई थी। वहाँ व जाड़े से खुश थीं।

व्लादीमिर इत्योच को इन मवेशी और मुँदर चिड़ियों का देखना बहुत पसंद था। लो, यह वही एक गाने वाला पक्षी बुलफ़िंच और एक और गुलाबी छातीवाली चिड़िया भी पसंद था। वेठी। और अब तीसरी आ पहुँची- नगर छाती हमारी चिल है, शंडे की तरह। इसकी सुरत में ही पता चल जाता है कि यह बड़ा बड़ाका और शरारती चिड़िया है- उसके सिर पर सारा पर खड़े हुए थे। सारी बुलफ़िंचों में यह बुलफ़िंच पनी तिराकी की एक लेनिन वसे और चिड़ियों से ज्यादा पसंद करने लगे थे।

लेनिन भी वसंत में आमतौर पर आधी दो बजे को वहाँ जानती थी कि व्लादीमिर इत्योच उनका लिए गोर्की को लेकर आयेगे या फिर मन का बीज, जो उनका सबसे मनपसंद खाना है।

भी फटल : माँ वरफिच भूज १ पा. पा. पा. पा. जानी अर  
नित्त का इंतजार करने लगती।

अस कार पा. वरफिच वही नवन लीनो : सगर म यरा  
रतन ही आती ही म

लेनिन को नाल छातीवाली बुलफिच को अपने पर इतराने  
उठना पड़ा उठना लगता था। वह अपना गिर पीछे ही तरफ फेंकती  
हुई माली कहती थी : "क्यों, हूँ न मैं संगार में सबसे सुंदर पक्षी?"

"हां, सब है," लेनिन उत्तर देते।

बुलफिच डाल से डाल पर, भूज से फर पर और फर से  
झाड़ियों पर फुदकती रहती। वह लेनिन के गिर के बराबर से उड़ती  
निकल जाती, हवा में गोता खा बर्फ पर जा उतरती और फिर  
जागर किसी जंजी डाल पर बैठ जाती और वहां से लेनिन की  
तरफ निरखी नजर से देखती, मानो वह रही हो : "बोलो, वैसे  
हूँ मैं! हूँ न मैं सबसे निराली? सब?"

एक बार पार्क में टहलते समय व्लादीमिर इत्योच का ध्यान  
उस बाल से तरफ गया कि वह निराली बुलफिच नहीं नजर नहीं  
आ रही है। लेनिन दूसरे रास्ते पर टहलने के लिए निकले  
और फिर नीचे की आ गम, लेनिन वरफिच अब भी नहीं  
नजर आई।

लेनिन परेशान होने लगे :

"क्या हो गया उसे?"

उस प. वा कि बुलफिच फर से पर गडे गो। उसे यगोर्का  
ईकलव माम नजर न काम लिया था और धर ल जागर पिछे से  
पा. दिया था। वह म बुलफिच, लेनिन का माया उ नाम जाना नहा।

लेनिन वरफिच को भी नहीं था न पा मने, पर येगोर्का  
अवश उतर मामन प. छोकरा कहा, पार्क में फिर आया था  
आर उरन फिर प. देगाय थे।

व्लादीमिर इत्योच की येगोर्का पर निगाह पड़ी, जो अपने  
पिता का पोस्तीन का लंबा-चोड़ा टोप और दाढ़ न बड़े ब. नमद  
के झूले पहने हुए था।

"तने यरा एक जान छानिवाली वरफिच नहीं कही?"

"कही न," येगोर्का ने मर म निगरनता वा नकिन  
उमने सोचा कि अगर लेनिन पूछ बैठे : "क्या प. प. न?"

"जी नहीं, मैंने तो नहीं देखा उसे नमोर्का न गया।

"कहीं वह बर्फ में तो नहीं जम गई?" लेनिन प. प. न  
हुई।

"जी नहीं, वह तो गरमागरम धर म नजर में देरी न,"  
येगोर्का कहना चाह रहा था, लेनिन तभी उमन अपने ही रास  
लिया।

छोकरे की आंखें नीचे झुक गईं। उमने उर पि. म पि  
लेनिन बहुत बिकन हो गया।

"जम ही गई होगी," लेनिन ने अकसोम प. म. प.

वा हो सकता है कि उसे किसी का ग. गो।

"नहीं," येगोर्का ने अपना निर उठाया। मरी वा मरी  
नहीं है। वह जिंदा है। वह लौट आयेगी।"

"लौट आयेगी?"

"लौट आयेगी, लौट आयेगी।" येगोर्का बिकन वा.

अगले दिन व्लादीमिर इत्योच फिर ल. पर प. येगोर्का  
का कहना सही था। नाल छातीवाली बुलफिच प. ल. ल. ल.  
बैठी हुई थी। और पास ही येगोर्का नजर गया था।

व्लादीमिर इत्योच ने वरफिच की तरफ देखा फिर येगोर्का  
को तरफ और मुसकरा दिये।

"नमस्ते!" उन्होंने येगोर्का ने नहा नमस्ते। उमने  
बुलफिच से कहा। "कहां चली गई थी न?"

युलफिच ने अपनी चौच खोली और येगोर्का की तरफ तिरछी नजर डाली।

येगोर्का की फलजा मुह को आ गया। उसने युलफिच की तरफ देखा। कहीं लेनिन समझ गये, तो?

युलफिच एक बार चटकी: सनझी, येगोर्का इसना बुरा लड़का नहीं, तो भैया, उसका भेद खोलने का क्या फायदा?।

३० बोरोन्कोवा

लेनिन को बच्चे प्यारे थे

अलेक्जान्द्रा निकोलायेवना कोयोसोवा गोर्की के पास बस नामक गाँव में अध्यापिका थीं। यह १९१७ की बात है—वर्षा की चिड़चिड़ा समय था वह।

बसंत में एक बार नाइज्जदा कोन्स्तान्तीनोवना बुल्काया और लेनिन की बहुत, मरीया इत्येनित्ता उनके पास आइ।

“साथी, बात यह है, मरीया इत्येनित्ता ने कहना शुरू किया। लेकिन बड़ा बड़ा बता दे कि उन दिनों ‘साथी’ लोगों के लिए एक बिलकुल ही नया संबोधन था। उसका मतलब था कि जिस ‘साथी’ कहा जा रहा है, उस पर पूर्ण-पूर्ण विश्वास है। ना मरीया इत्येनित्ता ने कहा साथी, बात यह है कि हम अपने राज्य काम के बच्चों के लिए एक शिक्षणाला खोलना चाहते हैं। व्लादीमिर इत्येच कहते हैं कि बच्चों को अच्छी नज़र मिलनी चाहिए—वे बुरे नज़र आते हैं और बुरी तरह रहते हैं। क्या आप वहाँ शिक्षिका का काम करने के लिए चल सकती हैं?”

अलूगी कैसे नहीं, अलेक्जान्द्रा निकोलायेवना ने माचा, अगर व्लादीमिर इत्येच ने ही इस शिक्षणाला का खर्चन का ज़रफा किया है?”

जी हाँ अलूगी “उन्होंने जोर से कहा।

गोर्की में बड़े भवान के पास ही एक छोटा भवान था। उनमें मे गरमियों में शिक्षणाला खोल दी गई। लेकिन बच्चा की उस में इतना फर्क था दो साल से लेकर चौदह साल तक—कि शिक्षणाला को बाल-सदन बना दिया गया

बाल-सदन की उद्घाटन में मरीया इत्योनिन्ना भी आई। पूरा समानता था।

धोखा था। कभी सामान बढ़ाया गया। जैसे उन्होंने अपने आम धनाई-आपार टांगों पर लकड़ी के तख्ते ठोक दिये गये। पलंग भी इसी तरह बनाये गये। कुछ कुपा भाग्य ने भी की-जो मर्यादा की प्राप्ति में निगम बनाया था। उसी तरह लकड़ों की लमी में सार बनवना व निगम भी बना दिया मिल गया। तदन्ती तौर पर बगड़ों की सिनाई भी अपने-आप ही करनी पड़ी। इसमें कितना मजा आया, वह बतलाना मुश्किल है।

धीरे-धीरे बाल-सदन की जिंदगी का अपना छर्रा बन गया। बड़े बच्चे स्कूल जाते। शाम को वे अपनी पढ़ाई करते। कापियों की तब बहुत ही कमी थी—कागज का टुकड़ा-टुकड़ा कीमती था, न स्याही ही थी। बच्चे चाक से स्लेटों पर लिखा करते और कच्चे जंगली अखरोटों से स्याही बनाते थे।

लेनिन अक्सर बच्चों के पास आते रहते थे।

“बहो, पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है?” वह बच्चों के साथ घंट जाते और उनकी कापियों को देखते। वह हमेशा कहते, “पढ़ो, पढ़ो और पढ़ो! ज्ञान के बिना आदमी अंधा है।”

### कागज का मेंढक

गर्मियों में बड़े बच्चे लकड़ों को उड़े बना लेते और गोरोदकी नाम का खन खनने लगते। खन का मैदान भी वे अपने-आप ही बनाते। गोरोदकी व अपने गानगी समय में रही गेलत थे और पक्षा नदी आनवन्त फर की कतारों से घिरे रास्ते पर टहलने जाते समय

लेनिन अक्सर उधर से गुजरा करते। उनके बच्चे खाने को तो वह देखने के लिए खड़े हो जाते। अगर वह ऊपर से ही आ जाते तक हो जाते। वह हिस्सा लेने लगा, तो खेत में अभी गर्मी आ जाती कि क्या कहा जाये! उस दोम दुमरा हो खेत में आने लगा देती।

शिक्षिकाएँ छोटे बच्चों के लिए निगम बनायी थीं। प्रलेखान्द्रा निकोलायेवना अपना अधिष्ठापन समग्र सन्ने समझा व गाव बिताय करती थीं। वह उनके लिए चिपों की कीमत आकर गव बनाया करती थीं।

लेनिन उनके पास आते ही रहते थे। वह चिपों को भी तार करते थे, लेकिन सिर्फ कागज के। कागज की आवाज समझ न ऐसी कला से मोड़ते कि कोई बैसा नहीं कर सकता था।

एक बार उन्होंने कागज का मेंढक बनाया। उसका रंग निग या और चार पैर। मेंढक को दवा दो, तो वह उड़ने लगता। बच्चे ने उसे देखा और बहुत खुश हुए। वह उड़नेवाला बच्चे के और किलकारियाँ मारते। उनकी शिक्षिका उनको उड़ने वाला बच्चे बहुत खुश हुई और लेनिन को भी बहुत मजा आई।

### बर्फ की गोलीयाँ

उस समय गोर्की के मकान के गिर्द कोई बर्फ नहीं थी। चांगी तरफ पने जंगल थे। जिनमें बर्फ भरी थी। बच्चे ऊँचे पेड़ थे और उनके नीचे समझने से खारिया। जंगल में बच्चे जंगल में बेरियाँ और खुर्दियाँ बनने रात भरदियों में गुम जाते।

ऐसा ही एक आनन्दमय दिन ही बरफ पानी है।

जंगल में घूम रहे थे, एक-दूसरे को घकेल रहे थे, तैल नें वे, अनात्मक मामलों में पड़ कर पीछे से एक बर्फ की गोली तथा म डाली गई थी। घाव उभर बीच धनात में गिर पड़े। सभी मोचने लगे किमत का है इसे? घाव अब एक ४ बार एक गोलीया की प्रोफ़र शुरू हो गई। ५००० था: कि लेनिन अपना वाला ओ-यन्मोत्र और समूर की टोपी पहने एक पेड़ के पीछे छिपे छड़े है और सभी पर बर्फ की गोलियां बरसा रहे हैं। वच्चे भी खेल में शामिल हो गये और उन पर गोलियां फेंकने लगे। उनकी शिक्षिका ने उन्हें डाटा:

"यह क्या कर रहे हो, वच्चे? कोई ऐसा करता है? और वह भी लेनिन पर!"

लेकिन कौन सुनता है! बमबारी शुरू हो गई। लेनिन फेंक रहे हैं और वच्चे फेंक रहे हैं। लेनिन गोली फेंकते हैं, पेड़ की आड़ ले लेते हैं और छड़े होकर हमने लगते हैं। उन्हें कोई नहीं मार पाता।

देर तक गोलियां चलती रहीं। उन्हें भूकिल से दो-तीन गोलियां भी लग गयीं। और गोली लगने पर वह रुक पड़े और चिन्ताग्रस्त रहते:

"जायाग! मेरी निगाह अच्छी है—तू अच्छा निजानेवाज बनेगा। देश का अच्छा सिपाही बनेगा!"

### जंगल में भेंट

राज्य प्राम में जानबूझ कर निगा बर्फ नारा नहीं था। बाल मजल में बड़े रचना न इनमें बहायना देने का फेंकना किया। जंगल में जाकर उन्होंने लोहा लोहा पहनिया बटोनी और उनके दर लगा दिया। फलझड़ काफ़ी बीत चुका था और बारिश हो रही थी।

लेनिन कहीं से बार में बैठकर नाकी गोपम जा रहा था। जंगली लीकदार रास्ते पर बार बड़ी मज्जिन में जा रही थी। घाव फिर वह रुक ही गई—एक पत्रिका बार में कम गया था

लेनिन गाड़ी से उतरे। उन्हें बच्चे की आवाज सुनाई दी और वह उन्हीं की तरफ चल दिये। जब बच्चों ने देखा कि आनेवाले लेनिन है और उनकी कार फंस गई है, तो वे मदद देने का निग लपके। उन्होंने डालियों को तोड़ा, उन्हें पहियों के नीचे लगाया और गाड़ी लीक में से निकल आई।

लेनिन ने देखा कि वच्चे भीगे हुए हैं और उन्हें ८०० का र्हा है। वह मुसकराये और बोले:

"अच्छा, बोलो, सवारी कौन करना चाहता है?"

सवारी भली कौन नहीं करना चाहता था? सभी जत्ते थे। लेनिन ने चेहरे को गंभीर बना लिया और बच्चों को आग्रह किया

"चलो, पैदा गाड़ी में।"

वच्चे बार में लद गये। कार भर गई और लेनिन ने पैदल की जगह नहीं रही। वच्चे संकोच में पड़ गये और कार न आगे लग।

अनादीमिर इत्योच उनकी बात समझ गये।

"बैठे रहो, बैठे रहो!" उन्होंने कहा। मैं नहीं पहचान कि तुम बीमार पड़ जाओ। मैं सारे दिन दफ्तर में बैठा रहा हूँ मैं जरा पैदल चलकर टांगें सीधी करना चाहता हूँ।

गाड़ी चलने लगी।

"बाकी वच्चे बच्चों को भी आकर ले जाता है।" लेनिन ने इश्वर से चिल्लाकर कहा और खुद पैदल चल पड़े।

जो वच्चे वहां रह गये थे, वे दूर तक उनकी आवाज सुन रहे। जब उन्होंने पीछे की तरफ मुड़कर देखा तो वच्चे ने उनकी

तरफ अपने हाथ हिलाये। जब तक वह नज़र आते रहे, बाँचा न अपनी आँखें उन पर जमाये रखीं।

### एक मेहमान और

बाल-शदन में इसी तरह दिन गुजरते रहे—एक साल, दो साल, तीन साल... लेनिन अक्सर वहाँ आते रहते थे, बच्चों से बातें करते थे, उनके साथ अक्षरंज खेलते थे। पर इस बात का पूरा ध्यान रखते कि मातृ ही खाये।

लेनिन को बच्चों का गीत सुनना बहुत पसंद था। उनका एक प्रिय "काल-कोटरो की पीड़ा से उत्पीड़ित!" गीत था। उन्हें "ओल्गा धरे जंगल की सैर" भी बहुत पसंद था। खास तौर पर तब, जब छोटे बच्चे इस गीत को गाते थे। वह मुसकराते हुए बैठे उनके गीत सुना करते थे।

एक बच्चा शदन से चला जाता, तो दूसरा आ जाता। नये बच्चे के लिए कहा जाता "हमारे यहाँ एक मेहमान आने आया है।"

गोर्की के बाल-शदन की क़्याति दूर-दूर तक फैल गई थी। ब्रे-धरदार बच्चे सभी जगह से चिंच-चिंचकर वहाँ आते रहते थे।

लेनिन का परमा नदी के किनारे एक घर बन चुका था। प्रिय या समय में एक सुहावने दिन वह बड़ा बड़े परिवार पहुँच रहे कि जब एक एक बार नज़र आये फटे कपड़े पहने एक लड़का शदन आ बैठा हुआ।

यहाँ लेनिन कहां रहते हैं?" उसने पूछा।

"क्यों, तुझे क्या करना है?" लेनिन ने पूछा।

"मेरा उनसे मिलना जरूरी है," लड़के ने जवाब दिया,

मेरा दुनिया में कोई नहीं है—माँ मर गई और पिता मार गया। और लोगों ने मुझे कहा कि लेनिन के पास चला जा—उनके बाल-शदन में।"

लेनिन उठ खड़े हुए।

"ठीक है, चलो। मैं तुम्हें वहीं पहचान देना।" लेनिन लड़के को लेकर नीचे गार्डन में पड़ने

"लोजिये, मैं आपके यहाँ एक मेहमान आने आया।"

"मेहमान लाये है? वह तो बड़ी ख़िया बात है, वावरचिन ने कहा।

"कहिये क्या हाल है?" लेनिन ने पूछा। "मैं तो कभी भी कमी तो नहीं है, न?"

"सामान-बामान तो काफी है, पर सामान आने का इन्जाम अच्छा नहीं है। नदी पर पुल नहीं है और घोंगरी को गाने में से होकर लानी पड़ती है।"

"रोटी तो काम नहीं पड़ती?"

"नहीं, मैदा तो काफी है, पर रोटी का बदला बचकर आता है।"

"तो फिर आप जितनी जरूरत है, उससे कुछ खाश चीजें नहीं पका लेती?"

वावरचिन लेनिन से कुछ देर और बातें करती रही और शिक्षिका को बुलाने के लिए चली गई।

"अलेक्सान्द्रा निकोलायेव्ना, अभी-अभी तो मैं मन्दिर पर नये लड़के को लेकर आया है।"

अलेक्सान्द्रा निकोलायेव्ना उसके साथ साथ पावसात चली आई। बेशक, वह अक्षरंज से हाथ उठाकर बोली

"अरी मलीमानस, यह तो हमारे अन्धोमिर ज्योच है!"

वावरचिन आचोवा इतनी खिन्न हुई कि उसको नमस्ते में नहीं आया कि क्या करे। उसे बाल-शदन में काम करने हुए बहुत दिन नहीं हुए थे और उसने लेनिन को पहने कमी नहीं देना था।





बोगों में भरा हुआ था, क्योंकि रात भर लोग वहाँ आते रहे थे।  
लेकिन भीड़ के बावजूद वहाँ ऐसा मन्नाटा था, मानो कोई न हो।

सुबह के समय ताबूत का स्टेज पर लाया गया। सब आगोशों  
में उसके पीछे-पीछे चल गए थे। सभी आगोशी में भी नहीं रहे थे।

स्टेज पर चेहरे भीड़ थी। बच्चे हर पेड़ की डालों पर बैठे  
सवयात्रा को देख रहे थे। सड़क ठंड थी, मगर सभी नंगे सिर थे।

स्टेज पर ड्रेन इंतजार में खड़ी थी। ताबूत को उसमें रख  
दिया गया और ड्रेन खाना हो गई।

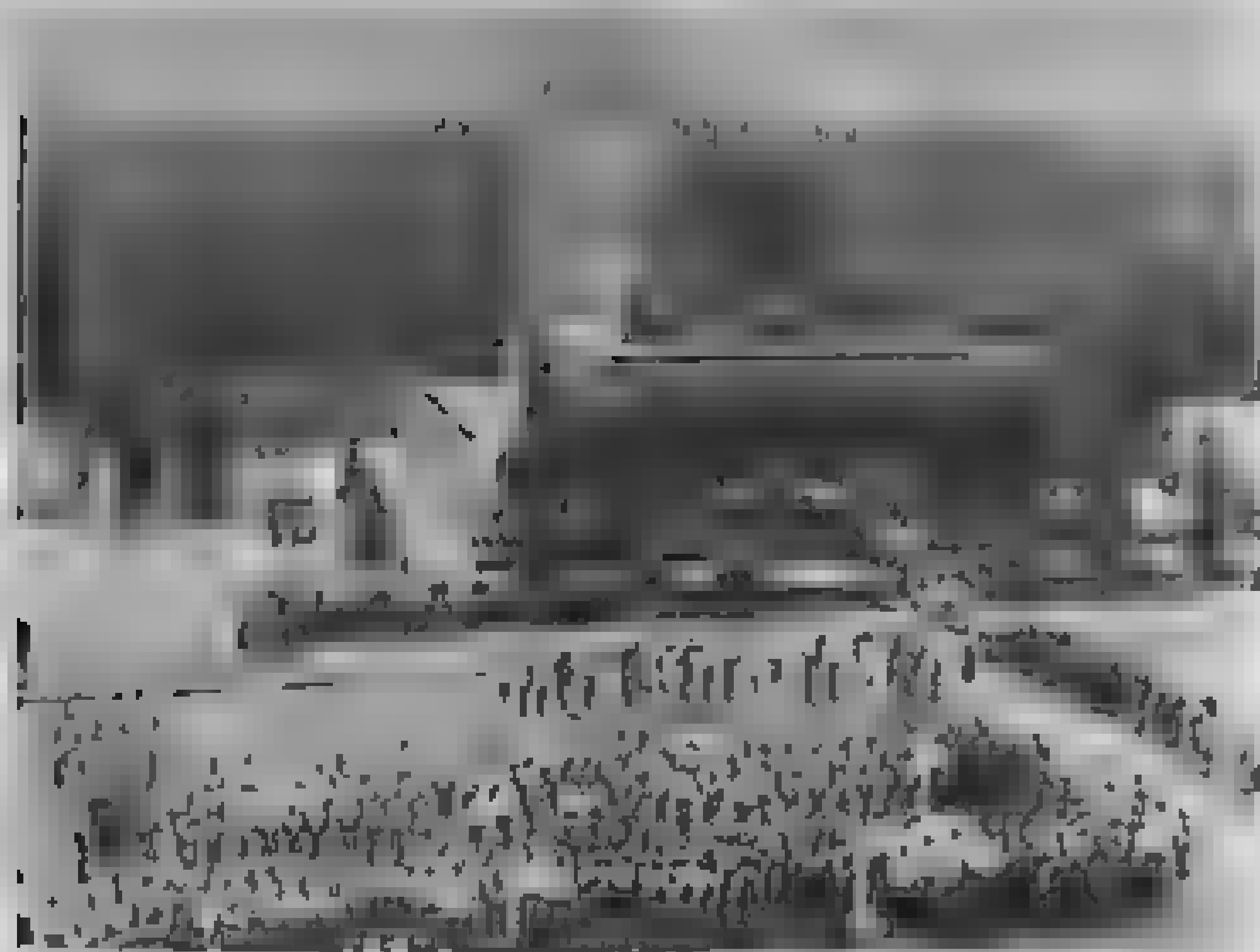
और उस दिन ऐसा लग रहा था, जैसे बाल-सदन में सूरज  
ने चमकना बंद कर दिया हो।

वैमिन मच्छानन, मास्को में।



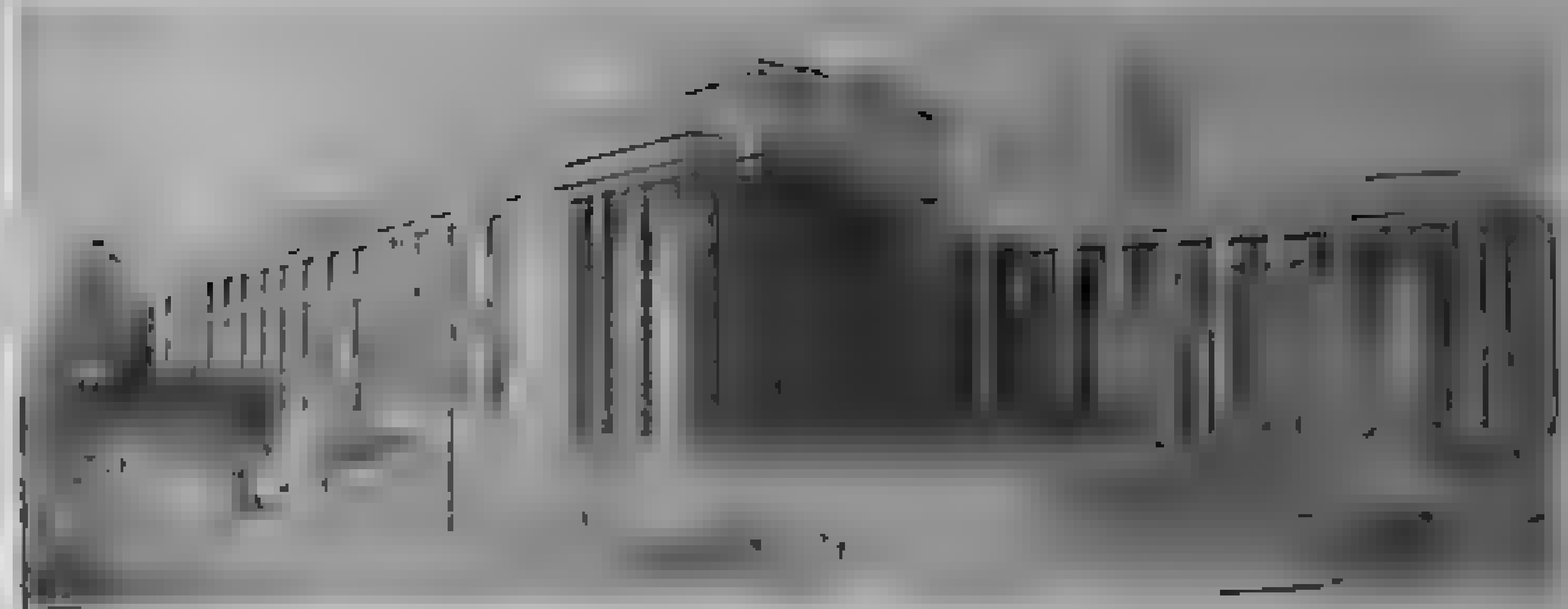
लेनिन की समाधि। काम पार्कनिंग  
समाधि पर लेनिन का पार्कनिंग  
करने की शक्ति है।

काम का प्रदर्शन लेनिनवाद की एक  
शक्ति है। काम - पार्कनिंग  
पार्कनिंग



लेनिन का नाम धारण करनेवाली एक  
शक्ति है - लेनिन पुस्तकालय, मॉस्को।

श्री लेनिन का ही नाम धारण  
करनेवाली कोला पार्कनिंग।



दार्जिलिंग विद्यापीठ  
 पुस्तकालय  
 : दार्जिलिंग

मॉन्ट्रो में लेनिन का कमरा।



मॉन्ट्रो में लेनिन का कमरा

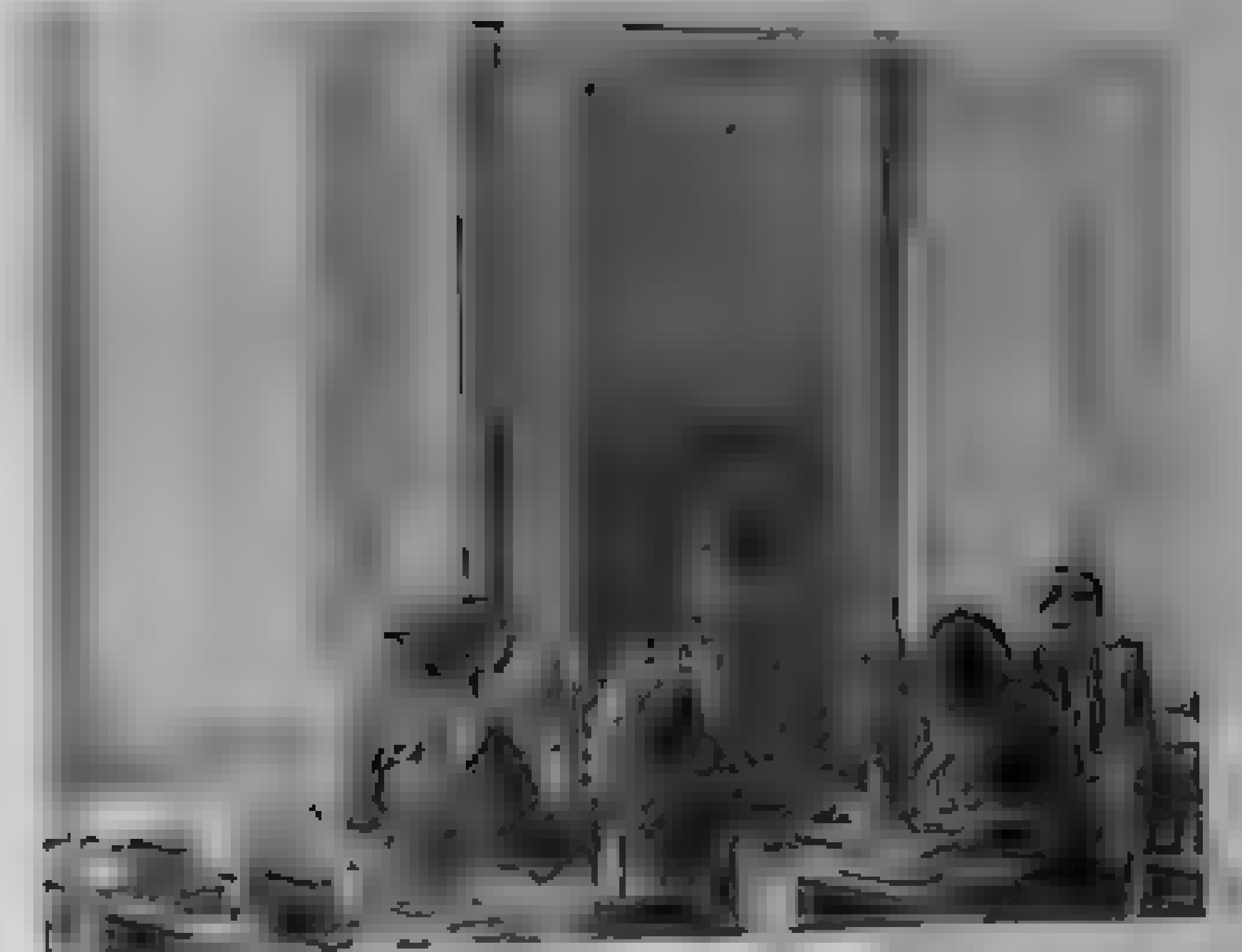


एक डेरा पर लगी हुई एक छवि  
 है—यह चित्र व भक्तों के मन में  
 अत्यन्त वादीमिद उभरता ही  
 जाता ही।



भौतिकी की कक्षा में छात्र, बहुत  
 रफे पहले यहाँ हुआदीमिद पड़ते थे।

अमोला, जोविदा, कीनिवा और गिरी  
 के अतिथि इस घर में, जिसमें जेवित  
 का स्तम्भ बँसा था



बेहिन मया।।। दायमर्दि पतिव  
करो तसहस्रनाम मह्य



लिपिग में 'ईश्वर' मंदिरावर के  
रमादर-कनक के नामने।





सोवियत संघ में सबसे बड़े स्मारकों के  
प्रकार पर मेहनतकश लोग साल  
चौक में लेनिन-समाधि पर आकर  
श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।



सोवियत संघ में सभी जगह हर छोटे-बड़े शहर में लेनिन-  
स्मारक हैं।

काकेशिया में एक चट्टान पर लेनिन का चित्र उत्कीर्ण है।  
चट्टान इतनी ऊंची है कि लगता है कि कलाकार पंख लगाकर बादलों  
पर चढ़ा होगा और वहां तक पहुंच पाया होगा।

शूशेन्स्कोये जानेवाला हर व्यक्ति उन देवदारुओं के स्मरण-  
चिह्नों के रूप में देवदारु-फल लेकर आता है, जिनके नीचे विराम  
करना लेनिन को प्रिय था। इन्हें वे अपने घरों के पास जो देते हैं  
और इनसे उगनेवाले देवदारु साइबेरिया के देवदारुओं के भाई-बंधु  
होते हैं। यह भी एक प्रिय व्यक्ति की एक सजीव वाद है।

जर्मन जनवादी जनतंत्र के एइसलेवेन शहर के लेनिन-स्मारक  
की कहानी बड़ी दिलचस्प है। सोवियत सैनिकों ने जब उसमें प्रवेश  
किया, तब युद्ध का अंत निकट आ रहा था। उन्हें इस शहर के  
मुख्य चौक में, जिसे नाज़ियों ने अभी हान ही में खाली किया था,  
लेनिन की कांस्थ प्रतिमा को देखकर बड़ा अचरज हुआ। इसके बाद  
नाज़ी मृत्यु जिविरों से मुक्त होने के बाद पूर्व की तरफ जाने पोल-  
बेल्टियाई, फ्रांसीसी तथा चेक लोग भी इस शहर में होकर गुजरे।  
उन्होंने भी लेनिन को देखा। जायद अभी जाकर वे इस बात को  
पूरी तरह अनुभव कर पाये होंगे कि फ़ासिस्ट की विकरान रात्रि  
का अंत हो चुका है और धरती पर जीवन फिर अगड़ाई लेने लगा है।  
लेनिन की इस प्रतिमा को नाज़ी अधिभूत सोवियत प्रदेश में



उठा लाये थे। उसे गलाया जानेवाला था। लेकिन जर्मन फ़ासिस्ट-विरोधी मजदूरों ने इस प्रतिमा को बचाने और छिपा देने का फ़ैसला किया। अपनी जान को ख़तरे में डालकर उन्होंने अपना लक्ष्य पूरा किया और सोवियत सेनाओं के आगमन तक इसे संभालकर रखा। नाज़ियों के शहर से भागते ही मजदूरों ने उसे मुख्य चौक में स्थापित कर दिया। आज तक यह वही खड़ी हुई है।

लेकिन लैनिन का सबसे अच्छा स्मारक है उनके सपनों की, जीवनपर्यंत वह जिन चीज़ों के लिए लड़े, उनकी, और मेहनतकश लोगों को उन्होंने जो आदेश दिये हैं, उनकी पूर्ति। जनता ने उनके ऐसे स्मारक को भी स्थापित कर दिया है।

सोवियतों के देश ने पचास वर्ष के भीतर इतनी उपलब्धि हासिल कर ली है, जितनी धनी पूंजीवादी देशों ने सौ, दो सौ वर्षों में की थी। आज ज़मीन पर ट्रैक्टर और हारवेस्टर कंवाइन खेती करते हैं, शक्तिशाली नदियों को बांधकर उन पर विराट पनबिजलीघर बना दिये गये हैं और देश में बिजली की बाढ़ आ गई है। साइबेरिया में अपने विश्वविद्यालयों और थियेटर्स से युक्त आधुनिक नगर उठ खड़े हुए हैं। सोवियत अंतरिक्ष-यान चंद्रमा और शुक्र पर उतर चुके हैं। एक सोवियत मानव ने ही सबसे पहले बाह्य अंतरिक्ष में प्रवेश किया था। ये सभी महाप्रयास एक शिक्षित जन ही कर सकते थे। आज आप सोवियत संघ में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं ढूँढ़ पायेंगे, जो पढ़ और लिख नहीं सकता है। हर सोवियत बालक को शिक्षा प्रदान की जाती है—विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा निःशुल्क है। लैनिन ने इन सभी का सपना देखा था। इसलिए यह सब भी उनका स्मारक है।

सोवियत संघ में सौ से अधिक जातियाँ रहती हैं। उनके अलग-अलग रीति-रिवाज़, अलग-अलग भाषाएँ हैं, मगर वे सभी एक परिवार की तरह एक सामान्य लक्ष्य की सिद्धि के लिए साथ-साथ

रहती हैं। सोवियत संघ की जातियों की यह बंधुत्वपूर्ण मंज़ी भी लैनिन का एक स्मारक है।

लैनिन के उपदेश हमसे तकाज़ा करते हैं कि हम अपनी स्वतंत्रता और बेहतर जीवन के लिए संघर्षरत अन्य जनों की सहायता करें। हमें इस पर गर्व है कि सोवियत डाक्टर अफ़्रीकी गांवों में रोगियों को रोगमुक्त कर रहे हैं, कि सोवियत टर्बाइन मिश्र की जनता के लिए बिजली पैदा कर रहे हैं, कि वियतनाम के लोग हमलावरों के हवाई जहाज़ों को सोवियत मिसाइलों से गिरा रहे हैं। अपनी स्वतंत्रता के लिए जूझती जनताओं को सोवियत संघ द्वारा दी जानेवाली यह सहायता भी लैनिन का एक स्मारक ही है।

बरसात में सितारे (सचित्र बाल कहानी संग्रह)

किसी विनोदपूर्ण किस्से या हास्यजनक घटना पर हंसना भला किसे पसंद नहीं। लेकिन आम तौर पर ऐसे किस्से शिक्षाप्रद भी होते हैं, क्योंकि दूसरों की गलतियों और चूकों से काफ़ी सबक सीखा जा सकता है। प्रस्तुत बाल कहानी संग्रह न० नोसोव की ऐसी ही एक कहानी—“मीशा ने दलिया बनाया”—से शुरू होती है। दूसरी कहानियों के लेखक हैं प्रसिद्ध सोवियत लेखक व० क्रापोविन, व० द्रागुन्स्की, अ० अबू-बकर, वा० वैशेनालीयेव, म० यह्यायेव, ह० गसीलोवा, आदि। इन्हें पढ़कर बाल पाठक जानेंगे कि सोवियत स्कूली बच्चे कैसे रहते, पढ़ते और मनोरंजन करते हैं, कैसे दुनिया के और बच्चों की तरह उनके साथ भी कम मजेदार घटनाएं नहीं घटतीं। मगर कुछ कहानियां गंभीर भी हैं। उनमें बताया गया है कि असली इन्सान बनने के लिये कैसे रहना और कैसे आचरण करना चाहिये।

पृष्ठ संख्या १२६, १७×२२ सें०, सजिल्द, सचित्र।

प्योत्र मन्तेयफ़ेल, जीव-जगत् की कहानियां

मनन, प्रेक्षण, प्रयोग—यह विख्यात सोवियत जीवविज्ञानी प्रोफ़ेसर प्योत्र मन्तेयफ़ेल (१८८३-१९६०) का आजीवन नियम रहा। उनकी यात्राओं, जीव-जगत् के प्रेक्षण, प्रयोगों और चिन्तन के परिणाम केवल वैज्ञानिक कृतियों ही नहीं, बल्कि कथा-कहानियों के रूप में भी प्रकाशित हुए हैं।

इस संग्रह में प्रकाशित कहानियों में विभिन्न जीव-जन्तुओं के व्यवहार और आदतों, कीमती खालवाले जानवरों के परिस्थिति-अनुकूलन के बारे में किये गये प्रयोगों और वैज्ञानिक-यात्री के दीर्घकालीन कार्यजीवन में हुई तरह-तरह की असंख्य अप्रत्याशित घटनाओं के बारे में बड़ी सरल, दिलचस्प और पैनी शैली में बताया गया है।

पृष्ठ संख्या १६८, १७×२२ सें०, सजिल्द, सचित्र।

इन पुस्तकों को आप अपने यहां की किसी भी सोवियत साहित्यविक्रेता दुकान से खरीद सकते हैं।

РЕДАКТОР Е. ГРИШИНА • ИЗДАТЕЛЬСКИЙ РЕДАКТОР  
Б. ПАКТЕР • ХУДОЖЕСТВЕННЫЙ РЕДАКТОР Ю. САМСО-  
НОВ • ТЕХНИЧЕСКИЙ РЕДАКТОР В. ШИЦ •

ПОДПИСАНО К ПЕЧАТИ 25.IV.1972 Г. ФОРМАТ  $70 \times 90^{1/16}$  • БУМ.  
Л.  $6^{5/8}$  • ПЕЧ. Л. 15,5 • УЧ.-ИЗД. Л. 11,91 • ИЗД. № 11061. •  
ЗАКАЗ № 840 • ЦЕНА 1 Р. 30 К. • ТИРАЖ 3000 •

ИЗДАТЕЛЬСТВО «ПРОГРЕСС» • КОМИТЕТА ПО ПЕЧАТИ ПРИ  
СОВЕТЕ МИНИСТРОВ СССР • МОСКВА Г-21, ЗУБОВСКИЙ БУЛЬ-  
ВАР, 21 •

ОРДЕНА ТРУДОВОГО КРАСНОГО ЗНАМЕНИ МОСКОВСКАЯ ТИ-  
ПОГРАФИЯ № 7 «ИСКРА РЕВОЛЮЦИИ» ГЛАВПОЛИГРАФИПРОМА  
КОМИТЕТА ПО ПЕЧАТИ ПРИ СОВЕТЕ МИНИСТРОВ СССР Г. МО-  
СКВА, ПЕР. АКСАКОВА, 13.